सत्य की ओर

ज्वाला प्रसाद कुरील

सत्य की ओर

(मर्मस्पर्शी संस्मरण)

लेखक :-
ज्वाला प्रसाद कुरील
सहायक
राधेश्याम

अन्नपूर्णा प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता एवं सप्लायर
१२७/११०० डब्लू. वन, साकेत नगर
कानपुर-२०८०१४

SATYA KEE ORA
By
Jwala Prasad Kuril
Price : Fifty Rupees only

मूल्य : पचास रुपये मात्र

पुस्तक : सत्य की ओर
लेखक : ज्वाला प्रसाद कुरील
प्रकाशक : अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेतनगर, कानपुर–208014
मुद्रक : अन्नपूर्णा प्रिंटिंग प्रेस, साकेतनगर, कानपुर
संस्करण : प्रथम
प्रकाशन वर्ष : 1994

PUBLISHED By : Mathura Prasad Tripathi

पिता श्री
स्व० श्री राजा दास जी
एवं
माता श्री
स्व० श्री रानीदेवी जी
की पुण्यस्मृति
में।

कुरील जी शतायु हों

उम्र में भी श्री ज्वाला प्रसाद कुरील से मैं साढ़े पाँच वर्ष बड़ा हूँ इसलिये जिस भारतीय संस्कृति की हिमायत कुरील जी ने बेवर में जाति तोड़ो सम्मेलन में की थी उसी के आधार पर मैं उनको आशीर्वाद देने का भी अधिकारी हूँ इसीलिये वे शतायु हों, लिख रहा हूँ पर ऐसा लिखने के समय एक मनोरंजक घटना याद आ गयी। पं० मदन मोहन मालवीय को महात्मा गाँधी अग्रज मानते थे। मालवीय जी ने गाँधी जी को तार भेजा 'शतायु हों।' उत्तर में गाँधी जी ने लिखा-"हिन्दुस्तान में तो 'सवा सौ बरस जियो' का आशीर्वाद दिया जाता है। आपने मेरा पचीस वर्ष क्यों काट दिया।" आशा है कुरील जी को यह आपत्ति न होगी। कुरील जी से मेरा घनिष्ठ परिचय नहीं हो सका। उस निश्छल व्यक्ति के बारे में अपने पुराने मित्र बेनीसिंह आदि से तो सुनता भी था और यदा कदा तिलकहाल या अन्य सभाओं में भी भेंट भी हो जाती थी पर न उस ऐसे कर्मठ से कुछ कहने-सुझाने की क्षमता की और न इच्छा। इसका एक बड़ा कारण है जो आज इन पंक्तियों के माध्यम से पहली बार उजागर कर रहा हूँ।

यों परिचय की दृष्टि से देश के तत्कालीन सभी नेताओं से सम्बन्ध था-सरदार पटेल तथा मौलाना आजाद को छोड़कर, पर मैं कांग्रेस का अदना सेवक होते हुए भी स्थानीय राजनीति में नहीं पड़ा। इसका कारण है। १९३७ के अंत में जब मैं कानपुर में वाराणसी की तरह स्थानीय राजनीति में कूद पड़ा। प्रदेश कांग्रेस से लेकर आल इण्डिया कांग्रेस का चुनाव भी जीत गया। तब एक दिन पं० श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल जी से राजनीति की

चर्चा होने लगी तो उन्होंने सलाह दी कि यदि तुमको चैन से, बिना शत्रु बनाये कानपुर में रहना है तथा पेट के लिये नौकरी भी करनी है तो तुम स्थानीय राजनीति में कदापि न पड़ो। मुझे यह बात जँच गयी और तब से आज तक मैं स्थानीय राजनीति में अपने को शून्य बना बैठा हूँ। विधायक तथा प्रदेश और आल इण्डिया काँग्रेस में कानपुर शहर से ही प्रवेश करता रहा। इसी-लिये ज्वाला प्रसाद कुरील या हमीद खाँ जैसे लोगों में से जी चाहते हुये भी अत्यधिक निकट न हो सका। बालकृष्ण शर्मा नवीन जी आदि से घनिष्टता तो अंत तक रही। कानपुर में जब काँग्रेस अधिवेशन हुआ तब मैं पालीवाल जी का प्रथम सहायक प्रचार सूचना अधिकारी उस कच्ची उम्र में था पर तब भी कुरील जी मेरे निकट नहीं थे। अब जब उनकी पुस्तक उनका कार्यकलाप पढ़ता हूँ तो लालच लगता है कि, ऐसे आदर्श व्यक्ति से घनिष्टता क्यों न हो सकी।

इस ग्रंथ को यदि कानपुर में राजनैतिक इतिहास से भी ऊपर उठकर एक संघर्षशील जीवन की कथा कही जाय तो उचित होगा। स्वाधीनता सेनानी की श्रेणी में आते हुये भी मैंने भुगतान नहीं लिया। ऐसे भी सेनानी लोगों को जानता हूँ कि जिन्होंने जेल का फाटक भी नहीं देखा पर सर्टिफिकेट तो है अधिकांश तो संसार से चले भी गये पर कुरील जैसे लोग असाधारण सेनानी धुन के कितने पक्के थे, इसका प्रमाण तो उनके लेखों में मिलता है–चाहे सुशील की मृत्यु हो, होली न मनाने का हो, कँधा का हरिजन सम्मेलन या ग्राम साल्हेपुर काण्ड हो, बड़े उपदेश पूर्ण लेख हैं और प्रकट है कि वे कर्मनिष्ठ के साथ धर्मनिष्ठ भी हैं। जाति-पाँति का बंधन तोड़कर उसे कानून में वर्जित कर देने की उनकी सलाह यदि पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने मान ली होती तो आज भारत का राजनैतिक इतिहास ही बदल जाता। मुझे बड़ा दुःख होता है कि आज दलित तथा हरिजन समाज के लोग डा० अम्बेडकर का नाम तो बहुत लेते हैं, पर उनके असली सेवक

तथा जगाने वाले महात्मा गांधी को भूल गये हैं, या उनके ज्वाला प्रसाद कुरील जैसे सच्चे साथी को जगह देना भी भूल गये हैं। राजनीति में रोटी सेंकने वाले नेताओं को ही अपना असली हितैषी मान बैठे हैं। कुरील जो ने इस ग्रंथ में कई ऐसे लोगों का परिचय दिया है जिन्हें मैं भी जरा निकट से जानता था। जैसे श्री जग-बहादुर सिंह, सी० एल० आर्य, बेनीसिंह, रामदास सोनकर इत्यादि। अधिकाँश से मेरा परिचय नहीं हो सका। यह अवश्य है कि हमारे उन पुराने धुरंधर देश सेवकों की याद में जिन्होंने कानपुर में भी बड़ी सेवा की है, उनकी स्मृति जागृत रखना चाहिये—

शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी तो अमर हैं ही, नवीन जी, छैलबिहारी कण्टक जी, हमीद खाँ, मुंशी जी, श्री रामरतन गुप्त, बालाजी हार्डिकर, नश्तर इत्यादि। साथ ही आज जो सौभाग्य से हमारे बीच में हैं जैसे श्री शिवनरायण टण्डन, जागेश्वर त्रिवेदी, श्री वासुदेव मिश्र इत्यादि। यदि कुरील जी एक दूसरे ग्रंथ में इन लोगों का भी परिचय करा दें तो कानपुर का इतिहास बन जाय। कितने लोगों को हरिहरनाथ, राजाराम शास्त्री या श्री जोग या थोड़े दिन ही कानपुर रहकर उसकी हरदिशा में सेवा करने वाले भी रामेश्वर ताँतिया की याद है। कुछ अच्छे नाम छूट गये हैं। निस्पृह भाव से कांग्रेस जनों की सेवा करने वाले डा० पी० डी० कटियार, पं० शिवनरायण, पं० रामेश्वर वैद्य जी या स्वदेशी प्रेस के संस्थापक श्री बाजपेयी की याद है। मैं जानता हूँ कि बहुत से अच्छे नाम छूट गये हैं। श्री ज्वाला प्रसाद कुरील से अनुरोध है कि वे अपनी लेखनी बन्द न करें। अभी वे ऐसा ही एक रोचक सूचनापूर्ण ग्रंथ और लिख डालें।

—परिपूर्णानन्द वर्मा

लक्ष्मीरतन बँगला
कालपी रोड, कानपुर

पुरोवाक्

'सत्य की ओर' शीर्षक पुस्तक को मैं आद्योपान्त पढ़ गया। इस कृति में प्रखर देशभक्त श्री ज्वाला प्रसाद कुरील द्वारा लिखित कुछ महत्त्वपूर्ण संस्मरण संकलित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बाल संत सुशील के मर्मस्पर्शी व्यक्तित्व ने ही श्री ज्वाला प्रसाद कुरील को तीव्र संवेदना एवं प्रेरणा प्रदान की। विशेषता यह है कि इन संस्मरणों में अपने राष्ट्रीय जीवन की तीव्र अनुभूतियों को लेखक ने सफल अभिव्यक्ति प्रदान की है। पराधीन भारत और स्वाधीन भारत में लेखक को अपने क्षेत्र में जब जैसे राजनैतिक अनुभव हुये, उन्हें अपनी संवेदना में लपेटकर किन्तु यथार्थ की पूरी रक्षा करते हुए लेखक ने प्रस्तुत किये हैं। इनमें राजनैतिक प्रतिकूलताओं की खटास भी है तथा राजनैतिक अनुकूलताओं की मिठास भी। अवरोधों का दाह भी है, प्रतिरोधों की शीतलता भी। अत्याचारों का अवसाद भी है और प्रतिकारों का प्रसाद भी। आशय यह है कि वृत्तों एवं घटनाओं के निरूपण में श्री कुरील ने अपने ईमान और निरपेक्षता को सर्वथा सुरक्षित रखा है। कहीं भी सत्य को अपनी रुचियों-अरुचियों से आहत नहीं होने दिया। साथ ही लेखक ने अपने राजनैतिक जीवन के स्वाभिमान, निर्भीकता, दर्द, पीड़ा, करुणा-आक्रोश, परितोष, अपेक्षा-उपेक्षा को यथावत् व्यक्त किया है। अपने राजनैतिक संरक्षकों के प्रति सम्मान एवं विनय तथा समवयस्कों के प्रति प्रीति एवं सद्भाव व्यंजित करके भाई ज्वाला प्रसाद जी ने इन संस्मरणों को जीवन्त बना दिया है। कानपुर नगर और कानपुर जिले के राजनैतिक व्यक्तियों तथा घटनाओं को लेखक ने अतीव प्रसादकरी औपन्यासिकता प्रदान की है।

कानपुर जनपद के संत्रस्त दलित समाज की पीड़ा, यातना, अनाचार और विवशता का ऐसा हृदय विदारक चित्रण किया गया है कि पढ़कर पाठक का हृदय विकल और विक्षुब्ध हो उठता है। अछूतों, दलितों और दीन-हीन जनता के अभावों और यातना भरे जीवन की हृदय विदारिणी कथा यों तो कानपुर जनपद तक ही सीमित है किन्तु तद्युगीन सम्पूर्ण भारत की भी यही कहानी थी, अतः श्री ज्वाला प्रसाद कुरील के यह संस्मरण यथार्थ की धरती में उगे हैं तथा समग्र देश की उस समय की परिस्थितियों और राष्ट्रीय जीवन का प्रतीक बन गये हैं। इस कृति से अन्य क्षेत्रों बल्कि सम्पूर्ण देश के राजनैतिक बन्धुओं को ऐसे संस्मरण लिखने की प्रेरणा मिलेगी। लेखक को हार्दिक बधाई और सम्मान।

--डॉ० व्रजलाल वर्मा

पूर्व सदस्य

उ० प्र० लोक सेवा आयोग

हमारे उपास्य देव

माननीय श्री ज्वाला प्रसाद कुरील

पूर्व सांसद एवं पूर्व विधायक

मुझे प्रसन्नता है कि आप अमर बाल संत सुशील की स्मृति में के तमाम संस्मरण जिन्हें दसियों वर्ष से अपने मन में धरोहर के रूप में संजोये हुये थे, उन्हें अब अपनी लेखनी से निकालकर समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का अनोखा कार्य कर रहे हैं।

राधेश्याम

यह और भी प्रसन्नता का विषय है कि आप अपने इष्ट मित्र, सहयोगियों के संस्मरणों को भी इस पुस्तक में समाहित कर रहे हैं।

वैसे जब से सृष्टि चली और मानव को अपनी स्मृतियों को लेखनी से निकाल कर उसे पुस्तकों के रूप में सँजोकर रखने

का ज्ञान प्राप्त हुआ, इतिहास इस बात का साक्षी है, कि पुत्रों ने ही अपने पितृजनों के इतिहास को लेखनी द्वारा लिखकर पुस्तकों में सँजोया है। आप सरीखे ही कुछ अपवाद हैं, कि पुत्रों के इतिहास को अमर रखने के लिये कुछ छोड़ रहे हो, जिससे लोग यह सबक भी लें कि पुत्र ही नहीं पिता भी अपने सामने स्वर्गीय हुए अपने पुत्रों के संस्मरणों की धरोहर को समाज में प्रस्तुत करने का अनोखा कार्य कर सकते हैं।

आप धन्य हैं, आपकी वह स्मृतियाँ और विचार जिन्हें आपने इतने दशकों तक सँजोये रखा।

मेरी राजनैतिक प्रेरणा के स्रोत

आप को इस आयु में भी स्वस्थ एवं प्रसन्न चित्त पाकर हम आनन्दित हैं कि हमारे इस 'ज्वाला' में आज भी वह ज्वाला धधक उठती है, जिससे अन्याय-अत्याचार भस्म होते रहे हैं।

मैं आपको शत्-शत् नमन करता हूँ।

—राधेश्याम
पूर्व विधायक

मीठे खट्टे कसैले अनुभव

मुंशी मथुरा प्रसाद कुशवाहा गोपालपुर नरवल निवासी कक्षा ४ में शिक्षा दे रहे थे पिताजी ने कहा मुंशीजी लड़के को उर्दू भी पढ़ा देव। मुंशीजी सुयोग्य परिश्रमी शिक्षक थे। मैं कक्षा ४ की परीक्षा में सर्वप्रथम आया यदि उर्दू का इम्तहान होता तो सवाद उर्दू पढ डाली थी, पास हो जाता। ऐसी मिठास पढ़ने में आती तो मिडिल भी प्रथम श्रेणी में आता।

व्यवधान

पं० विशंभरनाथ कक्षा ५ के अ सेक्शन में पढ़ा रहे थे किसी भाव में आकर मुझे 'चमार' शब्द कहकर सम्बोधित कर दिया। पण्डितजी से दिल हट गया मैंने पण्डितजी को रूढ़िवादी परम्परा का पोषक माना और फिर पुन: ५, ६, ७ कक्षा पढ़ाते हुये भी पण्डितजी से सम्पर्क नहीं बढ़ा। कुंजियों के सहारे परीक्षा दी।

रात को नरवल बस्ती से मिडिल स्कूल पढ़ने जाता था एक दिन एक ब्राह्मण छात्र ने अप्रिय व्यवहार कर पं० शंकरलाल से शिकायत कर दी। पण्डितजी ने बेंतों से कड़ी सजा दी। यहाँ तक कि वह हाँफ उठे परन्तु मेरे आँसू नहीं ढलके। श्री माथुर साहब इंग्लिश टीचर के मकान में श्री राजकिशोर के साथ रहते थे उन्हें इस घटना पर खेद हुआ और सभी कक्षाओं की पढ़ाई रोक दी। प्रधान पं० चंद्रिका प्रसाद के पास सभी शिक्षक एकत्र हो गये और पण्डितजी को मुझे गलत सजा देने का मामला उठा पण्डित शंकरलाल को क्षमा याचना करनी पड़ी तब ही स्कूल की कक्षाओं की पढ़ाई प्रारम्भ हो सकी।

पी० टी० सी० ट्रेनिंग में दाखिला कुछ देर बाद हुआ पुस्तकों का ढेर देखकर मन उचट गया। पं० रत्नेश्वर तिवारी ने समझाकर रोक लिया और अध्यापक बन गया।

चक्षुहीन श्री राजनारायण ब्राह्मण युवा लड़की को लकुटिया पकड़ाये श्री इन्द्रनारायण अवस्थी बी० ए० सी० टी० के यहाँ पुत्री के विवाह में खर्च की याचना करने आये। सी० टी० साहब की अपील पर क्षात्राध्यापकों ने २० से ५० रुपये तक की सहायता की। मैं रात में छुट्टी लेकर नौगवाँ गौतम गया और बिरादरी की पंचायत कोष के इकट्ठे रुपयों से जो मिठाई लेने जा रहे थे वह रुपया विवाह के लिये मुझे दे दिया गया जो मैंने मानीटर श्री लक्ष्मी प्रसाद के द्वारा सी० टी० साहब के यहाँ पहुँचा दिये। सी० टी० साहब ने कहा ज्वाला प्रसाद सामर्थ्यहीन है, रुपये कहाँ से लाया। मैंने आकर बता दिया कि बिरादरी पंचायत के रुपये जिनसे मिठाई मँगवाई जा रही थी, लड़की के विवाह के लिये मिल गये, वही यह रुपये हैं।

सी० टी० साहब ने मानीटर से कहा, ज्वाला प्रसाद अध्यापक न रह सकेगा, यह समाज सेवा में लग जायेगा। आशीर्वाद फलित हुआ।

गोपाल गोलीकांड की पैरवी पर श्री बेनीसिंह जी ने श्री बाबूलाल कुरील द्वारा बुलाकर कहा हम भी गोपाल गोलीकांड में तुम्हारे साथ हैं समाज सेवा के लिये अध्यापकी छोड़कर काँग्रेस में आ जाओ। मैंने कहा परिवार दुःखी है पालन कैसे होगा? सब भगवान देगा। क्या जादू था उनके कहने में। हरिजन स्कूल ग्वालटोली से विदा होकर काँग्रेस में आ गया और निम्न पदों पर जनसेवा की। पदों का विवरण –

१. सन् ४६ में संयोजक हरिजन उपसमिति
२. प्रधानमंत्री जिला दलित वर्ग संघ सन् ४६ ई.
३. सभापति " " ४७ ई.
४. संयोजक हथकरघा एसोसिएशन सन् ४७ ई.
५. संयोजक बेगार विरोधी दिवस
६. संयोजक होली नहीं मनाएँगे आंदोलन

७. मंत्री जिला कांग्रेस कमेटी ५३ में
८. विधायक ५७ ई. से ३ बार लगातार
९. संगठक जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर
१०. सभापति जिला कांग्रेस कमेटी सन् ५९ में
११. प्रधान पर्यवेक्षक बुन्देल खण्ड विधान सभा सन् ६६ के लिये सदस्यों का चयन
१२: संयोजक भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ कानपुर
१३. सांसद, १९७७-१९८० तक।

सुशील कुमार

आत्मज श्री रंगीलाल

बाल संत सुशील का अंतिम प्राणायाम रंगीलाल की चौपाल में उन्हीं की गोद में हुआ था। कुछ समय बाद रंगीलाल की पत्नी

सुशील कुमार

ने स्वप्न देखा कि बालसंत सुशील कह रहा है कि भाभी मैं आ रहा हूं। उसके बाद यह लड़का पैदा हुआ तो इसका नाम सुशील कुमार ही रख दिया गया।

विषयानुक्रमणिका

श्री ज्वाला प्रसाद कुरील का संक्षिप्त परिचय

श्री कुरील जी का जन्म अब से ८१ वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९१२ में कानपुर देहात जनपद के ग्राम ढुकुआपुर में एक निर्धन अछूत परिवार में हुआ था। ढुकुआपुर ग्राम कुड़नी का मजरा है।

जिस समय श्री कुरील जी इस वसुन्धरा पर आये उस समय देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा था। देश में अंग्रेजों का साम्राज्य था, गरीब पर जमीनदार सर्मायेदार का। अछूत कहे जाने वाले लोग सवर्ण और बैकवर्ड की दोहरी दासता में जकड़े थे। सवर्ण अछूतों के साथ अन्याय, अत्याचार करने एव वेट विगार लेने का अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते थे, इसलिये आपके मन में सामंतवाद के विरोध में बचपन से ही द्वन्द्व हुआ। विचारों के संघर्ष में डूबते उछलते आप ने उर्दू मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की, जिसे अपनी जीविकोपार्जन हेतु पर्याप्त समझ कर आप अध्यापन कार्य में लग गये।

जिस समय आप एक शिक्षक के रूप में समाज व राष्ट्र सेवा में तल्लीन थे आप जननायक, पं· बेनीसिंह जी के सान्निध्य में आये। उन्हें आप जैसे कर्मठ, साहसी व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो इस देश के निर्धन, अछूत व निर्बल वर्ग के लोगों की सेवा कर सके। आप भी जवानी के जोश में कुछ ऐसा कर गुजरना चाहते थे, जो इतिहास बने, दोनों की आवश्कता की पूर्ति हुई, आप ने अपनी रोजी ठुकराई, जन-सेवा को अपनाया और संघर्ष में कूद पड़े।

जिस समय श्री कुरील जी जन सेवा में उतरे, देश गाँधी जी के "करो या मरो" के नारों से गूँज रहा था, श्री कुरील जी ने भी उस नारे को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी सेवायें अर्पित कीं। यहीं से श्री कुरील जी के व्यक्तित्व का निखार प्रारम्भ हुआ और अपनी स्वयं की राजनैतिक कमाई के बल पर ही दलित वर्ग संघ के महामंत्री, हरिजन समिति के संयोजक, जिला काँग्रेस कमेटी के महामंत्री और अध्यक्ष पद पर आसीन हो निष्ठा और लगन के साथ जन सेवा की।

अपनी इस कठोर साधना और राजनैतिक तपस्या के बल पर ही श्री कुरील जी १५ साल तक विधान सभा और ढाई साल तक लोक सभा के सदस्य रहे। सन् १९५७ में श्री कुरील प्रथम बार विधान सभा सदस्य चुने गये। इसके बाद आप ने अपना सारा जीवन जन सेवा में समर्पित कर दिया और आप जिला काँग्रेस कमेटी कार्यालय में सिटी काँग्रेस कार्यालय के श्री हमीद खाँ के साथ तिलक हाल में ही जीवन यापन करने लगे।

श्री कुरील जी जन सेवा में तल्लीन रहने के साथ ही जन समस्याओं के निवारण में अपना जुझारू तेवर भी रखते रहे हैं। आप ने १९४८ में ग्राम शिवपुरी रहनस में हुए अछूतों के ऊपर अत्याचारों के विरोध में एक ललकार सुनाई, और गाँधी जी के पद चिन्हों पर चलकर एलान किया कि हम इस अत्याचार के विरोध में होली नहीं मनायेंगे। आपकी इस हुंकार पर गाँव के अछूतों ने होली का बहिष्कार किया, जिस पर प्रशासन को झुकना पड़ा और समस्या का निवारण कानूनी तौर पर किया गया। यही नहीं जब-जब, जहाँ-जहाँ भी मानवता पर दानवता का आक्रमण हुआ विरोध में आपके विचारों की तलवार तत्काल लपकी, चमकी और उसके चुटीले वारों से दानवता को मुँह की खानी पड़ी। एक प्रमुख संस्मरण दिसम्बर १९७९ का घाटमपुर लोकसभा

के अंतर्गत आने वाले ग्राम साल्हे रामपुर जनपद फतेहपुर का का है। ग्राम चाँदपुर उस समय भी सामंतवादिता और अछूतों पर अन्याय अत्याचार करने में कुख्यात था, पड़ोस के ग्रामों में अछूत और पिछड़े वर्ग के लोग बसते थे। जिन पर चाँदपुर के लोगों का सामंती शिकंजा कसा रहता था। यहाँ के ठाकुरों व ब्राह्मणों का आतंक गाँव तक ही सीमित नहीं था। विद्यालयों में विद्यार्थियों में भी ऊँच-नीच की भावना थी।

अमौली इण्टर कालेज में शिक्षा पा रहे छात्रों में, सवर्ण छात्रों का इतना आतंक था कि आगे की सीट पर कोई अछूत छात्र नहीं बैठ सकता था। भले ही सवर्ण छात्र देर से आये, अथवा न आये तो भी उन अग्रिम पंक्ति की सीटों को खाली रखना पड़ता था।

एक दिन सीट पर बैठने को लेकर एक साल्हेपुर के छात्र से विवाद हुआ जो विद्यालय की चहार दीवारी से बाहर निकल कर गाँव पहुँच गया।

२९ दिसम्बर १९७९ का मनहूस दिन, साल्हेपुर के लोगों पर कहर वरपा। ग्राम चाँदपुर के सामंतियों का पाँच-छः सौ लोगों का दिन के १० बजे हमला हुआ, गाँव के किसान मजदूर खेतों पर काम पर गये थे। सामंतियों के ताण्डव से गाँव में त्राहि-त्राहि मच गई।

आप इसकी सूचना पाते ही गाँव साल्हेपुर गये और घटना का निरीक्षण कर दुखियों की वह दर्द भरी आवाज जिसे सामंती दबा देना चाहते थे, सुनी। आप ने उसे बुलन्दी से उठाया, बिना किसी दबाव व भय के मामला शासन तक पहुँचाया और आतताइयों को दण्ड एवं पीड़ितों को राहत दिलाई।

बुनकरों की समस्याओं के लिये आप ने करघा एसोसियेसन एवं भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की समस्याओं के निराकरण के लिए भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ की स्थापना कर इसके माध्यम से अपने साथी कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर लोगों की समस्याओं

का निराकरण कराया।

यही नहीं सामाजिक, रचनात्मक, चेतनात्मक, कार्यों में भी आपकी लगन कम नहीं रही जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण श्री बेनीसिंह बजरंग इनामी दंगल कुड़नी है, जिसका कुशल संचालन आपके हाथों से हो रहा है वैसे यह दंगल बहुत पुराना है सन् ५७ से पहले जिसका संचालन श्री वीरेन्द्र सिंह अवस्थी कर रहे थे। किन्तु अभी ३६ साल से इसका प्रबन्ध आपके हाथ में है। दंगल के समय आप में इस बुजुर्गी में पहलवानी का जोश झलकने लगता है।

कुश्ती कला के प्रदर्शनों में आपकी अभिरुचि इस बात की परिचायक है कि स्वस्थ मन के लिये स्वस्थ तन का होना आवश्यक है। इस प्रतियोगिता से नवयुवकों में सच्चरित्र एवं बलवान बनने की प्रतिस्पर्धा जागृत होती है, जिसकी समाज व राष्ट्रहित में महती आवश्यकता है।

इस समय आप ने जो बाल सुशील पुस्तकालय की स्थापना ग्राम कुड़नी में की है। वह इस क्षेत्र के लोगों को ज्ञान अर्जन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। आप अपने राजनैतिक गुरु श्री बेनी सिंह जी के नाम ग्राम कुड़नी में एक हायर सेकेंड्री विद्यालय की स्थापना श्री ओमप्रकाश आर्य, डा. प्रभा पांडेय व सहयोगियों के साथ कर रहे हैं। आपके जीवन का यह कार्य सदैव आप को अजर-अमर रक्खेगा। जो इस क्षेत्र के छात्रों के लिये भविष्य में वरदान स्वरूप साबित होगा, इसके माध्यम से इस क्षेत्र के निर्धन व निर्बल वर्ग के छात्रों को अच्छी व सस्ती शिक्षा प्राप्त होगी। जनता ने यदि आपको जन सेवा का अवसर दिया तो आपने दिल खोलकर जन सेवा भी की है। सादा जीवन उच्च विचार ही आपका आभूषण है।

लेखक

राधेश्याम

पूर्व विधायक

लेखक की भावना

प्रिय पाठक गण मैं इस पुस्तक को किसी उपन्यास, नाटक अथवा कहानी के रूप में नहीं लिख रहा हूँ, न ही मैं इसे लिख कर यह आशा करता हूँ कि इससे मुझे कोई प्रशस्ति मिले। अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में घटित घटनाओं को मैंने इसमें क्रमबद्ध करने का असफल प्रयास किया है। इसमें मैंने अपने जीवन पथ प्रदर्शकों, साथियों, सहयोगियों का भी स्मरण किया है, क्योंकि राजनैतिक व्यक्ति जिन महानुभूतियों की प्रेरणा और आशीष से उत्कर्ष पर पहुँचता है, उसी को अपना देवता, स्वामी परमात्मा सब कुछ समझता है। महात्त्वाकांक्षा व्यक्ति की कमी होती है, किन्तु मैंने इस पुस्तक को किसी महात्त्वाकांक्षा वश नहीं लिखा है, हाँ इतना अवश्य है कि मैं इस देश के उन तमाम शोषित पीड़ित समाज के नवयुवकों से यह अपेक्षा अवश्य करता हूँ कि वह यदि समय मिले तो इससे कुछ अपने मतलब को ठीक उसी प्रकार से खोज लें जैसे मुर्गा तमाम कूड़ा करकट से अपना भोज्य पदार्थ खोज लेता है। अथवा हीरे का पारखी कीचड़ में सने हीरे की परख कर उसे उठा लेता है।

इस पुस्तक के लिखने में मैंने जहाँ तक हो सका है, निष्पक्ष रहकर लिखने का प्रयास किया है। सामाजिक बुराइयों को यदि मैंने उजागर किया है, तो उनको समाज से समूल नष्ट करने के लिए संघर्ष भी किया है।

तमाम सवधानी से लिखने के बाद भी इसमें अनेक भूलें रही होंगी। जिनका रहना मानव बुद्धि से स्वाभाविक भी है।

बड़े-बड़े लेखक अपनी लेखनी से निकाले गये ग्रंथों पर भी अभिमान नहीं करते फिर मैं एक अदना व्यक्ति हूँ। किसी प्रकार का अभिमान मैं कैसे कर सकता हूँ, बुढ़ापे में बुद्धि, विवेक की कमी होने से भूलें हो सकती हैं, किन्तु पाठकों से अनुरोध है कि वह क्षमा करेंगे। ऐसी आशा रख मैं पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ। यदि मेरी इस पुस्तक के अध्ययन के द्वारा भावी पीढ़ी को किंचित मात्र भी प्रकाश मिलता है, तो मैं अपना इस बुढ़ापे का जीवन धन्य समझूँगा।

ज्वाला प्रसाद कुरील

मेरे जीवन रक्षक
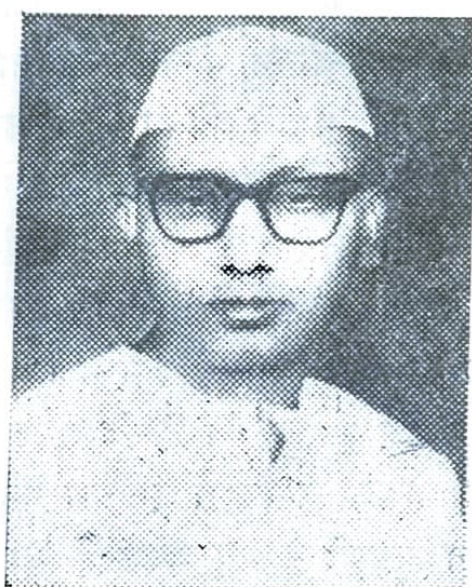
डा. डी. एस. गलहौत
कन्सल्टिंग फिजीशियन न्यूरोलाजिस्ट, सदस्य इण्डियन एकेडेमी आफ न्यूरोलाजी, सदस्य अमेरिकन एकेडेमी आफ न्यूरोलाजी

डा० डी० एस० गहलौत मेरे लिए वन्दनीय व्यक्ति हैं। जिस प्रकार साहित्यकार, चाहे वह कवि हो या लेखक अपने अभीष्ट को लिखने के पूर्व माँ सरस्वती की वन्दना करके अपने इष्ट की वन्दना करता है, वैसे ही इस पुस्तक को लिखने के पूर्व मैं डा० गलहौत की वन्दना इसलिए करता हूँ कि इन्होंने अपने चिकित्सकीय ज्ञान से अब तक मेरे जीवन की रक्षा करते हुए मेरे मस्तिष्क को ठीक रखा है, जिसमें सरस्वती वास करती है, इसलिये मैं सरस्वती वन्दना से पूर्व डा० गहलौत की वन्दना कबीर साहब के इस दोहे के अनुरूप करता हूँ कि,

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो लखाय।

जिस प्रकार गुरु के द्वारा ही गोविन्द के मिलने से कबीर साहब गुरु को बड़ा मानते हैं, ठीक वैसे ही मैं डा० गहलौत की माँ सरस्वती से पूर्व वन्दना करता हूँ। और इनका आभार व्यक्त करता हूँ कि इन्होंने मुझे अपनी संजीवनी से अब तक जीवित रखते हुए इस लायक रक्खा कि मैं अब तक जन सेवक के रूप में जीवित हूँ, मेरी इस प्रसन्नचित्त दिनचर्या का राज ही डा० गहलौत हैं।

मा० पं० बेनीसिंह अवस्थी जी

प्रतिभा के धनी मेरे राजनैतिक गुरु बेनी भैया सदा अमर रहेंगे, वह स्वर्ग से मुझे जीवित रहकर जन सेवा की प्रेरणा आज भी 'देते हैं, मैं कभी-कभी रात में सोते समय अपने भैया को पाकर अत्यन्त प्रफुल्लित हो तमाम सारी, कल्पनायें, योजनायें बनाते जब जाग जाता हूँ तो प्रफुल्लित मन, भारी हो जाता है, और आँखें गीली हो जाती हैं, किन्तु एक दम मन में उत्साह और जवानी का जोश आ जाता है, मेरा मन कहने लगता है कि हाँ भैया तो मुझे आगाह करने आते हैं, कि "ज्वाला" अभी समाज में होने वाले अत्याचारों अनाचारों को जलाने के लिए तुम्हारे विचारों की 'ज्वाला" में तेजी रहने की आवश्यकता है।

बेनी भैया (मा० स्व० बेनीसिंह जी) से मेरा परिचय उस समय हुआ जब मैं हिन्दी उर्दू मिडिल पास कर प्राइमरी पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगा था उन्हें मुझ जैसे एक जागरूक जनसेवक की आवश्यकता थी। मैं जवानी के जोश में समाज व राष्ट्र हित में कुछ कर गुजरना चाहता था, इसलिए कोई भैया जैसा मार्ग दर्शक, संरक्षक मैं भी चाहता था, बस दोनों की आवश्यकता पूर्ण हुई और मैं अपनी रोजी ठुकरा कर जन सेवा में कूद पड़ा। तब से मैं उन्हीं के मार्ग दर्शन पर जन सेवा करता चला आ रहा हूँ यद्यपि उनके आशीर्वाद पर ही मुझे विधान सभा और लोक सभा सदस्य के रूप में जन सेवा का अवसर मिला। किन्तु मैं इन पदों को गौड़ मानता रहा, जन सेवा मुख्य। इसीलिए तो मैंने आपके नाम को अजर अमर करने के लिए, बेनीसिंह इनामी दंगल कुड़नी का शुभारम्भ किया तथा ग्राम कुड़नी में आपके नाम का विद्यालय भी संचालित करवाया है।

भैया, मैं आपके पास आने के लिए आतुर हूँ किन्तु अभी एक संकल्प बाकी है। मैं आपके नाम को अजर अमर करने के लिए एक विद्यालय बेनीसिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का शुभारम्भ ग्राम कुड़नी में कर चुका हूँ अब मैं आप से यह आशा, आकांक्षा, अपेक्षा करता हूँ कि आप स्वर्ग से मेरा कुशल मार्ग दर्शन कर मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मैं अपने इस संकल्प को शीघ्र सम्पन्न कर आपके सानिध्य में आ सकूँ।

सत्याग्रह की ओर झुकाव

सन् ४१ ई. में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन अपने अंतिम दौर पर था घर व पिता की जर्जर स्थिति को भूल कर मन सत्याग्रह करने की ओर मुड़ा परन्तु श्री विशेश्वरदयाल अवस्थी अध्यक्ष मंडल कांग्रेस कमेटी रार ने मेरी क्षीण पारिवारिक स्थिति को देख कर सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति न दी। सत्याग्रह गाइड में आदेशित किया गया था कि जो हरिजन सत्याग्रह करने योग्य न हों वह सत्याग्राहियों का स्वागत करें।

मड़ेपुर के खटिक, धोबी, कोरी-चमार व कुम्हार जाति के परिवार एक सूत्र में बँध चुके थे। जाति भेदभाव मन से निकाल कर मात्र हरिजन बन गये थे। गाँव में सवर्णों का बाहुल्य था हरिजनों को दबोच रखा था हरिजन गलियारे से जब कोई सवर्ण निकलता तो ऐसा खखारते हुए प्रवेश करता जैसे वह कफ की बीमारी से ग्रसित है ऐसा इसलिए कि कोई हरिजन दरवाजे पर चारपाई व ऊँचे चौतरे पर बैठे हों तो उनका अदब करने के लिए खड़े हो जांय।

मड़ेपुर हरिजन भाई एक सूत्र में बँध चुके थे। पंडितों के खखार कर निकलने पर विचार करने बैठे। तै हुआ कि जब कोई पंडित खखारता खाँसता हुआ निकले तो चारपाई डाल कर बैठ जाँय बस पंडितों की यह खाँसने की बीमारी व उच्च स्वाभिमान तोड़ने को इससे अच्छा उपाय और क्या होगा। यह होने लगा और पंडितों को खाँसी की बीमारी से मुक्ति मिल गई। हाँ याद आई एक साधारण घटना। श्री कृष्णी पंडित श्री राजाराम सिंह के कारिन्दा जैसे थे स्कूल डेरे में चलता था। वह अपना गेहूँ जौखो व उसकी लड़की से पिसवाते थे यह दोनों

अन्धे थे। मुझे रास्ते में छेंक कर कहा, कब तक यह बेगार कराएगा। मामा जी यह तो बड़ी आसानी से बन्द हो जाए, हाँ कैसे ? खा डाल, सब गेहूँ पीस कर, अन्धे परिवार का क्या करेंगे। जौखी की समझ पुख्ता हो गई और सब पिसना के गेहूँ खा डाले। श्री कृष्णी जब आटा लेने आए तो जौखी ने कहा पेट बड़ा विसवासी, गले लगावे फाँसी। पण्डित जी जितना चाहो इस पेट को थपक लेव। गाली गलौज फटकार बताकर बेचारे पण्डित चले गए। जौखी को इस बेगार से छुट्टी मिल गई।

व्यक्तिगत सत्याग्रह जोरों पर था। सत्याग्रह गाइड की बात हरिजन समाज को बताई गई। सब ने कहा मुंशी जी ऐसा होना तो आकाश के तारे तोड़ना है । आप सब चाहते हैं तो मण्डल रार के सभी सत्याग्रही जाति भेद तोड़कर आप के स्वागत सहभोज में शामिल हो सकते हैं। श्री वचनू भाई ने कहा पर मण्डल अध्यक्ष श्री विशेश्वर दयाल तो राजाराम सिंह के हिस्सेदार भाई हैं उनकी भी तो यहाँ जमीदारी है कहीं और गाँव के लिए भले तैयार हो जाँय मड़पुर में सहभोज में आना एक बड़ी जटिल समस्या है मैंने कहा अगर सत्याग्रह करना चाहेंगे तो शामिल होना पड़ेगा। गाँव के पण्डितों में बड़ा उबाल आएगा। सब ने कहा हम इससे निपट लेंगे आप २१ सत्याग्राहियों को स्वागत का न्योता दे आएँ।

सर्वश्री वचनू भाई, जेठू भाई, करियल सोनकर, छोटेलाल धोबी, सुखलाल कुरील, रामचरन कोरी, छोटेलाल कुरील तथा भिखारी भाई के साथ विशेश्वर दयाल जी को हरिजनों की ओर से स्वागत सहभोज के लिए आमन्त्रित किया और प्रार्थना की कि इस जल्से में हजार दो हजार जनता आपका भाषण सुनने तो आएगी ही। हमारे यहाँ के सभी हरिजन जाति भेद को तोड़कर आपका स्वागत करेंगे श्री विश्वेश्वर दयाल ने प्रसन्न मुद्रा में हम सब हरिजन साथियों द्वारा दिए आमन्त्रण को स्वीकार किया

और यह भी कहा कि हमारा २१ साथियों का जत्था हरिजनों के स्वागत समारोह में उत्साह के साथ शामिल होगा। आप लोगों को कहीं किसी सदस्य के यहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है। हाँ यह कार्य तो हमारा कार्यालय करेगा और कहीं अगर हम २१ से ज्यादा हो गए तो उन्हें निकाल तो नहीं दोगे ? नहीं यह तो बड़े भाग्य की बात होगी। यह हमारी मण्डल कमेटी को एक ऐसा शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है संभवतः अब तक जिले में ऐसा आयोजन कहीं सुनने में नहीं आया। आप लोग जाँय और तैयारी करें मुंशी ज्वाला प्रसाद आप के सहयोगी भी हैं। हमारे योग्य कोई और सेवा हो बताएँ। हम लोग रार से वापस आकर प्रचार व्यबस्था में जुट गए। इस आयोजन को सुनकर सवर्णों के पैरों में वात रोग सा लग गया यह आयोजन उनके स्वरूप को बदल देने वाला था। लगा आज ही साम्प्रदायिकता का पर्दा उठकर हमारी पूर्व संस्कृति, आचार-विचार तथा सनातन धर्म की जड़ों को मट्ठा डालकर हरिजनों के लिए लगी परम्परागत डाभों को उखाड़ फेंकेगा। एक दिन तो ऐसे शान्त रहे जैसे सीने में साँप लोट गया हो। फिर उभार आया और श्री विशेश्वर दयाल पर अधिकाधिक दबाव डालने के लिए तमाम टोलियां पहुँचने लगीं कि आप हरिजनों के आयोजन में आने से अस्वीकार कर दें। रोकने में असफल होने पर टोलियों की मणि सी उतर गई। सामाजिक विषमता चरम सीमा पर थी जहाँ स्पृश्यता का बोल बाला रहा हो वहाँ सहभोज तो एक अघटित घटना कही जायेगी। सत्याग्रही जत्था रोकने में जब असमर्थ हो गए तो उनमें भ्रम डालने के लिए शुद्ध खादी के कुर्ते और टोपियों की बाढ़ आ गई। जब श्री विशेश्वर दयाल जी ने अपने ब्राह्मण असामियों को कोरा जवाब दे दिया तो व्यक्तिगत तौर से सत्याग्राहियों को रोकने का प्रपंच रचा, इसमें भी असफल रहे। अवस्थी जी ने अपने असामी पंडितों से कह दिया पूज्य बाबू के आदेश की अवहेलना करना देश द्रोह है। ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे। इस

आयोजन का विरोध न करें।

निराश होकर मुझे अपमानित करने की जोरदार शुहरत उड़ाई और कुछ प्रेमी ब्राह्मण साथियों ने मेरे अन्तर बल को टटोलने व तोड़ने के लिए प्रयास किए कि कुछ बेसमझ आपका अपमान करना चाहते हैं। मैंने कहा अपमान तो इस जाति का हमेशा से होता आ रहा है इससे डरने की बात नहीं हाँ यदि जान से मार देने की राय बताई हो तो उसकी शंका भी किये जा रहे आयोजन से विरत नहीं कर सकेगी, यह बातें हरिजन भाइयों तक पहुँच रही थीं। मैं भयभीत न हो जाऊँ मुझे अपने बीच ले जाकर वचनबद्ध हुए कि हम मर सकते हैं पर अपमान बरदास्त न करेंगे। मुझे घरों में ले जाकर तेल से भीगी और धन्नियों से टँगी लाठियाँ दिखाईं यह मौके के लिए सँजोयी गयी हैं। मैंने कहा गाँधी जी के वचनों में यह प्रभाव है कि किसी का साहस नहीं पड़ेगा। इन लाठियों को विश्राम करने दीजिए। आप विश्राम करने की बात करते हैं अभी अभी हम लोगों को सुनाकर बेतुकी बातें अपमानित करने की कही गयी हैं कहते हैं भला चाहें तो मुंशी जी आयोजन रुकवायें अन्यथा परिणाम भयकर होगा। मैंने कह दिया है मेरा अपमान व मारना व्यर्थ न जाएगा। क्योंकि हरिजन उभर चुके हैं परिणाम बुरा होगा। मैं पुनः उन साम्प्रदायिक बन्धुओं से प्रार्थना करूँगा कि पराधीन भारत माँ के वन्धन काटने के गाँधी जी के सत्याग्रह में बाधक बनकर उसकी अविरल धारा के प्रवाह को रोकना कठिन है। जन मानस के प्रबल वेग में आपको बहना ही होगा। साथी बनें ब्राह्मण भाई अपने अब तक के प्रयासों में असफल रहे तो एक अकाट्य विधि निकाली। श्री राजा राम की सुपुत्री अन्नपूर्णा देवी के बारात की तिथि निश्चित हो चुकी थी अतः बारात रोकने के लिए कानपुर धावा मारा और इस कुचक्र को वह अपने उद्देश्य सिद्ध के लिए अकाट्य मानकर प्रमुदित हो रहे थे।

एक तीर से दो शिकार करने का रास्ता निकाला, पहिला यह कि अन्नपूर्णादेवी श्री विशेश्वरदयाल की सगी भतीजी थीं। दूसरा शिकार मैं था कि राजाराम सिंह शादी रोकने के हादशे से घबरा जाय तो हरिजन सहभोज का आयोजन अपने आप धूल चाट जायेगा। श्री राजाराम सिंह दृढ़ विचार और युक्तिसगत विचार वाले थे वह जानते थे कि भाई विशेश्वर दयाल सहज में हिल कर स्वतन्त्रता संग्राम में छिड़े सत्याग्रह से पीछे कदम नहीं हटा सकते अन्ततः श्री राजा राम सिंह ने युक्ति निकाली और मुझे बुलाकर कहा सुना है मुंशी जी हरिजन सहभोज को मटियामेट करने की हठधर्मी ब्राह्मणों की अकाट्य सूझ। हाँ पर हमें तो आपकी सूझ-बूझ का सहारा है और जो स्थिति पैदा की गई है उसके सम्बन्ध में आप की राय ही प्रधान निर्णायक होगी, सोचो। राजा राम सिंह जी ने कहा मैं आप और भैया को ठेस न लगने दूँगा। सोचा है साँप मरे न लाठी टूटे।

मैंने नया भवन निर्मित कराया है अभी उसमें प्रवेश नहीं किया गया गाँधी जी हरिजन उद्धार के लिए जान की बाजी लगाये हैं तो फिर क्यों न इन्हीं हरिजनों के प्रवेश से भवन का उद्घाटन कराया जाय। हरिजन भाई ही स्वागत के लिये स्वयं सामान तैयार करें और सहभोज की पूरी व्यवस्था उन्हीं के हाथ रखी जाय। मैंने थोड़ा समय चाहा और हरिजन समूहों को पूरा विवरण बताया इसे सबने स्वीकार किया। तैयारी स्थान बदल कर श्री राजाराम सिंह अवस्थी के नव निर्मित भवन में होने लगी। इस तैयारी को अपनी असफलता समझकर विरोधियों को रतौंधी सी होने लगी, दृव्य दृष्टि करने के लिये मैकू भाई मेहतर को साहपुर से लाकर बैठाया सोचा सम्भव है हरिजन मैकू को सहभोज में न शामिल करें विरोधियों ने जिसे अहम अलगाव की समस्या समझी थी अपने आप हल हो गयी हरिजन भाईयों ने मैकू को साथ रखने के लिये ज्यों ही गाँधी जी जिन्दा-

बाद के नारे लगाये और मैकू को साथ रखने के लिये ज्यों ही दौड़े तब ब्राह्मणों ने मैकू को ऐसा छिपा दिया कि सामूहिक वारण्ट बेकार गयी।

स्वागत का समय जैसे ही निकट आया तुरन्त हरिजन साथियों ने श्री वचनू भाई के द्वारे और श्री राजाराम सिंह के नवीन ग्रह में साज सज्जा कर दी। श्री विशेश्वर दय ल दल-बल के साथ श्री वचनू भाई के दरवाजे आ गए हरिजनों ने निवेदन किया कि स्थानीय सुविधा से यह सभा श्री राजाराम सिंह जी के नव-निर्मित भवन के सहन में रखी गई है। श्री सभापति दुखित मनसे नये स्थल पर पहुँचे फूल मालाओं में सभी सत्याग्रह करने वालों का स्वागत किया गया। सभा श्री सीताराम सत्याग्रही (चँवर) के सभापतित्त्व में प्रारम्भ हुई विशेष अतिथि श्री विशेश्वर दयाल अवस्थी के स्वागत में-मैंने छोटी रचना सुनाई।

ऐ राही तेरा शुभ पयान
बन जाए जग का क्राँति गान
बन्धु विरोधी भावों से
जब भव्य भवन जलने लगते
स्वारथ रत होकर निर्मोही
जब खून गरीबों का पीते
देता तू उनको अभयदान। ऐ राही....

दृढ़ भक्ती में प्रहलाद है तू
निश्चय तेरे ध्रुव से भी बड़े
वीरत्व में तू अभिमन्यु सा है
हों शत्रु चाहे शिर कोटि खड़े
बिंध जाते तेरे वाक्य बाण। ऐ राही...

निद्रा देवी के उपंग में
सुप्त हो रहा सब जग है
तब भी तू चिन्ता निमग्न हो
सोचे यह दृढ़ निश्चय है
क्यों करूँ देश का अभ्युत्थान । ऐ राही ...

श्री विशेश्वरदयाल जी अवस्थी
तत्कालीन मण्डल काँग्रेस कमेटी अध्यक्ष रार

श्री विशेश्वरदयाल जी का सम्बोधन

मैं मड़ेपुर तथा पास पड़ोस के गाँवों से आए हुए किसान मजदूर भाइयों को धन्यवाद देता हूँ।

भाइयो !

कुछ समय पहले रार में सुनाई पड़ता था कि सत्याग्रहियों के स्वागत प्रोग्राम में एक विशेष वर्ग बाधक बन रहा है और सम्भव है विरोध करने वालों का मस्तिष्क विकृत हो जाये और लाठी चल जाय। सोचें लाठी चल जाने से खून भी बहता तो उस खून की पहचान हो सकती थी कि कौन सवर्ण का है और कौन हरिजन

का। मुझे बड़ा पश्चाताप और खेद हुआ कि मेरे ही ग्राम में बापू के आदर्शों की अवहेलना हो रही है। बापू का सत्याग्रह अंग्रेजों को भगाने के लिये है और वह उद्देश्य तब तक कैसे सफल होगा जब तक देश की सभी जातियों का सक्रिय सहयोग न प्राप्त हो। हरिजन बापू को पिछड़े होने के कारण अधिक प्यारे हैं और कोई भी आन्दोलन तब तक सफल नहीं होगा जब तक हरिजन भागीदार न हों। बापू की नीति का विरोध करके देशद्रोही में नाम न जुड़वायें। गुलामी में हम भ्रमित हो गये हैं और ऊँच-नीच की खाँई डालकर कुछ में हीन भावना का उदय कर दिया है। हरिजन भाइयों को हीन भावना मन से निकालनी चाहिए। जहाँ सेवा की भावना नहीं होती वहाँ सद्गति का वास नहीं हो सकता और वह मानव कहलाने योग्य नहीं होता। आयोजकों को धन्यवाद। अवस्थी जी ने सभी से कहा कि अब सब लोग बचनू भाई के स्वागत स्थल की ओर चलें। जयहिन्द

मड़ेपुर में ही नहीं पास-पड़ोस के गाँवों में सहभोज की ध्वनि गूँज उठी। छोटी जनता में काँग्रेस के प्रति जहाँ श्रद्धा बढ़ी वहीं सवर्णों में हरिजनों के प्रति घृणा की भावना उभर आई। मुझसे अपने को बुद्धिजीवी समझने वालों ने बहस की और कहा कि यह परम्परागत रीति रही है। वर्ग इसीलिए बनाये गये थे। इस प्रकार के कार्यों से सनातन नीति पर कुठाराघात होता है। मैंने कहा सनातन धर्म कहें या आपके इस धर्म को हिन्दू धर्म कहें ? यदि यह धर्म ऐसे ही भेदभाव हरिजनों से मानता रहा और इस धर्म में अन्यों को आत्मसात करने की क्षमता का सदैव अभाव रहा तो निश्चित ही एक समय ऐसा होगा जब हिन्दू धर्म का ह्रास होकर विरोधियों की संख्या बढ़ जाएगी तब इन्हें सर पकड़कर रोने के लिये गुप्त स्थान न मिलेगा। धर्म की बात और उसके अर्थ भिन्न हो जायेंगे।

इस हरिजन स्वागत समारोह से मेरे तथा ब्राह्मणों के बीच

शीत युद्ध सा चलने लगा फलतः मेरा स्थानान्तरण पुरवामीर तहसील कानपुर को कर दिया गया। गाँव में बहनोई चमड़े की रंगाई से घर का पालन-पोषण न कर पा रहे थे। अतः उन्हें खेती सम्हालने की सलाह दी और तेजवापुर के घसीटे भाई पाल से भैंसे खरीदकर गाँव हाँक कर ले गया।

कुड़नी और गाँव के किसान व और साथियों में कुछ ने कहा भैंसों की दलाली करने लगे हो, क्या? अरे भइया खेती क्या कराओगे जमीन तो श्री श्यामसिंह नम्बरदार ने ले ली है। यह सुनकर मुझे बड़ा शाक लगा और पहिले मुख्य-मुख्य अवस्थी परिवारों को अपनी व्यथा सुनाई। श्री बेनीसिंह जी तक पहुँचा दी। उन्होंने साधारण कागज के टुकड़े पर श्री राजाराम सिंह को एक पत्र लिख दिया। श्री राजाराम सिंह व विशेश्वरदयाल की सहानुभूति मेरे साथ थी। परन्तु इन दोनों के सहायता अनुरोध को श्यामसिंह जी ने ठुकरा दिया तब सभी ने मुझे न्यायालय जाने की सलाह दी।

न्यायालय में जाने पर दबाव

न्यायालय में पिता जी को ले जाने के दिन तीन डिक्ट्रिक बोर्ड मेम्बर मेरी पकड़ के लिए दौड़ लगाते रहे परन्तु उनके हाथ खाली रह गये। श्री ब्रजवासी लाल गुप्ता कोर्ट में मेरे पास आ धमके। मेरा परिचय पूछा और कहा यहाँ कैसे आये मैंने कहा रेल गाड़ी से। कहा ठीक-ठीक बात करो, हाँ स्टेशन तक पैदल चलना पड़ा था।

मेम्बर ने कहा तुम गुस्सा में हो ठीक बात नहीं करते।

मैंने कहा आप मेम्बर डिस्ट्रिक बोर्ड हैं ? अगर हैं तो तुरन्त अबाउट टर्न हो जायँ और पीठ दिखा कर चल दें। इनकी रिपोर्ट पर दो रुपया जुर्माना हो गया।

जिस दिन डिस्ट्रिक बोर्ड की बैठक होती उस दिन मैं भी तलब किया जाता और कई मेम्बरों के बीच घेर कर कहते पिता जी ने जमीन दे दी है। पिता जी का मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। उच्च रक्त चाप होने से ध्यान नहीं रहता। मैं तो चारपाई डालने भर की जमीन नहीं दे सकता। श्री श्याम सिंह ने भी तुम्हारे साथ अहसान किया है उसे मान लो।

मैं बलि का बकरा नहीं हूँ, कि हरा चारा खिलाकर हलाल कर दिया जाता है। इन्सान हूँ और इन्सानी व्यवहार का कायल हूँ। ऐसा मेम्बर साहब करें तो मैं भी झुक सकता हूँ। मुझे परेशान करने के लिए ही ट्रांसफर कराए जिससे पैरवी न कर सकूँ। बाद में इलाहाबाद की एक ट्रेनिंग के लिए भेजने का आदेश दिलाया। अन्ततः मैंने शर्ती त्याग पत्र जिला बोर्ड की अध्यापकी से दे दिया। लिख दिया कि जब तक गुलाम मुल्क में

गुलाम जिला बोर्ड सदस्य व अधिकारी रहेंगे तब तक के लिए त्याग पत्र देता हूँ स्वाधीन बोर्ड होने पर मैं फिर अपनी जीवन प्रिय सर्विस में आ जाऊँगा।

यह निर्विवाद सत्य है कि न्यायालय में मेरा कोई गवाही नहीं था गाँव के साथी सहानुभूति रखते थे परन्तु गवाही देकर आने वाली जहमत से डरते थे। एक बार मूसे गड़रिया जमीदार से मुकदमा जीत चुके थे परन्तु उसी रात जमीदारों ने रात मे उनका असहनीय अपमान करा दिया। बेचारे मूसे दादा प्रातः गाड़ी बैल से अपने बाल बच्चों व सामान के साथ गाँव छोड़गए थे। इस भय से किसान भयभीत थे। गवाही कैसे देते। मड़ेपुर स्कूल के स्थानान्तरण से गाँव आते ही जैसे मुसीबत ने चारों ओर से घेर लिया हो।

गाँव में बहन बहनोई पिता जी भांजा भीमसेन, भांजे की बहू, पत्नी मोहिनी, सुशील (छगू) छोटेलाल लड़कों के साथ मैं था। मुकदमा प्रारम्भ होने के पहिले कोरी धौंस में उखाड़ देना चाहते थे नम्बरदार। खेत रह नहीं गए थे। मुझे सत्रह रुपये माहवार मिलते थे। घर में रह रहे प्राणियों की जीविका का कोई और जरिया रह नहीं गया। मैं भैंसे लेकर नौगवाँ गौतम गया। सोना बहिन के उजड़े खूँटों में भैंसे बँध गए। मोल चारा लेकर भैंसों की देख रेख कर पुरवा भी पढ़ाने जाता था। जमीदारों से विरोध बढ़ता गया। मात्र भूमि का ही मामला नहीं था एक डकैत को भी लगा दिया था। वह झामसिंह का नौकर लठैत था उसके विरोध में विवश होकर गवाही देनी पड़ी थी, मैं कानपुर से नवल होकर गाँव आ रहा था श्री वीरेन्द्र सिंह थाने में बैठे थे बुलाया हम भी चलेंगे मैं थाने चला गया एक रिपोर्ट तैयार थी मेरे दस्तखत हो गए वह झामसिंह के लठैत के विरोध में थी। अतः झामसिंह ने उस लठैत को उकसा दिया। उसने बहनोई को धमकाना चालू किया श्री अँगनदास बहनोई ने कहा अब तक इज्जत से रहे हैं अब आखिर में अपमान होगा। बचाव के लिए हम गाँव अलावलखेड़ा

डोमनपुर जायेंगे मैंने कहा आपका अपमान करने का साहस किसी को नहीं होगा। फिर मैं भी अब कुछ मजबूत बन गया हूं २२ हाथ लाठी के सीख लिए हैं हाँ पूरा काम दिखा सकते हैं कोई मारने आए तो हम दो से निपट सकते हैं। मेरे क्रोध की ज्वाला से तो वह स्वयं झुलस रहे हैं फिर जब लाठी थाम कर पोजीशन में मैं खड़ा होता हूँ, जीजाजी आदमी तो साधारण लगता है।

कुछ ने लाठी लेकर चलने में कहा कि लाठी लेकर चलने की आदत बनायी है। हाँ भैया, जमीदारन से गाँव में खतरा तो है न, हम दो से निपटने की हिम्मत रखते हैं फिर आपका कोई अपमान करेगा तो लाठी बाँधना सार्थक हो जायेगा। बहन जी और आपने मुझे बचपन से पाला है माँ की मुखाकृति भी नहीं देखी और अब छोड़कर जायेंगे कैसे मन मानेगा। जीजा जी की आँखें डबडबा आयीं, मैंने कहा—

"ना भा एक कोख का भाय"

मैंने वंशीलाल के खिलाफ रिपोर्ट की थी। श्यामसिंह अब बदला आप से चुकाना चाहते हैं। बहन-बहनोई ने पिता जी को साथ लेकर नौगवाँ में रात बिताई। मोहिनी बच्चों के साथ मायके भेज दी गई। भीमसेन गाँव में रह गए परिवार का यह बिखराव मात्र जन्मभूमि को लेने की सनक पर ही तो था मन में चुभन हुआ करती थी जिस भूमि के रज कण पहिले शरीर में लगे हैं उसे छोड़ने से अच्छा है पहिले मृत्यु का वरण करना। साहसी एक बार मरता है भय से शरीर की तो रोज मृत्यु हुआ करती है।

मोहिनी व बच्चों तथा पिता जी को रामभरोसे छोड़ दिया मैं श्री वसंतदास व उनके सुपुत्र श्री कुहरूदास के जिम्मे पड़ गया था कभी कभी सोना बहिन की रोटी में जो जायका आता अशोक होटल लचर पड़ जाता। अरहर की चूनी की आधी रोटी

खाकर पानी पी लेता और पानी से ही मूछों में ताव देकर सध्या होते लाठी थाम कर ७ मील दूर गाँव रात में पहुँच जाता साथी लोग मुझे एक जगह न पड़ने देते थे दो जगहें बदल कर तीसरी जगह पर रामधुन में मन लग जाता।

जमींदार ने गाँव के सीधे सादे किसान नन्दा भाई व कृपा भाई को अपना गवाही बनाकर ले जाते थे और साथ ही पिता जी के चचा जात भाई मंगलीदास व सगे भांजे गोजादास को भी अपना गवाह बनाया था। यह दोनों सज्जन पिता जी से भीतरी द्वेष भी रखते थे। हमारा गवाह होता कौन ? बड़े बहनोई श्री अँगनदास उनसे छोटे बहनोई श्री पूसूदास (शकर जी) ही हमारे गवाह थे अदालत में श्री नरसिंह पांडे ने लिखा कि यह राजादास के गवाह उनके दामाद हैं पर गवाही ऐसी है जिससे सत्यता प्रकट होती है।

न्यायालय में पिता जी की विजय हुई और साठ रुपये की डिग्री का भी आदेश दिया। डिग्री करान में तीन बार असफल होना पड़ा अदालत में कहा जाता डिग्री से अधिक तो तुम्हारा खर्च हो रहा है क्यों व्यर्थ में पीछे पड़े हो।

मैंने कहा एक मेम्बर जिला बोर्ड श्री श्याम सिंह ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं जमीनदार पार्टी व जनता में उनका प्रबल अस्तित्व है डिग्री हो जाने से जनता उन्हें हेय समझ लेगी और वहाँ की नम्बरदारी तो हमारे हाथ आ जायेगी यह मुड़धुन मैं इसीलिए कर रहा हूँ।

इस कुर्की ने हमें गाँव का नेता बना दिया चर्चा चौपाल में होने लगी आज तक जमींदारों की इतनी तौहीन नहीं हुई थी। किसान जिनको हमारे खेत दिये थे या जिसमें खाद डलवायी थी निकाई करायी थी सब अपने आप भयभीत होकर हमारे गिरे हुए कोठरवा आकर रोने गिड़गिड़ाने लगे। मैंने क्रमशः २५ रु, १० रु. १ सेर घी जुर्माना बोला। देखते देखते सब जुर्माना

वसूल हो गया। मैंने कहा कैसा तुम्हारा राजा है जो तुम्हारी मदद नहीं करता किसानो ने कहा बस भैया जौन कीन रहै फल मिलिगा अब जमींदार की इस डिग्री से पोल खुल गई जो डर रहै सब दूर होइगा अपनी इज्जत के डर से मुँह चापे थे, नहीं तो का कोऊ तुम्हार भला नहीं चहत रहै।

सयोग से इस समय मेरे साले साहब श्री बद्दलराम जी गाँव आ गये थे। मेरे घर में तो स्थान रह नहीं गया था अतः अपने चचाजात दामाद गज्जू भाई के लड़के रंगीलाल के यहाँ रुके थे। उन्होंने सुना कि मैं किसानों को डाँड़ रहा हूँ तो टूटे एकदरे में आकर भयभीत मन से कहने लगे। मुंशी जी किसानों को न डाँड़ो पैसे हमसे लेकर काम चलाओ। मैंन कहा न साहब, काम चलाने के लिये किसानों को दण्डित नहीं कर रहा हूँ। यह एक साख चलेगी कि ज्वालाप्रसाद ने श्यामसिंह जी के असामियों से दण्ड लिया था परन्तु श्यामसिंह रोक न पाये थे और आप काम चलाने के लिए मुझे पैसा देना चाहते हैं शायद आप डर रहे होंगे कि नम्बरदार कहीं कोई और दबाव डालने की तैयारी न कर दें। रही साथ देने की बात तो क्या वह दिन याद नहीं है। जब मैं नौगवां गौतम से चल कर रात में आप के यहाँ रुकता था तो सोने के पहिले आप घर नहीं आते थे क्यों क्या बात थी। और फिर जब मुझे ग्वालटोली गए दिन नहीं बीते थे तब संदेश पर संदेश मोहिनी और बच्चों को ले जाने के भेजते थे। याद है मैं जन्माष्टमी के दिन बच्चों को लेकर गाँव आया था परम्परा के अनुसार दो दाने भी बहन की सेवा में नहीं डाले थे। सोचा भी नहीं था गिरे घर में जाकर कहाँ बच्चों को बिठाएँगे और क्या खायेंगे। याद है नरवल से एक सेर चावल लेकर घर में जन्माष्टमी मनायी थी। मैं इतना विश्वास दिलाए देता हूँ कि मैं आप की जैसी सीढ़ी उतर कर नीचे नहीं आऊँगा हमारे बच्चों का और आपके बच्चों का खून का रिस्ता है।

ईश्वर ऐसा समय देवे कि मैं अपना रक्त देकर भी उनकी सेवा कर सकूँ। मित्रता का व्यवहार आपने नहीं पाला अगर मैं यह कहूँ कि आपने व्यापार का रिश्ता रखा है। आप जानते हैं मैं गाँव में अकेला निरीह व्यक्ति हूँ और किसानों को दण्डित करने का यह मशा है कि जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, उस जमींदार को दण्ड से बचाने की क्यों नहीं सूझी। यह तो साखा है शेष गाँव मेरा हेतू है, आप चिन्ता छोड़ें और मजे से घर जांय मेरी जै राम जी।

बाल संत सुशील

बाल संत सुशील के सद्विचारों एवं भावों से मैं बिंध गया था उज्वल भविष्य के लिए बहुत सारे विचार संजोए थे। सुशील के महानिर्वाण से मेरी समस्त भविष्य की आशायें नैराश्य नद में प्रवाहित हो गईं। दैहिक अमरत्व की धारणा मन में स्थान नहीं बना सकी, परन्तु धर्म के सभी चरण सत्य पर ही आधारित हैं ऐसा मन में है। सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य, सत्य व ईश्वर पर्यायवाची शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। प्रेम, दया निष्ठा, वर्ग भेद रहित समानता के अभिन्न अंग हैं। स्वीकार करने वाला स्वमेव अमरत्त्व प्राप्त कर लेता है। उसकी यश शौरभ गाथा स्वमेव विस्फुटित होती रहती है। यह था समकालीन सुशील में।

मेरी अन्तर वेदना सुशील के सत्य, धर्म, प्रेम की प्रगाढ़ निष्ठा पर टिकी है। सुशील ने अंतिम समय पर जो महान आदर्श रखे, पचास वर्ष होने आ रहे हैं। मेरे अन्तस्थल में आज भी जीवित स्थान लिए हैं। कितनी ही बार सुशील के नाम पर कुछ अक्षत डालने का मन बनाया, कलम थामते ही अँगुलियों में शिथिलता आ जाती रही, मन बोझिल हो जाता और थका हारा सा माथा टेक कर बैठा रह जाता रहा। चेतना जगाने का प्रयास करता, साहस बटोरकर, लिखने को उद्यत होकर सोचता, वंश परम्परा को प्रकाशित करने वाला समाज को समर्पित व्यक्तित्त्व था सुशील का। अक्षर डालने हैं उसके नाम पर। मुझे उससे जो कुछ मिला है, शक्ति भर निर्वहन करता

चला आ रहा हूँ, किनारे लग रहा हूँ, परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि अन्त समय में सुशील का मुखार बिन्दु सामने हो। राम-राम कहते स्त्री पुरुषों और बच्चों से बिदाई लूँ। मेरी सद गति सुशील पर निर्भर है।

संक्षेप में उसके बचपन की ओर चल रहा हूँ। भादों माह के प्रलयंकारी वृष्टि और बाढ़ ने पाँडव व रिन्द नदियों के उतारे बन्द कर दिए थे। भाद्र पद द्वितीया को सुशील अवतरित हुए। सुशील को कुछ ही महीनों में ब्रैंकों निमोनियां ने अपने बाहु पाश में ले लिया पं. गजाधर प्रसाद तिवारी की औषधि ने कारगर प्रभाव दिखाया। फाल्गुन के महीने में स्वयं भी यवक्षार जव के पौधों और लट जीरा से तैयार कर लिया। डिब्बा रोग से ग्रसित बच्चों को भी इस औषधि से लाभ होने लगा।

श्री राजाराम सिंह जी बड़नगर ग्वालियर के जैन औषधालय से औषधियों के पैकेट मँगाते थे श्री सिंह जी ने इन दवाओं के वितरण का भार मुझ पर छोड़ दिया और स्कूल समय से १ घंटा पहिले आकर स्कूल में दवाएँ वितरण करता। इस अभ्यास ने वैद्यक का कुछ बोध करा दिया। वैद्यक की बड़ी पुस्तकों के अध्ययन से जानकारी और भी बढ़ गयी यह शुभ कार्य भी सुशील के होने वाले मर्ज के बहाने होने लगा। ३ व चार साल तक इस घातक बीमारी का उपचार होता रहा और संतोष हुआ कि इस गहन बीमारी से सुशील को छुटकारा मिल जाएगा।

सुशील अपने सहयोगी बच्चों के साथ खेला करता था एक दिन कुछ बच्चे दरवाजे खेल रहे थे और इस खेल में रोटी बनाने के बेलन का भी उपयोग हो रहा था। बेलन खेल में टूट गया माँ ने सब लड़कों को डाँट बताकर भगाया लड़कों के साथ सुशील ने भी घर छोड़ दिया और अपने सहयोगी श्री मंगली भाई के पास अनमने बैठ गये। मंगली भाई ने बातों बातों में फुसला रखा था। मैं स्कूल से आ गया सुशील को घर में न पाकर मंगली

भाई की ओर घूम कर देखा सुशील अनमने बैठे हैं। मैंने गोद में उठा लिया और कहा कैसे उदास हो? हमसे बेलन टूट गया था। माँ ने सब साथियों को दरवाजे से डाँटकर भगा दिया। बेलन तुमसे टूटा था? हाँ, मैंने पुचकार कर पीठ थपथपायी और कहा शाबास बच्चों को सच सच ही बोलना चाहिए, मैं माँ को समझा दूँगा कि बेलन सुशील से टूटा था तुमने सब लड़कों को डाँट दिया बस सुशील इसी से उदास और दुखी है यही बात है न सुशील? हाँ। अच्छा अब कभी तुम्हारे साथ खेलने वाले बच्चों को माँ न डाँटा करेगी। भले ही यहाँ से सच बोलने की बुनियाद सुशील में पड़ गयी हो।

हरिजन स्कूल ग्वालटोली

पैत्रिक तथा जन्मभूमि की लड़ाई से परिवार अनाथ जैसी स्थिति में जा लगा था। भूमि पर अधिकार पाकर उसके जोतने बोने का साधन जुटाकर अचानक श्रम से बीमार पड़ गया। जमीन में बीज न रोपा जा सका धर्म पत्नी मोहिनी बच्चों के साथ बेमन मायके में दिन काट रही थी।

अंधेरे में भटक रहा आशा से जीवन स्थिर था। विश्वास था इस नाजुक घड़ी से शीघ्र ही निजात मिलेगी। इस गहन अंधेरे में एक प्रकाश पुंज मार्ग दर्शक बन गया। श्री श्याम लाल कुरील, बदुआँपुर, तहसील घाटमपुर, जिला कानपुर, हरिजन स्कूल ग्वालटोली में अध्यापन कार्य में रत थे। इस परिवार से पैत्रिक सम्बन्ध थे जब कभी दही बड़ा कढ़ी चावल के लिए मन डोलता बदुआँपुर जा लगते थे। अभी तक दही बड़े की शुहरत बहाल है श्री श्याम लाल जी ने अपने स्कूल में स्थान दिला दिया। मेरा भार स्वयं वहन करने लगे। दो टियूशन भी करा दिए मन में हिम्मत आई कि वेतन और ट्यूशन से कुछ ही महीनों में हालत संभल जाएगी। कहना न होगा संकट में विरले साथी ही साथ निभा पाते हैं। मोहिनी व बच्चों को कुछ समय और बाहर कट जाता, न हो पाया, गाँव ले ही जाना पड़ा।

हजलतपुर गोली कांड

समय अधिक नहीं बीता था अचानक गोपाल भाई हजलतपुर की मृत्यु गोली लगने का समाचार में निकला। पढ़ कर हृदय हिल गया अपने बच्चों को अनाथ जैसी स्थिति से छुटकारा अभी दिला न पाया था—उसे भूल कर गोपाल भाई के अनाथ परिवार

की ओर मन मुड़ गया ।

सुहृद निर्धन भाई का परिवार अनाथ हो गया । मन जमा नहीं । स्कूल से अवकाश लेकर हजलतपुर गोपाल भाई के बच्चों से मिलने चल पड़ा । जमींदारों से संघर्ष की हवा चारों ओर बह रही थी । लगा मुझसे वह पहिले से ही सतर्क हो गए हों हमें नर्वल से हजलतपूर जाने का मार्ग ही बन्द कर दिया गया था ।

श्री नरेन्द्रपालसिंह पड़ोसी गाँव बरईगढ़ के ख्याति नाम ऊँचे जमींदार परिवार से थे । हजलतपुर रात में पहुँचे और पुलिस इंसपेक्टर बन कर गोपाल भाई के पड़ोसी गुप्ता की बैलगाड़ी नहवा ली गोपाल भाई के साथ श्री मान भाई का लड़का ढाकन भतीजा भी साथ हो लिया धमकाते हुए नदी पार कर बरईगढ़ के किनारे तक ले गए गाँव के पास जब गाड़ी रुकाई तो गोपाल भाई गाड़ी के पिछाड़ू आ गए श्री नरेन्द्र पाल नसे की हालत में थे । बैठे-बैठे कुछ ढूँढ़ने लगे गोपाल भाई ने यह समझ कर कि बन्दूक ढूँढ़ रहे हैं जैसे ही बन्दूक की ओर हाथ बढ़ाया श्री नरेन्द्र पाल सिंह ने बन्दूक अपनी ओर झटक ली बन्दूक लोड थी जाखरी में घोड़ा फँस गया बन्दूक छूट गई और गोलियाँ पीछे खड़े गोपाल भाई के पेट में समा गयीं । इस जमात के अन्दर इन्सान की कीमत होती कहाँ है छोड़कर घर चले गए । भतीजा ढाकन गाड़ी हाँककर नर्बल ले आया पुलिस ने प्राथमिक उपचार कराकर गाड़ी कानपुर को हकवा दी रास्ते में ही गोपाल भाई के प्राण पखेरू उड़ गए । परिवार छोटे-छोटे बच्चों से भरा था गोपाल भाई ही एक मात्र सहारा थे ।

नर्वल पुलिस किंकर्तव्यविमूढ़ थी क्योंकि श्री नरेन्द्रपाल सिंह के भाई श्री रघुपाल सिंह डिप्टी एस. पी. थे अतः दो दिन में ही फाइनल रिपोर्ट लग गयी ।

मैं समाचार लेकर ग्वालटोली आया अध्यापक मंडल ने श्री शंकरलाल व श्यामलाल ने गोपाल गोली काँड के मामले

को लड़ने की राय दी श्री श्यामलाल जी ने मुझे सर्व श्री भगत-दयाल दास, लालता प्रसाद सोनकर, मा० रतीराम रामबाग से मिलाया। नर्बल में सभा करने की तिथि तै हो गई श्री श्यामलाल जी व सहायक अध्यापक श्री शंकरलाल ने पर्चे छपवा दिए और प्रचार कार्य के लिए अवकाश दिला दिया।

गणेश आश्रम नर्बल के मैनेजर श्री फक्कड़ जी के सभापतित्व में सभा प्रारम्भ हुई। अल्पकाल के प्रचार से ही जनता की उपस्थिति उत्साह वर्धक थी। उक्त नेताओं के प्रभावशाली भाषणों ने जनता में उत्साह भर दिया। इसी समय श्री गोपाल भाई की पत्नी अपने बच्चों को उँगली पकड़ाए सभा में रोती-विलखती आ गई उपस्थित जनता व नेता गण द्रवित हो उठे जनता ने एक स्वर से कहा कि यह मामला अन्त तक लड़ा जाय। प्रस्ताव पुनः जाँच के लिए स्वीकार किया गया। सभा में आर्थिक सहायता के लिए चंदा एकत्र करने का भार मुझ पर छोड़ा गया। सभा समाप्त हुई और शीघ्र ही उच्चाधिकारियों को प्रस्ताव भेजे गए पुनः जाँच प्रारम्भ हो गयी। मैंने जहानाबाद फतेहपुर लखनऊ का दौड़ा कर आर्थिक सहयोग के आश्वासन प्राप्त किए और प्रारम्भिक व्यय के लिए चन्दा भी एकत्र कर लिया। भूरेसिह, नरेन्द्रपाल सिंह द्वारा गोपाल गोली कांड सहायता रसीदें छपवा ली गयीं।

जहानाबाद बाजार में पहिले चन्दा मैंने वरईगढ़ के कुरील भाइयों से ही लिया जिसकी सूचना बरईगढ़ में श्री नरेन्द्रपाल सिह को लग गई। श्री कृष्णपालसिंह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे उन्होंने डेलाराम कुरील वरईगढ़ की जेब में हाथ डालकर रसीद कटट्ा ले लिया प्राप्त कर्ता में मेरे हस्ताक्षर थे अतः जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर कार्यालय तिलक हाल में श्री वेनीसिंह व ठा० जगबहादुर सिंह को रसीद चदा दिखाई ठा० जगबहादुर सिंह का इस परिवार से निकट का सम्बन्ध था। मेरे लाने के लिए श्री

बाबूलाल कुरील को भेजा गया। श्री कुरील प्रायः स्कूल जाया करते और राजनीतिक चर्चा भी करते रहते। मुझे सीतापुर दलित कांफ्रेस में भी ले गये थे। उनकी ओर मेरा झुकाव होने लगा। अतः ग्वालटोली स्कूल आकर मुझे श्री वेनीसिंह से मिलाने का भार उठा लिया।

श्री कुरील के साथ पहली बार तिलक हाल में श्री वेनीसिंह जी से मिला। अजीब व्यक्तित्व था छूटते ही कह दिया हमें आप जैसे समाजसेवी कार्यकर्ताओं से मिलकर प्रसन्नता हुई है। हाँ गोपाल गोलीकाण्ड की बाबत कुछ जानना चाहते हैं। अगर हम दो पर दो बात करें कोई ऐतराज तो न होगा। मैंने कहा श्री कुरील जी ने मिलाया है फिर श्रीमान् जिला कांग्रेस के सर्वेसर्वा हैं आज्ञा शिरोधार्य है, एकान्त में बात हुई।

क्या गोपाल भाई की मृत्यु नरेन्द्रपाल सिंह की बन्दूक से हुई है ?

इसे नकारा नहीं जा सकता।

क्या नरेन्द्रपाल सिंह ने स्वयं बन्दूक उठाकर फायर किया था ?

यह आंतरिक मामला है हाँ बन्दूक अपने आप नहीं छूटती। श्रीमान इतना तो स्वीकार ही लें कि वैधव्य जीवन बिताने वाली स्त्री के अनाश्रित परिवार के लिये श्री कृष्णपाल सिंह कुछ सहायता करने के लिये कुछ आश्वासन नहीं दे रहे हैं।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के दुखद रवैये से वह अविश्वसनीय व्यक्ति बन गये हैं।

श्री वेनीसिंह जी ने पुनः हजलतपुर जाकर देखने की बात कही।

मैंने कहा दो दिन स्कूल में रहकर जा सकूँगा।

देखा तो किस तरह से एक गरीब हरिजन के साथ निर्मम व्यवहार किया गया।

छोड़ो स्कूल ऐसे तमाम लोग बेगार मार के शिकार हो रहे हैं आओ मिल-जुलकर उनकी मदद करें।

अभी तो जमींदारों की मार से सम्हलने का अवसर नहीं मिला था। जिला बोर्ड से त्यागपत्र देकर यहाँ साथी श्यामलाल जी की कृपा से जमा हूँ। परिवार का एकमात्र आश्रय मैं ही हूँ। कुछ सम्लहने के बाद आपकी सेवा में हाजिर होऊँगा। अभी परिवार को एक ही जून की ही सही रोटी देना है कहाँ से काम चलेगा ?

काम-काज सब ईश्वर पर छोड़ो।

कैसा जादू था श्री वेनीसिंह जी के कहने में विलक्षण आकर्षण फिर प्रतिउत्तर न देकर कह गया जो आज्ञा, स्कूल से मिल आउँ।

अध्यापक मण्डल के समक्ष श्री वेनीसिंह जी का आह्वान रखा। सबने मिलकर बड़ी धूम-धाम से स्वागत के साथ मुझे जन सेवा कार्य के लिये विदाई दी और श्री रघुनाथप्रसाद, व श्री शंकरलाल ने आशीर्वाद दिया कि इस जनसेवा में आप सफल होंगे।

श्री बाबूलाल कुरील हरिजन उपसमिति के सयोजक थे। उनके साथ श्री वेनीसिंह जी को आत्मसमर्पण कर दिया। गोपाल गोली काण्ड को हल करने के लिए सर्व श्री भगतदयाल दास जी रतीराम कुरील, बाबूलाल जी कुरील, के साथ बैठक हुई। श्री वेनीसिंह जी ने उदारतापूर्वक सहयोग दिलाने की बात की।

यह बात विशेष विचारणीय है कि बन्दूक का घोड़ा जाखरी में फँसकर गोली छूट गई और इस भयंकर दुर्घटना में श्री गोपाल भाई ने इस असार संसार से विदा ले ली।

हजलतपुर गोली काण्ड का अन्त

श्री वेनीसिंह जी ने मान्य श्री दयालदास भगत, मा० रती-राम और लालता प्रसाद सोनकर को गोपाल गोलीकण्ड पर निर्णय देने के लिए अधिकृत किया। १०००/- (एक हजार) नकद स्वर्गीय गोपाल भाई की पत्नी को दिलाया जाना तय किया गया।

इस एक हजार को लेने के लिये श्री बैकुन्ठनारायण नर्वल के, तिलक हाल आये। श्री जंगबहादुर सिंह और वेनीसिंह दूसरे कमरे में बैठे। रुपये दिलाने की बात पर कहा-ज्वालाप्रसाद से पूँछ लें। उसने प्रारम्भ से ही इस मामले में हाथ डाला है उधर अपने कमरे में चुप बैठा है।

मुझसे बुलाकर कहा यह रुपया श्री बैकुन्ठनरायन द्वारा भेज दिया जाय। मैंने कहा आप सब की जो इच्छा हो। श्री अवस्थी जी ने कहा—तुम तो अपनी राय दो।

मैंने कहा तो यह रुपया आप लेकर चलें और बेवा पत्नी की कोंछ में डालें। दिन तँ हुआ और श्री अवस्थी जी मुझे लेकर नर्वल गये। वह रुपया स्व० गोपाल भाई की पत्नी की कोंछ में डाल दिया।

मुझे बाबू गोपीनाथ सिंह हरिजन स्कूल में श्री श्यामलाल ने स्थान दिला दिया था। मेरी व्यवस्था का भार अपने सर उठाये थे। दो ट्यूशन भी दिला दिए थे। परन्तु अभी अध्या-पकी का वेतन भी न उठा पाया था और न ट्यूशन की रकम हाथ लगी थी वैसे सभी सम्बन्धियों को मेरी इस सर्विस का पता लग गया था परन्तु मोहिनी को मायका और मुझे बच्चों का ममाना बड़ा बोझिल हो गया था। यह न भूलें कि मोहिनी को इस क्षीण अवस्था में लाने के कुछ ही दिन निकल पाये होंगे कि उसकी रुग्णता बढ़ गई और उपचार के नाम पर किंचित व्यवस्था

व्यवस्था वहन करने की स्थिति में नहीं था। मोहिनी ने चारपाई पकड़ ली असमर्थ आँखों से सुशील छोटे को देखकर मेरी ओर आँखें लाकर मानो वह कह रही है मेरी मोहिनी, इन्हें सम्हालना पास पड़ोस की महिलाएँ घेरे बैठी थीं अन्त में ऐसी ही विषम परिस्थिति में श्री मथुराप्रसाद कोरी मेम्बर डिस्ट्रिक बोर्ड का अति आवश्यक बुलावा आया। रार के श्री श्यामलाल बाजपेई से त्रसित छोटा कोरी हुसेना बड़ी दर्दनीय स्थिति में थे। स्थानीय पुलिस के पक्षपात पूर्ण रवैए से निराश होकर श्री प्रसाद जी ने मेरा आहवान किया।

मेरी स्थिति अतीव उभय पक्षीय हो रही थी। मोहिनी जीवन संगिनी अन्तिम विदाई की दशा में थी मैंने कहा हुसेना में कोरियों पर घोर संकट है मित्र ने तुरन्त बुलाया है मैं क्या करूँ। मोहिनी ने अपने हाथ मेरी ओर बढ़ाये और जल्द लौट आना ऐसे समय कोई साधारण पत्नी दुखित की पीड़ा को दूर करने का संकेत कर सकती है मैं ऊहापोह में था अन्त में साइकिल उठाकर घाटमपुर गया और श्री रामदुलारे मिश्र को एक मार्मिक पत्र लिखा मैं पत्नी का दाह संस्कार करने जा रहा हूँ आप पर यह भार छोड़कर। मथुरा प्रसाद सुहृद कर्मठ साथी हैं इनकी मुसीबत हल करके मुझे शोक संवेदना गंगा घाट भेज दें।

आपकी शक्ति का अनुमान मेरे अतिरिक्त कौन जानता है ईश्वर से प्रार्थना है कि इस कार्य में सफलता प्राप्त कर ही लेंगे हुसेना आपको ले जा चुका हूँ जानकारी भी यहाँ की है।

मैं लौटकर गाँव पहुँच गया कफन लाने को कह ही गया था मोहिनी चेतन अवस्था में मिली होट हिलाए और कहा कि छगू और छोटे का अच्छी तरह पालन-पोषण करना। धन्य है मोहिनी तू देवी है जो मुझ जैसे निर्धन हीन रूखे व्यक्ति के साथ रहकर उसके अन्तिम फल को प्राप्त कर सद्गति प्राप्त कर रही है। मेरे पास तेरे स्वागत के लिये और है ही क्या सिवा आँसू बहाने के। इस प्रकार मोहिनी के अन्तिम आदेश का पालन कर

अपने कार्यकर्ता के उद्देश्य को पूरा किया।

मोहिनी के मोह में रहकर परिवार की रक्षा हो सकती थी रूखा सूखा खाकर जीवन यापन हो सकता था परन्तु पैत्रिक भूमि की रक्षा न करके एक बड़ा कलंक जीवन पर ही नहीं बल्कि भावी परिवार भी उस कलंक से कभी उबरने न देता और फिर अन्त में कौन संसारिक मर्यादा पालन करने के लिये चुल्लूभर पानी मेरे नाम का छोड़ता। मैं यह सोचकर मोहिनी के खोने के कलंक को सहन कर सेवा पथ पर चलता रहा हूँ और चलता रहूँगा। ईश्वर मेरी मदद करे।

सुशील माँ मोहिनी के मोहपास में बिंध चुका था किंचित-मात्र माँ की विलगता सहन न कर सकता था। माँ के जुदा होने का उस पर कितना असहनीय प्रभाव पड़ा सहज अन्दाज लगाया जा सकता है। मैंने माँ से कुछ दूर रहने के कई प्रयास किये तिलक हाल में मन बहलाव के लिए साथ रखने का अभ्यास प्रारम्भ किया तिलक हाल में कांग्रेस जन सुशील से विशेष प्रेम करते और उसे मिनी नेता कहकर मन बहलाया करते थे। सुशील की कमजोरी बढ़ रही थी उस समय के डा० पी० डी० कटियार एक मात्र डाक्टर थे साथ ही पं० रामनाथ वैद्य राजवैद्य टिकवाँपुर का नाम भी प्रसिद्धि पर था उक्त दोनों डाक्टर वैद्य का उपचार सुशील का हो रहा था। रात्रि का विश्राम श्री मुरलीधर कुरील अनवरगंज के यहाँ होता था। सुशील की कुरील व बहू जी से निकटता स्थापित हो गई थी बहू जी के सानिध्य से सुशील प्रसन्न चित्त रहता साथ ही श्री कालीचरन मोतीलाल—भगवानदीन बिहारी लाल आदि सुशील से घुल-मिल कर बातें करते रहते थे। इस समय सुशील स्वस्थ रहने लगा था। बहू के प्यार से काफी समय यहाँ बिताया उसे जो प्यार मिला था माँ के विछोह की वेदना भूल सा रहा था। मानसिक तनाव और आन्तरिक वेदना भूलने का और ठौर था कहाँ। कृतघ्नी हूँगा यदि सुशील को प्यार देने व बहलाए रखने में जो निकटता मिली उसकी सराहना के साथ-साथ

उन्हें धन्यवाद न दूँ ईश्वर परिवार को सुखी रक्खे अनवरगंज की दो बातें उल्लेखनीय हैं।

१. सुशील से मिलकर बहलाने वाले ऊपर कहे सभी साथी रिपब्लिकन पार्टी में थे। सुशील को डा० बी. आर. अम्बेदकर की फोटो देकर कहा यह अछूतों के भगवान हैं परन्तु तुम्हारे पिताजी गाँधी जी को मानते हैं। मुझे सुशील ने वह फोटो दिखलाई और गाँधी जी की फोटो माँगी। मैंने दूसरे दिन गाँधी जी की फोटो दे दी। शाम को सुशील से विचार जानने चाहे।

सुशील--डाक्टर साहब अफसर लगते हैं इन्हें देहाती लड़के देखकर पास न आयेंगे।

गाँधी जी गँवई गाँव के लगते हैं इनको लड़के घेर लेंगे। डाक्टर साहब अछूतों के भगवान हैं तो बाकी सबके गाँधी जी हैं सबका भगवान कहलाने वाला बड़ा है एक जाति के भगवान से।

दूसरी घटना

श्री बाबूलाल कुरील हरिजनों के सामयिक नेता थे एक दिन मुझे मोहनपुर का विवाद निपटाने के लिए कहा और हठ करके जाने के लिए कुछ रुपये यह कह कर दिए कि खर्च बढ़ा है ले लो। मैं अन्त तक इनकार न कर सका और पैसे लेकर साइकिल से प्रातः मोहनपुर चला गया और विवाद निपटाकर शाम को लौट आया हाँ मेरा एलवान कहीं गिर गया। मैंने सुशील से कहा आज नुकसान ज्यादा हो गया।

सुशील--क्या कुछ गड़बड़ किया है

मैं--कुरील जीने आने जाने के पैसे दिए थे

सुशील--मेरी आँखों में आँखें डालकर और तर्जनी छिपाकर कहा आप ऐसा कभी न करना। अच्छा भैया तुम्हारी यह सीख जीवन पर्यन्त निभाने का प्रयास करूँगा। भगवान शक्ति दे कि इस सीख पर चलता रहूँ। ★

पितृ भक्त का एक दृश्य

सुशील को जिस घातक बीमारी ने पकड़ा उसके लिए मात्र डा० पी० डी० कटियार तथा आयुर्वेद में पं० श्री रामनाथ राज-वैद्य टिकवांपुर से उपचार कराता रहा। जहाँ तक सम्भव हो सका उपचार में मित्रों ने भी सहयोग प्रदान किया। सुशील से साथी (काँग्रेस कार्यकर्ता) बड़ा स्नेह करते, उससे बात करते हुए मनो-रंजन किया करते प्रायः साथी अपने साथ गाँव ले जाने को आग्रह करते और ले भी जाते। श्री रघुनाथ सिंह जी अम्बियापुर ने आठ दिन अपने साथ रखा और जब लेकर आये तो कहने लगे अभी सुशील के साथ रहने में दिल नहीं भरा चाची और भैया ने फिर सुशील को निमंत्रण दे रखा है।

फरवरी ४८ ई० में ६० व ७० रु० की औषधि ली जाती थी। सुशील का स्वास्थ्य गिरता गया भीमसेन तो सहयोगी रहे और मझली बहन हिम्मतखेड़ा से आकर सुशील की देख-रेख करती रहीं। एक दिन सुशील को लिये मेड़ू के दरवाजे पड़ा था मेरा हाथ सुशील की पीठ पर था ज्वर से शरीर की तपन बढ़ने का अनुमान हुआ अन्तरमन हिल उठा और मन कहने लगा हे ईश्वर सुशील को स्वास्थ्य दे अन्यथा गर्मी, लू आने के पहले उठा ले, गर्मी लू में अधिक तपन में कहीं तकलीफ बढ़ी तो कैसे सहन होगी। इन्हीं विचारों में मन डूबता उछलता रहा, धैर्य जाता रहा और बरबस आँसू ढुलक पड़े। इस अन्तरवेदना को दवाना चाहा पर छिप न सकी, सुशील ने अपना हाथ मेरे मुँह पर फेरते हुये कहा क्यों रो रहे हैं पिता जी ! मन बैठ गया क्या उत्तर दूँ, कह उठा सर में दर्द है, भैया आँसू बहने से ठढक आ जाएगी और दर्द ठीक

हो जायेगा। सुशील को इतना कहने से संतोष कैसे होता, उठकर बैठ गया और दोनों हाथों से सर दाबने लगा मेरे सरदर्द ने जैसे सुशील का ज्वर कम कर दिया हो। उस समय की पीड़ा जो अदर थी कैसे कहूँ, सुशील की कोमल अँगुलियाँ जैसे-जैसे सर में घूम रही थीं मन बैठता जा रहा था, हैरानी में पड़ गया कहा भैया अब सर ठीक हो गया है। नहीं पिता जी अभी इतनी ही देर में कैसे ठीक होगा दाबने दीजिये कुछ देर। आज आपने दिन में अधिक दौड़ की होगी। ऐसी स्थिति में सिवाय चुप रहने के और चारा क्या था। सुशील के इस अभिन्न प्रेम ने और अधिक चिंता बढ़ा दी थी। आप सोचें कैसे भूलाऊँ, भूलता नहीं उस नन्हें से ज्वर में पीड़ित लड़के के पिता के प्रति अगाध स्नेह को।

ईश्वर ने जैसे मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली हो सुशील का घूमना फिरना बच्चों से बातें करना देखकर मन को ढाढ़स बढ़ा और यह अनुमान लगा सुशील गुरुमित्र बनकर सहयोगी रहेगा।

अंत में मेरी जीवन निधि बाल संत ने मिल भेंट कर कैसे विदाई ली दिल थाम कर लिख रहा हूँ।

मैं ७० रुपये की दवा और फल ले जाने के लिये कानपुर से तैयार हुआ घर को। श्री बेनीसिंह जी ने कहा घाटमपुर में सूचना देकर गाँव चले जाना। मैंने दवा फल दूसरे साथी से भेज दिये, सुशील ने न फल स्वीकार किये और न दवा ली कहा पिता जी आयेंगे तभी दवा लूँगा। मैं घूमता शाम से पहले सुशील के पास पहुँचा कुछ रूठा सा दीख पड़ा फिर मुस्कराकर मन को धीरज बँधाया पिता जी कल हमको श्री मन्नूलाल वैद्य के यहाँ ले चलोगे ? हमें वहाँ चलने में आसानी है सुबह जल्दी ही चल देंगे और सबसे पहले उनके दवाखाने में पहुँच जायेंगे। हसी लड़की थी उससे कहा बिटिया कुछ पींड़ा, लड्डू बनवा लो तड़के बिदकी भैया को लेकर चलना है। सुशील प्रसन्नचित्त चारपाई पर बैठा था मुझे कुछ अनुभव था ध्यान गया देखा स्वाँस तेज है अरे यह तो ऊर्ध्व स्वाँस है लड़की ने फिर आकर कहा पींड़ा बना

रही हूँ, हाँ बना लो कल कहीं न कहीं काम आयेगे। साथियों ने कहा क्या कह रहे हो भला चंगा सुशील और यह अशुभ विचार क्यों? मझे लोग उठाकर घर की ओर ले चले तब तक सुशील ने तीनों टोला के बच्चे, स्त्री-पुरुष सभी को मिलने के लिए बुलाया मैं घर रुक नहीं सका सुशील के पास आ गया सुशील ने बड़ों को पास बुलाकर स्त्री-पुरुष सबके पैर छुये और बच्चों की चूमी ली मुझ अभागे से कहा पिता जी आप भी पैर छुवा लें। मैंने पैर छुवा लिए कहा भैया को ठीक रखना और हाँ आप सब चुप न बैठें राम राम राम की धुन शुरू करें।

जैसे ही सबने राम धुन शुरू की सुशील ने ज्यों ही राम कहा मैं समझ गया यह तो महाप्रयाण की ओर चल रहा है। शीघ्र चारपाई से जमीन में लावो जमीन में लाते ही 'राम राम राम' कह कर एहिक लीला समाप्त कर ली। मुझे याद नहीं राम में कितनी देर मन रमा रहा २ घटे के बीतने पर कहा भैया को दवा दो। साथियों ने कहा दवा लेकर भैया सो गया है आप भी आराम करो।

अब तो समझ गया लगता था मेला देखने जाने के लिए पैर छू रहा था और सबसे राम राम कहला रहा था यदि राम नाम का जाप न किया होता तो मेरी स्थिति कुछ और ही होती। मेरा ध्यान पूर्ण रूप से राम राम राम की महानता पर टिक गया था। कहा जाता है कि अन्त समय में राम राम संत और मुनि भी नहीं कह पाते।

जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं।
अन्त राम कहि आवत नाहीं॥

पर सुशील तो इसका अपवाद निकला उसका यह महाप्रयाण एक सत्यनिष्ठ बाल संत का था। मैं लिख रहा हूँ आँसुओं की धारा स्वतः निकल रही है मेरी अन्तरात्मा हिल गई विषद दुःख इसलिए नहीं था कि वह असमय में छोड़ गया अपितु इसका था

कि एक कर्मठ समाजसेवी सत्यनिष्ठ मानव को समान स्थान देने वाला एक जन सेवक जिस पर भविष्य के लिए कितने सद् विचार सँजोए थे वह सभी नैराश्यनद में एकाएक प्रवाहित हो गए उसकी सेवा के लिए जो समर्पित भावना हृदय में स्थान बना रही थी दृष्टि से ओझल हो गई बस इतना ही कह पा रहा हूँ कि अब परिवार में ऐसा सत्यनिष्ठ परोपकारी जिसने जीवन में असत्य शब्द का उच्चारण न किया हो मिलना कठिन है।

अन्तिम संस्कार के लिए तिरगे झंडों से अर्थी सजी। सुशील के प्रेमियों की वृहद् टोली साथ लगी श्री कुँवरलाल को फोटोग्राफर के लिए श्री बेनीसिंह के यहाँ कानपुर भेजा, फोटोग्राफर जीप में न भेज सकने से देर होगी। श्री छोटेलाल आर्य रूरा जो अब सरकार के उच्च अधिकारी हैं श्री रामलाल कमलवशी के साथ फोटोग्राफर को लेकर आए परन्तु सन्ध्या होने के कारण अर्थी जलदाह में प्रवाहित कर दी गई। कानपुर से आए सुशील के प्रेमी निराश लौट गए।

दो दिन बाद घाटमपुर संखवार सम्मेलन में मन बहलाने के लिए पहुँच गया। सुशील के निर्वाण के समाचार से साथियों के बरबस आँसू छूट रहे थे मैंने कहा सुशील को समाज के बच्चों में निकालना है।

बाल संत सुशील (छंगू) के विचार

(१) बालकों के साथ खेल रहे गुंड में बेलन टूट गया। माँ ने सबको डाँट कर भगा दिया सुशील इसी पर नाराज होकर श्री मंगली भाई के पास बैठ गया। स्कूल से आकर जब सुशील को उठाया तो कहा माँ जी ने हमारे साथियों को डाँट कर भगा दिया, बेलन तो मुझसे टूटा था।

मैंने गोद में उठाकर चूम लिया कहा शाबाश अच्छे बच्चे हमेशा सत्य बोलते हैं।

(२) गाँव के बच्चे अपनी नाक दाहिने हाथ की बाँह में पोंछ

कर गन्दी कर देते थे । सुशील कहता ऐसे में तुम्हारे मामा, जीजी आकर क्या तुम्हें गोद में लेगे ? एक-एक लोटा बच्चों से पानी मँगाया और मुँह नाक आँख व सबकी गन्दी बाहें साफ कराईं । यह एक स्वास्थ्य स्वच्छता का काम था । धीरे-धीरे बच्चों की आदत साफ रहने की बन गई ।

३- बदलू बाबा मेहतर कुड़नी से सुअर घुमाने लाते थे उनकी मिट्टी की कच्ची चिलम जो दीवाल के खोखे में रखी थी किसी ने फोड़ दी बदलू बाबा चिलम ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान थे सुशील ने कहा बाबा क्या ढूँढ़ रहे हो । बेटा चिलम नहीं मिल रही तो चौपाल के हुक्के से चिलम लेकर पियो । हम मेहतर हैं चिलम कैसे छू सकते हैं । तो चलो हमारे साथ पिताजी के हुक्के को दें । नहीं बेटा नहीं हम उसे कैसे लेगे ।

बाह भाई बाह आदमी-आदमी में इतना अन्तर है । मैं इसी समय आ गया । कहा पिता जी यह कुरीति कैसे जायेगी ?

मैंने कहा तुम्हारे अन्दर से यह कुरीति हटाने की बात पैदा हुई है तुम्हारे तमाम साथी मिलकर इस कुरीति को हटा देंगे ।

४- बहुत सी स्त्रियाँ हो हल्ला मचाकर शोर कर रही थीं । सुशील ने रोका उत्तर मिला तुम्हारे पिता भजन गाने में शोर करते हैं, तो तुम भी नकटा गाओ बेकार शोर नहीं ठीक है ।

५- सुशील अपना कुर्ता पाजामा टोपी हाथ से तहाकर सिर-हाने में लगाकर प्रेस कर लेते थे । साफ कपड़े पहनने की आदत बनी ।

६- सुशील की परख पैनी थी सच्चे आदमी से निकटता और गलत व्यक्ति से दूर रहता था ।

७- अपने स्थान का इतना मोह था कि सत्यनारायण की कथा जहाँ रंगीलाल की चौपाल में खेलता था वहाँ न सुनकर अपने टूटे इकदरे में सुनी ।

८- जीवन पर्यन्त झूठ शब्द का प्रयोग नहीं किया जब कोई झूठ बोलता तो सुशील कहता ठीक नहीं कह रहे हो ।

९- सामर्थ्य न होने पर भी सज्जन भाई के आने पर औरों से प्रार्थना करता । इन्हें चारपाई में बैठा वो ।

१०- गाजीपुर प्राइमरी में शिक्षण पाता था ।

११- सोहनलाल द्विवेदी की कविताएँ सीना तानकर गाते-गाते भाव विभोर हो जाता ।

१२. ज्योतिषी ने छंगू के पास बैठकर बातें कीं । कहा पिता जी स्नान करके पीपल में जल छोड़ा करें । क्या यह मेरे लिए है? ज्योतिषी जी, हाँ । पिताजी स्नान करें । जल डालें और मुझे लाभ हो यह मजाक है ।

१३- पितृ भक्त इतना की अपना ज्वर भूल मेरा सर दबाने लगा था ।

होली नहीं मनाएँगे आन्दोलन

बाल संत सुशील का महाप्रयाण अन्तस्थल में अमिट छाप छोड़ गया था। २० दिन ही हुए होंगे। यू० पी० दलित वर्ग संघ सम्मेलन रुड़की में शामिल होने के लिए जि० द० वर्ग संघ की बैठक ने मेरा जाना तै कर दिया। कहा आपका उखड़ा मन कुछ-कुछ जमेगा। एक साथी को साथ रहने के लिए श्री सुरजन कोरी गढ़ेवा का चलना निश्चित भी हो गया। सुरजन भाई ने कहा बड़े भैया मुझे गंगा का छोर दिखवा लाओ। दोनों साथी सम्मेलन में बाबू जगजीवनराम का भाषण सुनकर प्रातः हरिद्वार को तैयार हो गये। ज्वालापुर तक एक ताँगा मिल गया। नहर किनारे थी। अतः वहाँ टट्टी से फुरसत पाने के लिए उतर पड़े। टट्टी होकर मैंने नहर में पानी ले लिया। पर सुरजन भाई नहर की तरंगों की उछाल और गड़गड़ाहट से भयभीत हो गये। उन्हें पानी लेकर देना पड़ा। ज्वालापुर में पंजाब शरणार्थी इतने भर गये थे कि कहीं स्थान होटल में नहीं मिला। एक चौपाल में रात बिताई और प्रातः हरिद्वार पहुँच गये। सर्दी की वजह से वापस लौटना पड़ा। कानपुर से कोड़र चला आया। मुल्लूराम, गयाप्रसाद, नरायन प्रसाद सगे साले वद्लराम के लड़कों के यहाँ रुक गया। इन तीनों भाइयों का सुशील से गहरा स्नेह था। देर रात तक सुशील के सद्गुणों की चर्चा कर दुखित होते रहे। मैंने कहा गयाप्रसाद यह दाग जीवन पर्यन्त साथ लगा रहेगा। सुशील बच्चों से अधिक स्नेह रखता था अतः उन्हीं बच्चों में सुशील को खोजना है। यह सुनकर गयाप्रसाद का मन कुछ हलका हुआ। ग्राम शिवपुरी में स्त्री, बच्चों पर हो रहे अत्याचारों का हालचाल सामने रखा। मैंने कहा अब सोओ प्रातः शिवपुरी

चलकर देखेंगे।

शिवपुरी से परिचित था दोनों एक साथ शिवपुरी पहुँच गये। बात की बात में स्त्री, पुरुष, बच्चे एकत्र होकर अपनी बीती बताने लगे। एक स्त्री पीठ और पैरों की चोटें दिखाते हुए फफक कर रो पड़ी। छाती की चोटें कैसे दिखाऊँ। मेरे इस लड़के के दोनों पैर उबहनी के फंदे से कस दिये और इस नीम की ऊँची डाल पर झूला सा डाल दिया। उबहनी का दूसरा सिरा खींचकर डाल तक ले जाते और फिर नीचे को ढीलते। लड़का अपने दोनों हाथ जमीन पर रखकर सर की चोट बचाता उसके शरीर से पसीना टपक रहा था पर निर्दयी दर्शन सिंह रहम न कर सके। जमींदार के नौकरों ने मेरे रोने गिड़-गिड़ाने पर ध्यान न देकर लड़के को डाल तक ले जाकर नीचे ढीलते रहे। दहशत में जान निकल जाती तो लाश फेंक दी जाती, कोई सुनने वाला नहीं था। लड़के से पूछते थे तेरा बाप कहाँ है पर उसकी तो घिग्घी बँध गई थी बोल नहीं सकता था। मैंने बालकों के प्रति माँ बाप का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। पहिले बालक के भीतर के भाव को समझना चाहिये। यहाँ बाल प्रकृति का भाव बताया।

मनियाँ भाई ने बताया मेरा सगा भाई मर गया परन्तु उसकी लाश ले जाने की छुट्टी दरशन सिंह ने नहीं दी कहा गाँव में और लोग होंगे वह ले जायेंगे। आततायियों ने बेगार से मुझे छुट्टी न दी। एक कोख से जन्में भाई के अन्तिम दर्शन न कर सका। गाँव में कुछ बूढ़े ही दिखाई पड़ रहे हैं जवान कहाँ हैं। बताया २० दिन से बेगार में लगे हैं। रात को भी छुट्टी नहीं पाते ऊँख पेरने में लगे हैं मजदूरी भी नहीं देते जिससे गाँव छोड़कर जहाँ भगायेंगे दुबक लेगे। पर यही क्या विश्वास है जहाँ जायेंगे वहाँ दर्शन सिंह जैसे जालिम जमींदार न मिलेंगे क्या ?

मैंने कहा गाँव से जाने की दशा क्या होती है सुनें।

तन ढकें कहो क्यों वस्त्र नहीं,
हो क्षुधा शांति क्यों चून नहीं ।
है समय चक्र की प्रबल प्रथा,
दे दाना कभी अब वे दानें । हम दोनों··

सर्दी में ज्यों-ज्यों रैन कटी,
हम ओढ़े रहे एक धोती फटी ।
आया नौकर भू स्वामी का,
ले चला संग वे वस्त्र जाने ।। हम दोनों··

सह जूती डंडा काम किया,
घर आकर चित अति व्यग्र हुआ ।
बालक लेकर के संग बहिन,
लख खाली हाथ लगा रोने ।। हम दोनों··

बेटा! कल मिले हमें जब मजदूरी,
तो संध्या तक खाना पूड़ी ।
डिडकार छोड़ रोए बाल धीर,
मैं भी लगा आँसू टपकाने ।। हम दोनों··

बृद्धा माँ क्षुधित तड़पती है,
चिथड़ों से लज्जा ढकती है ।
दारुण दुख से प्रसवित पत्नी,
मैके जाने की हट ठाने ।। हम दोनों··

आशा रख सुख तज ग्राम यहाँ,
आया था शिकम शेर करने ।
वह भूली नहीं दुःख की गाथा,
यों भाग के गीत लगा गाने ।। हम दोनों··

यह करुण रहस्य अनूठा है,
हो दलित प्रलय क्या इच्छा है ।
कर श्रवण हृदय यदि द्रवित न हो,
होना ही जन्म वृथा जाने ।। हम दोनों··

एक्य वृक्ष की पूजा कर,
हम दीनस्थल में डँट जायें।
ज्वाला यह तन में भभक उठी,
बेवस हूँ दिल की दिल जाने ॥ हम दोनो''

भगत ने कहा यह तो अपने पर बीत रही है। गाँव की अपनी दशा दरसाई है।

बहन ने कई लड़कों की ओर इंगित करके कहा पहिले इन्हें देखा होता तो पहिचान न सकते। आँखें डभरा कर गड़वों में धँस रही हैं। पसुलियाँ झरझरा रही हैं गाल बैठ गये हैं, खाने को पाते तो क्या इस तरह के निर्जीव जैसे देख पड़ते। एक बहन को और उसके बच्चों की ओर संकेत कर कहा सुना है श्री पंचमदास बैद्य सेमरझाल का नाम यह उस बड़े घर की लड़की है जिनकी दुर्दशा देखी नहीं जाती। धन्य है रिश्तेदारों को जो मायके से चटरी-मटरी, मक्का, बेझर, महुआ लाकर दे जाते हैं। जिसके दाना दुबका इनके पेट में पहुँचकर जीवन का सहारा बन रहा है। महीना भर तो कोई भी मजदूर रहनस से छोड़ा नहीं जायेगा। तब तक इनमें से कितने बच रहेंगे।

मैंने कहा, इस असहनीय संकट को कब तक सहते रहोगे। मनिया भाई ने कहा। जब तक शिवपुरी में रहेंगे। सोचा है गाँव छोड़कर जहाँ सींग समायेगा जा लगेंगे। भाई इस मुसीबत की दरख्वास्त देकर सरकार के सामने रखो। न भैया न एक बार एक दर-ख्वास्त दी थी, दर्शन सिंह के सिपाही पुलिस के साथ इसी माइनर की पटरी पर बुलाकर बुरी तरह से पिटाई कराई, कहें क्या उस पिटाई में तो किसी-किसी की धोती तक खराब हो गई थी। अब यह हिम्मत तो है नहीं कि जबान खोलें। यहाँ आए मुसीबत से जो गुजर रहे हैं कह सके। बेगार से छुट्टी पाते ही गाँव खाली कर जहाँ खप सकेंगे इन मुरझाये बच्चों को ले जाकर जीवन का सहारा खोजेंगे।

मैंने कहा कि आप लोग अपने-अपने घर चलें मैं श्री गया-प्रसाद के साथ कुछ जानकारी चाहता हूँ। घरों में जाकर स्त्रियों और बच्चों व बूढ़ों से मिलकर उनकी अन्तर भावना की थाह लेने के लिये अप्रत्यक्ष प्रयास किया। बात करने से लगा इन सबके दिलों के गहरे पर्त में श्री दर्शन सिंह से छुटकारा पाने की अभि-लाषा दबी है। यह दहकते अगारे राख को परत से दबे हैं। थोड़ी सी खरोंच से इनके अन्दर की दहकती लालिमा धधक उठेगी।

मैंने मनियां भाई और भगत से कहा। पिताजी कहा करते थे–

"जननी जाप संत जन, कै शायर कै शूर,
नाहित जननी बाँझ रह कहे नसाए नूर।"

सुनकर मनियां भाई के जैसे बरछी लग गई हो उछल कर चीख पड़े। हम अब कष्ट झेलने को तैयार नहीं हैं। मरने को तैयार हैं। देख रहे हो हमारे शरीर में क्या है? सम्मान के लिए लिए एक-एक बूँद बहा देंगे पर यहाँ बेबस हैं। मैंने कहा, नहीं मनियाँ भाई नहीं रक्तपात की जरूरत नहीं है। सुना है कांग्रेस का नमक आन्दोलन विदेशी बहिष्कार और शराब बन्दी आन्दोलन को। हमें इसी प्रकार से अहिंसात्मक आन्दोलन का सहारा लेना है। दर्शन सिंह के अत्याचार के विरोध में अहिंसात्मक आन्दोलन करना पड़ेगा। इससे हमें क्षेत्र का सहयोग मिलेगा और दर्शन सिंह की लाठी, गोली और गुण्डों की शक्ति क्षीण हो जायेगी।

आवाज आई तनिक समझाय के कहो?

भाइयो! शिवपुरी में जो अमानवीय व्यवहार हो रहा है उससे क्षेत्र के ६० से ७० गाँवों को अवगत कराना है। जितना गहन प्रचार दर्शन सिंह, सिद्धी मुनीम के सहयोगियों के आतताईपन, २-३ वहशी अत्याचारों के विरोध में हम कर लेंगे उतनी ही आततायियों की शक्ति क्षीण होगी। जनमानस में एक दिन और एक ही समय में हजारों आदमियों के मुँह से जो आवाज निक-लेगी उसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। जुल्म ढाने वालों के हृदय

कम्पित हो उठेंगे। सरकार के कानों में लगी ढट्ठी और आँख की पट्टी खुल जायेगी और तत्काल कार्यवाही करनी पड़ेगी।

हमारे जन आन्दोलन का स्वरूप

कहना होगा दर्शन सिंह व सिद्धी मुनीम के अत्याचारों के विरोध में हम होली नहीं मनाएंगे यह हमारा नारा होगा? आन्दोलन की बुनियाद अहिंसात्मक होगी, हाँ पहिले महराजपुर, नर्वल, बिधनू थाना के प्रमुख जनों को इस आन्दोलन में सहयोग देने के लिए एक बैठक बुलाकर निर्णय लें। यह बैठक श्री घसीटे लाल कुरील सरसौल की सायादार चौखट में बुलाई जाय हाँ मुस्तैद साथी पत्र पहुँचाने के लिए आगे आएँ। आवाज आई हम तैयार हैं।

मैं पत्र कानपुर से तैयार कर लाऊँगा और एक नोटिस भी छपवानी होगी। गरीब मजदूरों के घरों से २२ रुपये एकत्र हुए जिन्हें लेकर गयाप्रसाद के साथ कानपुर गया।

श्री मेवालाल यादव को कुछ दिन पहिले तिलकहाल में जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर कार्यालय संचालक के रूप में देखा था। मेवालाल जी यादव से अपरिचित था। फिर भी यह जानकारी मिल चुकी थी कि कांग्रेस आन्दोलन के समय कार्यालय बचाने व संचालन में श्री मेवालाल यादव का ही विशेष हाथ रहता रहा है। सन् १९४२ के अंग्रेजों भारत छोड़ों आन्दोलन के समय सरकारी फोर्स का तिलक हाल में जबरदस्त हमला हुआ। श्री यादव ने अपनी जान जोखम में डालकर आवश्यक रजिस्टर व कागजात अपनी पीठ व पेट में बाँधकर आर्य समाज हाल की बाउण्डरी फाँदकर उतर गये और पुलिस अफसरान जिन कागजों को चाहते थे न मिलने से निराश लौट गये। सगठन का बिखराव श्री यादव ने बचा लिया।

श्री मेवालाल जी यादव इस समय सिविल लाइन कचहरी के पास कार्यालय चला रहे थे। मैंने श्री यादव को शिवपुरी की

पूरी दास्तान बताई और अहिंसात्मक आन्दोलन के संचालन की सलाह ली। श्री यादव ने ८० फार्म जिसमें कार्यकर्ता को दी गई जिम्मेदारी का विवरण था। टाइप कर दिये। ६० तिरंगे झण्डों का प्रबन्ध भी कर दिया। यह इतना बड़ा कार्य था जो श्री यादव के अतिरिक्त और कहीं से हो पाना सम्भव नहीं था। जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर से किसी प्रकार का सहयोग नहीं प्राप्त हुआ। फिर भी मैंने अपने उस कार्य का निर्वहन करना मुनासिब समझा जिसके लिए कांग्रेस में आया था। जिला कांग्रेस ने पहिले ही नोटिस छपवाने से मना कर दिया था। कोई सहयोग भी नहीं मिला। उस समय मेरे मन में शिवपुरी की दुर्दशा का जो अमानवीय चित्र था, उसके लिए "होली नहीं मनायेंगे" अहिंसात्मक आन्दोलन प्रयोग का करने का पूरा निश्चय कर लिया था।

श्री राम नारायण त्रिपाठी का सोशलिस्ट कार्यालय सिविल लाइन में था। शिवपुरी आन्दोलन के लिए प्रकाशनार्थ सहयोग हमारे उत्साह और प्रचार के लिए अत्यधिक उपयोगी रहा।

अखबार के प्रचार से अधिकारियों एवं कांग्रेसी नेताओं की आँखें खुल गईं और "होली नहीं मनायेंगे" आन्दोलन के प्रति. जनता अधिक सजग हो उठी। प्रचार समिति उक्त श्री मेवालाल जी यादव, श्री रामनरायण त्रिपाठी की कृतज्ञ है। रात्रि में मैंने अवसर निकाल कर एक नोटिस "होली नहीं मनायेंगे" पुश्त पर फेरीगान सहित तैयार कर ३००० छपवा ली। सभी पत्रावली लेकर प्रचार समिति के सुझाव के अनुसार घसीटे कुरील सरसौल की चौखट में बैठक करनी तय हुई थी। प्रचार समिति के पदाधिकारी व सदस्य एकत्र हुए। महराजपुर, नर्वल, बिधनू के थानों के अतिरिक्त जहाँ तक पत्र व नोटिस पहुँचा सकें पहुँचाये जायँ और हर गाँव के चौधरी व सहयोगी को पत्र नोटिस व झण्डा देकर अगले शनिवार को अधिक से अधिक कार्यकर्ता इसी

स्थान पर ११ बजे दिन में आ जायें। शिवपुरी की दुर्दशा का जितना प्रचार कर सकेंगे उतनी ही सफलता मिलेगी।

मैंने अगली बैठक में श्री मेवालाल जी यादव को आमंत्रित कर आने की स्वीकृति प्राप्त कर ली थी। नोटिस जो तैयार किया था "होली नहीं मनायेंगे" शीर्षक श्री रामनारायण त्रिपाठी ने अंगोट लिया पहिले ही सम्पर्क में वह प्रभावित हो गये और शिवपुरी आन्दोलन के प्रचार में बड़ी दिलचस्पी ली। आन्दोलन की रूपरेखा का सजीव चित्र अखबार में प्रकाशित किया और होली के दिन होने वाली बृहद् सभा का भी प्रचार किया।

सम्पूर्ण क्षेत्र के १०० प्रमुख चौधरी नये कार्यकर्त्ता प्रपीड़ित समाज शिवपुरी की दुर्दशा से उद्विग्न हो उठे और होली के पहिले शनिवार को निश्चित स्थान समय पर सरसौल में एकत्र हो गये। श्री मेवालाल यादव भी समय पर आकर जम गये।

बैठक की कार्यवाही श्री जगन्नाथ जी रामपुर की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। श्री मेवालाल जी ने उपस्थित महानुभावों का परिचय जानने की जिज्ञासा प्रकट की। सभापति जी ने अपना परिचय देने के साथ ही उपस्थित साथियों का परिचय श्री गयाप्रसाद कोड़र व श्री कामता प्रसाद सेमरझाल की सहायता से कराया।

परिचय प्राप्त कर श्री मेवालाल जी यादव ने कहा जिस किसी आन्दोलन के प्रचार में इतनी बड़ी संख्या में सभी वर्ग के चौधरी और उत्साही नवयुवक तन-मन से जुट रहे हैं। उसकी सफलता निश्चित है। मैं चाहूँगा कि सभापति जी शिवपुरी के दमन-चक्र का संक्षिप्त विवरण श्री गयाप्रसाद जी से कहने को आदेशित करें।

श्री गयाप्रसाद ने स्थिति पर प्रकाश डाला।

बेगार के लिए दर्शन सिंह के सिपाही जबरन घरों में घुसकर औरतों को मारते हैं बच्चों को बेरहमी से त्रसित करना,

नीम की डाल में झूला डालकर लड़कों के पैर बाँधकर डाल तक खींच ले जाना और फिर नीचे छोड़ना । भयभीत होकर मर जाता तो उनका क्या बिगड़ना था ।

सगे भाई की अर्थी में भाई को बेगार से न छोड़ना, एक माह तक मजदूरों को घर न जाने देना । आर्थिक संकट का अन्दाज इसी से लगता है कि मायके वाले दाना दनका दे जाते हैं जो जीवन का सहारा होता है ।

सभापति जी ने मुझे नोटिस पढ़ने और उसका खुलासा करने की इजाजत दी । नोटिस में होली के दिन का पूरा कार्यक्रम बताया और पुश्त पर लिखा मार्च गीत सुनाया ।

सभापति ने श्री मेवालाल जी यादव और उनके साथ आये श्री सिद्धगोपाल यादव का परिचय कराते हुए श्री मेवालाल जी से अनुरोध किया कि अहिंसात्मक आन्दोलन की सफलता किस प्रकार हो और दमित साथियों का कैसे इस आन्दोलन के लिए मन आन्दोलित हो । विस्तार से बताने की कृपा करें ।

श्री मेवालाल जी यादव द्वारा तैयार किया गया फार्म भरने का कार्य प्रारम्भ हुआ । कार्य में एक जिम्मेदार चौधरी व युवक तथा एक और सहयोगी जिसमें उनके प्रचार के गाँव तथा होली के दिन तिरंगा झण्डे के साथ प्रचार गीत गाते हुए टोली को शिवपुरी लाने की विधि बताई गई। इतने उत्साही चौधरी तथा नवयुवक इस मीटिंग में उपस्थित हुए कि फार्म जिस अनुमान से तैयार किये गये थे कम पड़ गये । सभापति की आज्ञा से श्री यमुना नारायण शुक्ल महुआ गाँव ने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि गरीब और संतप्त इस आन्दोलन को वृहद रूप नहीं देंगे तो सरमायेदारों और अत्याचारियों के दुष्कर्मों को कैसे रोका जायेगा । हमें अपनी मुसीबत का स्वयं हल ढूँढ़ना है जो आन्दोलन की विधि बताई गई है । उसमें हम ढीले पड़े तो किसी और से अपने उद्धार की आशा करना व्यर्थ है अतः भाई सोतों को जगायें और अधिक से अधिक संख्या में जनता को साथ लाएँ ।

सभापति श्री जगन्नाथ जी ने इस प्रोगाम को सफल बनाने के लिए आने वाले भाइयों को बधाई दी और कहा कि इतनी बड़ी संख्या में अछूत जाति के चौधरी व नवजवान आयेंगे मुझे सन्देह था यह जमात देखकर मेरे मन में भी उत्साह जमा है और सभी भाइयों को विश्वास दिलाता हूं कि मैं रात दिन आन्दोलन का प्रचार करके अधिक तादाद में टोलियाँ लाने में जुट जाऊँगा हममें से कोई भी गरियार बैल की तरह कंधा डालकर न बैठेगा सब में उत्साह जगाने की लहर लहरा रही है। तिरंगा झण्डा और मार्च गीत के उपयोग को समझ चुके हैं। पढ़े-लिखे नवजवान व लड़के टोलियाँ लाने में अधिक सफल होंगे।

प्रचार समिति को क्षेत्र बाँटकर कार्यकर्ताओं को उत्साह दिलाते रहेंगे और जहाँ कहीं कमी देख पड़ेगी प्रचारक सदस्य वहाँ रुककर उत्साह वर्धन करेंगे।

यद्यपि जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर से हमें कोई सहयोग नहीं मिला फिर भी प्रचार कमेटी की ओर से जिला कांग्रेस कमेटी जिलाधीश कानपुर व सभी सम्बन्धित पुलिस थानों को इस आन्दोलन की पत्रावली भेजकर आन्दोलन से सूचित कर दिया जायेगा। सभी साथी अपने-अपने चार्ट झण्डे मुखिया के साथ लेकर आयें।

हमें रात दिन जुटकर होली के दिन होने वाली शिवपुरी की सभा को सफल बनाने में जुटना है।

आप सभी होली के दिन ठीक ९ बजे टोलियों के साथ आ जायें।

मैं सभी उपस्थित चौधरियों व अपने उम्र के नवजवान साथियों को धन्यवाद देते हुए कार्यवाही समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद !

बेगार अत्याचार तथा होली के दुर्व्यवहार के विरोध में

दलित समाज का निश्चय

प्रिय बन्धुओं !

गत वर्ष पूज्य बाबू और इस साल माता सरोजनी नायडू के निधन से होली विषाद भरी रही परन्तु हम दीन दलित भाइयों की होली हर साल ही दुःख में बदली रहती है। बेगार, भ्रष्टाचार और होली तथा दुरहटी के दिन हमारे सवर्ण भाई हिन्दू धर्म और मानव धर्म के सार को भूलकर हमारी मताओं, बहिनों और स्त्रियों को अश्लील तथा गन्दे गाने सुनाकर तथा मार बेगार आदि लेकर आनन्द मनाते हैं। यह हिन्दू समाज की रूढ़िवादी परम्परा की देन है जो इस स्वतन्त्र भारत में भी किन्हीं-किन्हीं गाँवों में बरती जाती है। हम इन सभी कुप्रथाओं को समूल नष्ट करने के लिए उतावले हो उठे हैं। गम्भीरता पूर्वक इसके निराकरण का मार्ग ढूँढ़ना है। हाँ हमें पूज्य गाँधी जी ने अहिंसा द्वारा निर्बल को सबल से लड़ने का मार्ग बताया है इसी शान्तिमय मार्ग पर चल-कर महात्मा गौतम बुद्ध, सन्त कबीर, भगवान रविदास ने ख्याति पाई थी भारतीय इतिहास में सदैव इनका नाम स्वर्णाक्षरों में अकित रहेगा अतः हमारे साथी इसी सत्य को अपना कर आगे बढ़ें। हमारे सहयोगियों की संख्या बढ़ेगी और विरोधियों से विजय प्राप्त कर चिर शान्ति मिलेगी।

होली तथा दुरहटी के दिन का कार्यक्रम

१. प्रातः होली जलने के दिन एक स्थान पर बैठकर "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम। ईश्वर अल्ला एकहि नाम सब को सद्‌मति दे भगवान" की धुन लगाएँ।

२. तिरगा झण्डा लेकर टोली के साथ नोटिस में लिखा गान फेरी फिरते हुए गाते जायें।

३ संध्या को होली जलने के समय प्रातः की रामधुन का

गान अपने मुहल्ले में ही बैठकर ! धुन जोर से लगाई जाय जिसमें कबीरें न सुनाई दें।

४. दुलहटी के दिन प्रातः रामधुन, बाद में फेरीगान झण्डा लेकर।

५. दोपहर को अनशन किया जाय। बच्चों को सादा खाना दिया जाय।

६. फाग के समय रंग अबीर न डाला जाय संध्या तक रामधुन और फेरीगान बैठकर अपनी बस्ती में हर दरवाजे जाकर गावें। संध्या को सादा भोजन किया जावे।

होली के समय सामूहिक तौर से फेरी गान

हम होली नहीं मनायेंगे, गाँधी गुण गाथा गायेंगे।
भूलों को ज्ञान सिखा करके, हम सभ्य समाज बनायेंगे ।।
ले हाथ तिरंगा विजय चिन्ह, संग नर नारी और बाल बृन्द।
अत्याचारी बेगारी का, हम नाम निशान मिटायेंगे ।। हम
पशुता के बल मानव होकर, जो हमें कुचलता जाता है।
हम सत्य अहिंसा के द्वारा, नर पशु अज्ञान मिटायेंगे ।। हम ··
दिल के काले अत्याचारी, अन्तस्थल धूमिल भी अपना।
दोनों दिशि जब काले हैं, ऊपर से रंग न डलायेंगे ।। हम ··
वह व्यंग समझ गाली गावें, लज्जा से मस्तक झुक जावें।
उस झुके हुए मस्तक में हम, अब रोली नहीं लगायेंगे ।। हम···
शोषण अपना नित बन्द नहीं, अत्याचारी गति मन्द नहीं।
शोषित के हाथों शक्ति कहाँ, हम ढोलक नहीं बजायेंगे ।। हम ··
होकर सुबन्धु बन क्रूर हृदय, अरमान जलाते रहते हैं।
अभिलाषाएँ जब राख हुईं, हम होली नहीं मनायेंगे ।। हम ··
जीवन वीणा के तत्रों की, झकार सुरीली कैसे हो।
बर्बरता से ऐंठी जाती, हम होली नहीं सुनाएँगे ।। हम···
जब घृणा विवशता; लज्जा का, है निज तन में विस्तार बढ़ा।
फिर कुशल कहाँ होली के दिन, हम कुशली नहीं बनायेंगे ।। हम ··
जब एक सूत्र में बँध कर के, हम दीन-स्थल में कूद पड़े।
"ज्वाला" यह तन में भभक उठी, हम सब अनरीत मिटायेंगे ।। हम··

श्री जगन्नाथ जी

प्रचार समिति का निर्माण

१.	श्री यमुनानारायण शुक्ल, महुवा गाँव	संरक्षक
२.	" जगन्नाथ जी (रामपुर) सरसौल	सभापति
३.	" कामता प्रसाद सेमरझाल	उप सभापति
४.	" भीमसेन कुरील अलावलखेड़ा	उप सभापति
५.	" हीरालाल, हजलतपुर	उप सभापति
६.	" गयाप्रसाद कुरील, कोड़र (महराजपुर)	मंत्री
७.	" रामधनी कुरील मुहम्मदपुर	"
८.	" कुँवरलाल, ढुकुवापुर	"
९.	" पूसूराम कुरील, धौरी	"
१०.	" देवीप्रसाद, धमना	"
११.	" पूसूराम (पुरुषोत्तम), कुड़नी बंगला	कोषाध्यक्ष
१२.	" सुन्दरदास कुरील, डोमनपुर	सदस्य
१३.	" गयादीन कुरील, डोमनपुर	"
१४.	" मुल्लूराम, कोड़र	"
१५.	" कालिकाराम कुरील, तिलसहरी खुर्द	"
१६.	" छोटेलाल कुरील, तिलसहरी कलाँ	"

१७.	श्री कुंवरलाल बुनकर, कुड़नी	सदस्य
१८.	" पूसूराम (शंकर जी), रायपुर	"
१९.	" घसीटेराम, सरसौल	"
२०.	" सत्तन कुरील, कोड़वा	"
२१.	" दुलारे कुरील, मड़िलवा	"
२२.	" जयराम बुनकर, जरकल	"
२३.	" उजागर पासी, फुफुवार	"
२४.	" रघुवर, बँबुरिहा	"
२५.	" कुहुरूदास कुरील, नौगवाँ	"
२६.	" चेतभगत, औंग कोड़र	"
२७.	" सत्तन, कुड़वा	"
२८	" मानाराम, नर्वल	"
२९.	" मंगलीराम, नर्वल	"
३०	" ननकाप्रसाद पासी, नौगवाँ	"
३१.	" गोवरधनदास, महुवा गाँव	"
३२.	" नन्दूराम, महुवा गाँव	"
३३.	" सुन्दरदास, अलावल खेड़ा	"
३४.	" सौनीराम "	"
३५.	" छोटेलाल, तिलसहरी कलां	"
३६.	" शिवराम, भगवानदीन, नौगवाँ गौतम	"
३७.	" अयोध्याप्रसाद, हाथेगाँव	"
३८.	" भगवानदीन, हाथेगाँव	"
३९.	" नरायन प्रसाद, कोड़र	"
४०.	" अल्हू, फुफुवार	"
४१.	" लाऊ, फुफुवार	"
४२.	" मातादीन, फफुवार	"
४३.	" भदई, हाथेगाँव	"
४४.	" हीरालाल, दीपापुर	"
४५.	" रम्मू, दीपापुर	"

४६.	श्री बैलन, दीपापुर	सदस्य
४७.	" फगुनीराम, खजुरिहा	"
४८.	" सिकदार, खजुरिहा	"
४९.	" नन्हूँ, सलेमपुर	"
५०.	" रामदयाल, हाथीपुर	"
५१.	" चौधरी जगनू, भदरस	"
५२.	" मन्नालाल, भदरस	"
५३.	" रामचरन, भदरस	"
५४.	" सीताराम, महराजपुर	"
५५.	" वंशीलाल, महोली	"
५६.	" शिवचरन, छोटी महोली	"
५७.	" लछिमन, छोटी महोली	"
५८.	" सन्तूराम, छोटी महोली	"
५९.	" प्रभूदयाल, चन्दनपुर	"
६०.	" शिवराम, खुजऊपुर	"
६१.	" रामलाल, खुजऊपुर	"
६२.	" प्यारेलाल, खुजउपुर	"
६३.	" बेटालाल, पुत्तूलाल, पाली बड़ी	"
६४.	" छोटेलाल, बेहटा	"
६५.	" मातादीन, बेहटा	"
६६.	" सुक्खू, जरसरा	"
६७.	" राजाराम, जरसरा	"
६८.	" भरोसा, हथेरुवा	"
६९.	" झल्लर, खरौंटी	"
७०.	" शीतल प्रसाद, सैमसी	"
७१.	" गुलजारी, नयाखेड़ा	"
७२.	" मुरली, रूमा	"
७३.	" रामहाय, सुभौली	"
७४.	" मोहनलाल, मलाथा	"

७५.	श्री मजनू, कमालपुर	सदस्य
७६.	" कंधई, ,,	"
७७	" बाबूदीन ,,	"
७८.	" रामलाल, ऐमा	"
७९.	" भदई राम, बैजाखेड़ा	"
८०.	" हनूमान, कसिगवाँ	"
८१.	" सुम्मन, पिपरगवाँ	"
८२.	" सुन्दरलाल, ,,	"
८३.	" मैकूलाल, ,,	"
८४.	" भोला, कल्यानपुर	"
८५.	" मदारी, कल्यानपुर	"
८६.	" मंगलीराम, करौली	"
८७.	" लछिमन, फुफ्वार	"
८८.	" श्यामलाल कुरील, हिरदेपुर कैंधा	"
८९.	" गुलाबचंद ,, ,,	"
९०.	" तिलोकचंद ,, ,,	"
९१.	" मनियां, शिवपुरी	"
९२.	" महावीर, शिवपुरी	"
९३.	" भगत जी, शिवपुरी	"
९४.	" शिवरतनलाल, ढकुवापुर	"
९५.	" रंगीलाल, ढकुवापुर	"
९६.	" रामनाथ, ढकुवापुर	"
९७.	" बाबूलाल, धरमपुर (चन्दापुरवा)	"
९८.	" घसीटेलाल, धरमपुर (चन्दापुरवा)	"
९९.	" डेलाराम (ज्वालाप्रसाद) बरईगढ़	"
१००.	" दीवान, बरईगढ़	"
१०१.	" देबीप्रसाद-देबीदीन, सिकठिया	"
१०२.	" सुखदेवप्रसाद, बाँबी	"

१०३.	श्री अंगनू प्रसाद, बाँबी	सदस्य
१०४.	" महंगू प्रसाद, बाँबी	"
१०५	" सफ्फड़, मंधना	"
१०६.	" बुद्धूराम, मंधना	"
१०७.	" पंगू, तुसौरा	"
१०८.	" राजाराम, कनवाँपुर	"
१०९.	" ब्रह्मा, कनवाँपुर	"
११०.	" भगवानदीन, बाराधरी	"
१११.	" मंगली, बाराधरी	"
११२.	" सैयादीन, टौंस	"
११३.	" छोटेलाल, मड़िलवा	"
११४.	" बाबूलाल, नरौरा	"
११५.	" भैरम, नरौरा	"
११६.	" नरायन, नरौरा	"
११७.	" महादेव, टिकरिया	"
११८.	" रघुवर, बड़ागाँव	"
११९.	" भैरम, बड़ागाँव	"
१२०.	" मथुरा, बड़ागाँव	"
१२१.	" सोभन, बड़ागाँव	"
१२२.	" हीरालाल, पाल्हेपुर	"
१२३.	" भागीरथ, गौरिया	"
१२४.	" कालीचरन, पूरनपुर	"
१२५.	" ननका, नेवादा	"
१२६.	" पंगूलाल, नेवादा	"
१२७.	" भगवानदीन, नजबगढ़	"
१२८.	" कालीचरन, अखरी	"
१२९.	" केशरीलाल, अखरी	"
१३०.	" गिरधारीदास, अखरी	"

१३१.	श्री गुरूदीन, अखरी	सदस्य
१३२.	" भगवानदीन, चन्दापुरवा	"
१३३.	" भदई, चन्दापुरवा	"
१३४.	" धनपत, मुल्लाखेड़ा	"
१३५.	" गुरदीन, मुल्लाखेड़ा	"
१३६.	" गोधन, मुल्लाखेड़ा	"
१३७.	" भरोसा, हथेरुवा	"

होली नहीं मनायेंगे का निश्चित दिवस

होली का दिन आ गया। नारे लगाती जनता की टोलियाँ ११ बजे ठीक समय पर शिवपुरी आकर जम गयीं। पूर्व निर्धारित श्री जगन्नाथ रामपुर (सरसौल) की अध्यक्षता में सभा प्रारम्भ हुई। सभापति आसन के पास स्टेज पर सर्वश्री गोवरधनदास महुआ गाँव भीमसेन व मास्टर सुखलाल रामपुर, पूर्वीदीन जगदीश पुर पूसूराम धौरी, कामता प्रसाद सेमरझाल, चेतभगत कोड़र (औंग) देवीप्रसाद धमना, गयाप्रसाद कोड़र, कुँवरलाल ढकुवापुर, ननका प्रसाद नौगवाँ गौतम, सुन्दरदास डोमनपुर उपस्थित थे। सर्वप्रथम सभापति जी ने श्री कामता प्रसाद जी को शिवपुरी की स्थिति पर प्रकाश डालने को कहा तत्पश्चात् गयाप्रसाद कुरील ने पहिले की तरह शिवपुरी में होने वाले अमानवीय कार्यों से संक्षेप में अवगत कराया, श्री सभापति ने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि दो साथियों को सुन चुके हैं मेरा जनता तथा स्टेज पर उपस्थित मित्रों से अनुरोध है कि शिवपुरी के लोग होली नहीं मनाएँगे को आकर्षक स्वरूप देने वाले अपने प्रिय पुत्र की अन्तिम विदाई करके आने वाले दुखित भाई ज्वालाप्रसाद कुरील को सुनें जिन्होंने शिवपुरी की जनता के लिये जीवन की बाजी लगा दी है। यह हर किसी के बस की बात नहीं थी।

ज्वाला प्रसाद जी का सम्बोधन

मंच पर बैठे हुए मित्रों, सभा को यह वृहद् रूप देने वाले

साथियो ! बच्चो और बहिनों ।

शिवपुरी में जो कुछ भी जघन्य अन्याय हुए हैं । पुरानी परम्परा का ही एक अंग हैं । हम किसी भी हिंसा की ऐसी शक्ति का सहारा लेकर समाज पर आई विषमता को दूर नहीं कर सकते क्योंकि यह क्षणिक आवेश वाला होता है । हमें पूज्य गांधी, महात्मा, कबीर और रविदास की नीति पर चलना है । इन महात्माओं की अहिंसा का मार्ग द्वेष से परे है हाँ कुछ निहित स्वार्थी जनों ने मानवीयता को छोड़कर दानव वृत्ति अपना ली है, मानव शोषण जिनका आधार बन चुका है । शिवपुरी के मजदूर बंधुवा मजदूर हैं मैं उनसे विनय पूर्वक कहना चाहता हूँ ।

तुम्हारी गगनचुम्बी अट्टालिकाओं में हमारे ही खून का गारा जमा है इनमें तुम्हारे परिवार के हर एक के लिए अलग-अलग सोने, बैठने विश्राम करने के स्थान हैं बाहर से आने वालों के लिये अलग स्वागत कक्ष हैं तुम्हें फलीभूत हों, मुबारक रहें । हमारी कुदृष्टि इसलिये भी उन पर नहीं है कि आखिर वह हमारे ही समाज की वृत्ति हैं और उनमें हमारे ही खून का सम्मिश्रण है । उन्हें हम अक्षुण्ण रखना चाहते हैं । हाँ हम केवल इतना चाहते हैं, बस इतना, कि हमारी फूस की झोपड़ियों और मिट्टी से बने बेडौल घरौंदों पर जिनमें हम हमारा लड़का बहू तथा रिश्तेदार एक ही कोठरे में सोते हैं सिकुड़कर, उनमें कुदृष्टि न डालें, अन्यथा हमारे खून के गर्म होने का प्रभाव उन उच्च अट्टालिकाओं पर पड़ेगा जिससे वह ढह सकती हैं । दिन भर की मेहनत के बाद कुछ आराम कर लेने दें ।

आपके घर की महिलाएँ, बहुएँ, लड़की, लड़के स्वर्णाभूषणों से अलंकृत रहें उत्तरोत्तर उनकी वृद्धि होती रहे, हम आपसे केवल इतना चाहते हैं कि हमारी महिलाओं, बहनों और लड़कियों को कांस के कड़े, काँच की अनगढ़ी चूड़ियाँ पहनकर सँवरने का अवसर देने में मन न मसोसें । हमारी टूटी-फूटी गृहस्थी कसौट की थाली

काठ की कठौती, कटोरियाँ मिट्टी लोहे के गगरे देखकर आपकी आँखें न फूलें।

आप अपने बीमार बच्चों के लिये अच्छे-अच्छे डाक्टर बुलाते हैं। हैलट और उर्सिला अस्पताल ले जाते हैं हमें उनके स्वस्थ होने में ईर्ष्या नहीं खुशी होती है हाँ हमें आप केवल इतना समय दे दें कि हम अपने बीमार डिब्बे के (ब्रैंको निमोनियाँ) रोग में बच्चे की पसुलियों में कुकरौंधा गरम कर थोप आयें और भगवान के नाम से दो बूँद रस उसके हलक में डाल दें, बेगार से इतना समय देने में आँखें न तरेरें। हम आपके बच्चों को खिलाते घुमाते हैं हमें भी अपने बच्चे वैसे ही प्यारे हैं। बीमारी में कराहते और हिचकियाँ भरते जो शायद जीवनान्त की अन्तिम चेतावनी हो ममता नहीं मानती देखने भर की छुट्टी दे दो। अगर बच्चे जीवित न रहे तो सोचो तो भावी बेगार करने वालों की पीढ़ी समाप्त हो जायेगी। बेगार करने वालों की जगह काम कराने के लिए बाहर से मजदूर लाने पड़ेंगे हम चाहते हैं आपकी ड्योढ़ी में काम करते हमारा अन्त हो। बच्चे सयाने होकर आपके काम आ सकें, हाँ कुछ दाना-दुनका से पेट भरते रहें। बँधुआ मजदूरी से बाज आएँ।

आपके जानवर सीमेण्टेड फर्श में बँधते और पुख्तीनादों में चारा पाते हैं। हम में अगर किसी के पास एक बटाई की या अपनी भैंस है जो एक ही खूँटे में बँधी रौंदती रहती है, कच्ची नाँद में चारा पाती है। अधिक वर्षात् और जाड़ों में हमें पैंताने के मचवे में बाँधनी पड़ती है, जिससे ओढ़नी, गुदरी व फटी रजाई पर पड़ी भैंस की पूँछ के उछाल के छीटों से इटावा का छापा मात हो जाता है। देख लें कभी हमारे इस सुघर दयनीय जीवन यापन की दशा को। सम्भव है आपका हृदय दयार्द्र हो जाये और कोई जगह भैंस बाँधने को मिल जाय। हम निरीह हैं असहाय हैं दलित हैं जो कुछ हैं आपके सहारे हैं। हमें दूर करके अशांति के मार्ग को अपनाने को विवश न करें। लगता है इनके कानों में लगी ठट्ठी दुखियारों

की आह न सुन पायेगी और आँख में चढ़ी मद की पट्टी से यह हमारी दुर्दशा न देख पायेंगे। ऐ दुखियारे भाइयो तुम अपने कान और आँख खोलो सुनो और देखो तुम्हारे बच्चों की पसलियाँ झरझरा रही हैं सुनो, सुनो, इनकी आवाज भरभरा रही है जैसे कफ गले में अटका हो, देख रहे हैं इनके चेहरे की झुर्रियाँ। देखो धँसी हुई आँखें जैसे ५० की उम्र पार कर रहे हों। यही हाल रहा तो तुम देख सकोगे इनकी तरुणाई। पत्नियाँ कहें पतियों से हम बेगारी पति के नाम पर मस्तक में सिन्दूर लगाकर सुहाग नहीं मनाएँगी। ओ ! निर्दयी स्वामी बच्चों को सँवारने के लिए बेगार बन्द करो ! न कर पाओ तो इन बच्चों को बेंचकर बाप बनने के दावे से छुटकारा ले लो। बहनों पतियों से यह भी कहो मालिक एक है अब दानवों को मालिक न कहो। हम जान दे सकती हैं, पर बच्चों को भूखा नहीं सुला सकती हैं। माँ बाप को तय करना है परिवार नष्ट करें या इन्सानियत के नाते उनकी रक्षा करें।

बहनों ! भाइयो !

स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी जा रही है उसके लिये स्वस्थ नवयुवक चाहिए देश को शक्ति देने में तुम्हें पीछे नहीं रहना है पर यह तभी होगा जब हम बच्चों के बाप बनने का सही फर्ज अदा करने के लिये बेगार छोड़ने के लिये कटिबद्ध हो जायें अन्यथा बच्चों को छोड़कर निपुत्री बन जायें ईश्वर ऐसी मति किसी की न बने—हाँ हमें जो काम करना है उसे हम ही करेंगे उसके लिये असमान से फरिश्ते उतर कर नहीं आयेंगे।

हाँ फरिश्ते नहीं आयेंगे की आवाज सभा के बीच से आई और देखते-देखते मनियाँ भाई छकलिहा सलूका और गाँठों तक अंगौछा कसे दुर्बल शरीर पेट निकला हुआ बीच में कूद पड़े और कहने लगे बन्द करो लिक्चर उठाओ तिरंगा झण्डा और रहनस चलकर दर्शन सिंह के फाटक को तोड़ दो। रोज-रोज के मरने से एक दिन का ही मरना ठीक है।

शान्ति और अहिंसा का स्वरूप हिंसा में बदलता दीख पड़ा। मैंने कहा शान्त मनियाँ भाई शान्त। हमारा होली न मनाओ आन्दोलन सफल है। अब शिवपुरी में अशान्ति का गढ़ ढह गया है। प्रसन्नता है जिन शिवपुरी के भाई बहनों के होट सिल से गये थे दर्शन सिंह की ज्यादती की बात कहने में उनके दिल के फाटक खुल गये हैं तब अब दर्शन सिंह का फाटक टूटकर ही रहेगा और कई लोग जोश में आकर उभर पड़े—

बच्चों को स्वस्थ रखने का भार पुरुषों पर ही न छोड़ा जाय बहनें भी तय करें कि बेगार करने वाले पति के नाम के सिन्दूर से माँग न भरेंगी, न सुहाग की बिन्दी लगायेंगी।

इसी समय इन्चार्ज थाना महाराजपुर फोर्स के साथ गाँव के पूर्वी किनारे पर जम गये। श्री जगन्नाथ प्रसाद और जमुना नारायण जी को दरोगा से बात करने भेज दिया बात कुछ बढ़ती दीख पड़ी तो जमुना नारायण जी (जो हरिजनों के पीछे सदैव संघर्ष लेते रहते थे उनके पिता तो कई बार हरिजनों के पीछे लाठियों से तोड़े जा चुके थे) व श्री जगन्नाथ प्रसाद आये और कहा आपको चलना होगा मैंने सभा का संचालन श्री सुखलाल मास्टर गया प्रसाद और कामता प्रसाद पर छोड़कर सभा से आज्ञा चाही क्या बोलना बन्द कर मुझे जाना चाहिये ? हाँ फिर आकर बात होगी।

दरोगा–सभा किस लिये हो रही है ?

मैं–सत्य का ज्ञान कराने के लिये।

दरोगा–सभा से इन्हें सत्य बोलना आ जायेगा ?

मैं–हाँ अभी आप देख लेंगे।

दरोगा–मैं जेल यात्री का पुत्र हूँ इनकी शिकायतें सुनूँगा ?

मैं–रात-दिन बेगार में महीनों रहे और चार आने मजदूरी दिन-रात में पाते हैं। भाई की मृत्यु पर भी भाई बेगार से नहीं छोड़ा जाता।

दरोगा-हमारे यहाँ भी मजदूरी का यही दस्तूर है कोहरी-गुड़ भी खाने को मिलता है।

मैं-आप कौन किसी गरीब के लड़के होंगे। सम्पन्न घराने वाला अफसर और कहेगा क्या ? और लाश में भाई न जा सका इसे क्या कहेंगे ?

दरोगा-शायद दर्शन सिंह को मालूम न हुआ हो गाँव के लोग तो लाश ले ही गये होंगे।

मैं-मजदूरी और लाश ले जाने के निर्णय पर कुछ तेज आवाज में कह दिया। यही है तुम्हारा इन्साफ !

इस उत्तर प्रत्युत्तर को सुनकर मनियां भाई से फिर न रहा गया बीच में कूद पड़ा। दरोगा कुछ सोचते तब कहते बड़े घर तुम्हारे जैसे कोई मरे तो कई गाँव के लोग जायें। और हमारा भाई मरे हम भाई की लाश में भी न जायें। दरोगा फोर्स लेकर चल पड़ा। सभा फिर जम गई। सभापति जी ने अन्तिम भाषण के लिए आदेशित किया-

भाइयों !

दलित समाज के लिए यह अदम्य अवसर है कि ६०० वर्षों के बाद हमारा कबीर, रविदास फिर गाँधी के रूप में हमारे बीच आया हमने समझने में देर की। कबीर और गाँधी का समाजवादी दृष्टिकोण, सामाजिक समानता, भक्ति, प्रेम के लिए दृढ़ विचार एक से हैं संक्षेप में ही कहूँगा। कबीर और गाँधी ने चरखे को लेकर उपदेश दिया-ईश्वर और अल्लाह को एक वाणी में ला दिया। समाज में आर्थिक विषमता दूर करने के पीछे ही दोनों का अन्त हुआ मैं फिर कभी विस्तार से बताऊँगा कि भावी सरकार कबीर पंथी सरकार होगी। ऐसी सरकार को दृढ़ बनाने में हमें प्राण प्रण से जुटना होगा तभी हम सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक अधिकार प्राप्त कर सकेंगे।

अब मैं अपने सभी उन मित्रों को जिन्होंने टोलियों का नेतृत्व करके सभा को सफल बनाया है धन्यवाद देता हूँ। भविष्य में हम अपनी मुसीबतें इसी मार्ग से हल करने में समर्थ होंगे।

श्री जमुना नारायण महुआ गाँव उनके साथ आए साथियों श्री जगन्नाथ प्रसाद गया प्रसाद कोड़र कामता प्रसाद सेमरझाल के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस आन्दोलन को प्रारम्भ करने में सहयोग दिया। मुझे अधिक प्रसन्नता हुई है कि साधारण अक्षर ज्ञान रखने वाले श्री गया प्रसाद ने मुझे इस सेवाकार्य में लगाया जनसेवा में मेरे इस भतीजे गयाप्रसाद का मार्ग प्रशस्त होता रहे। जय हिन्द।

श्री जगन्नाथ जी सभापति का अभिभाषण

सर्व श्री ज्वाला प्रसाद, जमुना नारायण, गया प्रसाद, फूलचन्द संखवार गोवरधनदास श्री कामता प्रसाद, श्री सुन्दरदास और दूर दराज गाँव से आये चौधरी व नवजवान साथियों।

मैं सर्व प्रथम श्री गया प्रसाद कोड़र निवासी को धन्यवाद दूँगा कि जिन्होंने शिवपुरी में होने वाले अत्याचारों से परिचित कराकर समाज सुधार का पड़ाव दिखाया।

शिवपुरी होली कांड की गूँज ने पूरे क्षेत्र को आत्मसात कर लिया है यहाँ का शोषित समाज जो जमींदार की दानवीनीति के विरुद्ध ज़बान खोलने में गूँगा हो गया था ज्वाला भाई ने उसका कंठ खोल दिया है जमीन्दार के नौकरों को देखकर जो सहम जाता था आज क्रोधावेश में आकर वह गुलामी का चोंगा उतार फेंकने को उतावला हो उठा है पड़ोसी गाँव होने के नाते मुझसे ज्यादा खुशी और किसको होगी मैं आप सबसे कहना चाहता हूँ कि संगठन की जो बुनियाद पड़ी है उसकी एक भी ईंट उखड़ने न पाए हमें क्षेत्र में श्री जमुना नारायण और उनके पिता श्री रामचन्द्र जी का सहयोग सदैव प्राप्त रहा है कितने ही बार उन पर लाठियों की बौछारें पड़ चुकी हैं पर वह हरिजनों को सहयोग देने में सदैव अडिग रहे हैं। गया प्रसाद का इस कार्य में प्रथम स्थान है नर्वल और महराजपुर क्षेत्र के गाँवों की शोषित जनता ने जिस अपूर्व उत्साह का अल्प समय में जो सहयोग दिया

है वह बधाई के पात्र हैं यदि हम इसी प्रकार से दुखियारों के काम आते रहे तो आतंकवादियों के गढ़ अपने आप ढह जायेंगे अन्त में मैं सभी साथियों के प्रति पुनः आभार व्यक्त करता हूँ। शाम का कार्यक्रम जैसा बताया गया है उसी तरह सम्पूर्ण किया जाय। अब मैं सभा को समाप्त करता हूँ। जयकार के नारों के साथ सभा समाप्त हुई।

दुलहटी के दिन अधिकारियों और जिला कांग्रेस के अध्यक्ष क्षेत्र का दौड़ा कर आन्दोलन का मूल्यांकन करते रहे। शिवपुरी की जनता मोटर की घरघराहट सुनने को कान औटेरे रहती थी गाड़ी आती जानकर गाँव के बाल वृद्ध युवक महिलाएँ सब एकत्र होकर गाड़ी रोक लेते और कहते पहले बात सुन लो तब आगे जावो। दरोगा को व जिम्मेदार जिले के उच्च अधिकारियों और कांग्रेस कमेटी को शिवपुरी में होने वाली दर्शन सिंह की ज्यादती का पूरा-पूरा अहसास होगया। जिलाधीश ने पुलिस अधिकारी भेज कर दर्शन सिंह को कोर्ट में बुलाकर कहा आपने हरिजनों पर ज्यादती की हद करदी है यदि जुल्म ढाना बन्द करके शिवपुरी की हरिजन जनता को संतुष्ट नहीं कर लेते तो आपको अंतिम चेतावनी दी जाती है कि आपकी जमीन्दारी (कोर्ट आफ वाईस) वैधानिक ढंग से समाप्त कर दी जायेगी। हजारों के दिल को दहलाने वाले और पिंडुलियाँ तोड़ने वाले दर्शन सिंह को कप कपी आ गयी बोल न आया मानो गरीबी की आह से चौह दब गयी हो। जिलाधीश ने पुनः दोहराकर कहा तुम्हारे इस नाटक (कप कपी आने) का कुछ प्रभाव हम पर न पड़ेगा लिखित रूप से जनता को संतुष्ट नहीं कर लेते तो तुम्हारी हैसियत साधारण किसान की आज ही बनायी जायेगी।

दर्शन सिंह ने स्टाम्प पर शर्तें लिखकर दीं।

१- हमारा कोई नौकर शिवपुरी नहीं जायेगा और न कोई अमानुसिक कार्य करेगा।

है वह बधाई के पात्र हैं यदि हम इसी प्रकार से दुखियारों के काम आते रहे तो आतंकवादियों के गढ़ अपने आप ढह जायेंगे अन्त में मैं सभी साथियों के प्रति पुनः आभार व्यक्त करता हूँ। शाम का कार्यक्रम जैसा बताया गया है उसी तरह सम्पूर्ण किया जाय। अब मैं सभा को समाप्त करता हूँ। जयकार के नारों के साथ सभा समाप्त हुई।

दुलहटी के दिन अधिकारियों और जिला कांग्रेस के अध्यक्ष क्षेत्र का दौड़ा कर आन्दोलन का मूल्यांकन करते रहे। शिवपुरी की जनता मोटर की घरघराहट सुनने को कान औटेरे रहती थी गाड़ी आती जानकर गाँव के बाल वृद्ध युवक महिलाएँ सब एकत्र होकर गाड़ी रोक लेते और कहते पहले बात सुन लो तब आगे जावो। दरोगा को व जिम्मेदार जिले के उच्च अधिकारियों और कांग्रेस कमेटी को शिवपुरी में होने वाली दर्शन सिंह की ज्यादती का पूरा-पूरा अहसास हो गया। जिलाधीश ने पुलिस अधिकारी भेज कर दर्शन सिंह को कोर्ट में बुलाकर कहा आपने हरिजनों पर ज्यादती की हद करदी है यदि जुल्म ढाना बन्द करके शिवपुरी की हरिजन जनता को संतुष्ट नहीं कर लेते तो आपको अंतिम चेतावनी दी जाती है कि आपकी जमीन्दारी (कोर्ट आफ वाईस) वैधानिक ढंग से समाप्त कर दी जायेगी। हजारों के दिल को दहलाने वाले और पिंडुलियाँ तोड़ने वाले दर्शन सिंह को कप कपी आ गयी बोल न आया मानो गरीबी की आह से चौह दब गयी हो। जिलाधीश ने पुनः दोहराकर कहा तुम्हारे इस नाटक (कप कपी आने) का कुछ प्रभाव हम पर न पड़ेगा लिखित रूप से जनता को संतुष्ट नहीं कर लेते तो तुम्हारी हैसियत साधारण किसान की आज ही बनायी जायेगी।

दर्शन सिंह ने स्टाम्प पर शर्तें लिखकर दीं।

१- हमारा कोई नौकर शिवपुरी नहीं जायेगा और न कोई अमानुसिक कार्य करेगा।

२- चार आने की जगह दिनभर की मजदूरी १।)बीस आना की जा रही है।

३- कोई भी मजदूर रात में रहनस में नहीं रोका जाएगा।

४- जिन नौकरों ने औरतों को मारा और लड़के को टाँगा है उन्हें नौकरी से निकाला जा रहा है।

५- अगर हमारी ओर से कोई ज्यादती हो और किसी भी सूत्र से जिलाधीश जान जायँ तो जमीन्दारी समाप्त करने के आदेश को बहाल रखें।

जनता फैसला सुनने में झुकी पड़ी थी यह निर्णय जैसे ही जिलाधीश जी ने सुनाया "जिलाधीश की जय हो" कांग्रेस की जय हो के नारे से कचहरी गूँज उठी। जिलाधीश ने कार्यकर्ता वर्ग से कहा कि आपकी मेहनत सफल है और कुछ चाहते हो क्या ? आपके फैसले से हम सब संतुष्ट हैं आपकी जय हो।

हरिजन सम्मेलन कैंधा-कानपुर

श्री बाबूलाल कुरील संयोजक हरिजन उप समिति जिला कांग्रेस कमेटी कानपुर ने ग्राम कैंधा में एक वृहद हरिजन सम्मेलन का आयोजन श्री मुरलीधर कुरील विधायक की अध्यक्षता में रखा। सर्व प्रथम स्वागत भाषण के पश्चात् श्री बेनी सिंह अवस्थी सभापति जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा उद्घाटन होना था। सभापति जी ने श्री सिंह से सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए अनुरोध किया।

श्री बेनी सिंह का उद्घाटन भाषण

सम्बोधन भाषण को प्रारम्भ करते हुए अवस्थी जी ने श्री बाबूलाल कुरील को बधाई दी और सभापति जी व श्री चौधरी रामगोपाल यादव को सम्बोधित करते हुए कहा इस प्रकार के सम्मेलनों से जनता को कांग्रेस की सही नीतियों का बोध होगा तथा कांग्रेस संगठन मजबूत होगा व हरिजनों को शक्ति मिलेगी। गांधी जी ने हरिजन कार्य को इसलिए प्रमुखता दी है कि दबी हुई कौमें जाग्रत हों और वह अपने अन्दर से हीन भावना का परित्याग करें विरोधियों के इस प्रचार से हरिजनों और आम जनता को सावधान रहना चाहिए कि गांधी जी के लिए कहा जाता है तुम्हारे कोई एक चाटा मारे तो दूसरी कनपटी भी उसकी ओर कर दो इस अनर्गल और असत्य प्रचार से सजग रहना है। गांधी जी सत्य अहिंसा के अडिग पुजारी थे मैं गांधी जी की दृढ़ता की एक मिसाल आपके सामने रख रहा हूँ।

१४ अगस्त ४७ ई० को जब आजादी मिली तो

बंगाल के नोआ खाली में हिन्दू मुसलिम खून की होली खेलने लगे भारत माता के सपूतों का खून बहने लगा। उस समय एक कांग्रेसी ने गाँधी जी से आकर कहा बापू नोआखाली में बड़ी ज्यादती हो रही है वहाँ हिन्दू मुस्लिम एक दूसरे की लड़की को बाप के सामने खड़ी करके उसकी अस्मत बिगाड़ते हैं और फिर उसका कत्ल कर देते हैं गाँधी जी ने क्रोध में आकर कहा तू यह सब अन्याय खड़े देखता रहा उसका प्रतिकार न करके मेरे को बताने के लिए जिन्दा यहाँ आया है। गाँधीजी का यह कहना क्या अर्थ रखता है इसका भाव था जहाँ अन्याय हो उसे शान्त करने तथा उसके प्रतिकार करने में अपनी जान दे दो पर अन्याय को देखकर चुप रहना कायरता है। गाँधी बिना सरकारी मदद लिए नोआखाली में अकेले गये और हिन्दू मुस्लिमों के बीच उन्हें सतमार्ग दिखाने में जुट गये दिन को प्रवचन और शाम को हिन्दू मुसलमान के बीच संध्या वंदना करते थे गाँधी जी, कबीर नानक, मुहम्मद साहब, मीरा ईसामसीह के भजन उपदेश करते नमाज़ पढ़ने में हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई सबको साथ लेते ईसामसीह नानक की वन्दना भजन करते ईश्वर अल्लाह एकहि नाम सबको सम्मति दे भगवान की धुन के बाद रघुपति-राघव राजाराम पतित पावन सीताराम की ध्वनि एक साथ कहलाते इसमें बड़े-२ मुल्लाओं की दाढ़ियाँ रघुपति राघव राजाराम कहने में हिल जातीं जैसे संध्योपासना में सब जाति के सब मानवीय अवस्था में आ जाते। मैं जानना चाहता हूँ हुआ है कोई ऐसा और संत जो सिख इसाई हिन्दू मुसलमान सबको राम धुन नानक के भजन और नमाज में एक साथ जाति भेद भूलकर एक सूत्र में बाँध देता। यह विलक्षण शक्ति गाँधी जी में थी उनकी सत्य अहिंसा का प्रभाव था। इतना ही नहीं गाँधी जी ने मनु स्मृति के स्थान पर नया संविधान बनाने के लिए कमेटी बनाई उसमें विधिवेत्ता बाबा साहब अम्बेदकर को विधि मंत्री बनाया। पौराणिक मनु स्मृति

जिसमें रूढ़िवादी परम्परा की भरमार है मानव विषमता का जहर घुला हुआ है उसको संशोधित कर मानववादी संविधान बनाने केलिए अम्बेदकर साहब को विधि मंत्री बनाया। अम्बेदकर साहब ने जो विधान कमेटी में बैठकर बनाया है उसमें अनुसूचित जाति जन-जाति को मानव के समान अधिकार देकर उनके साथ अन्याय करने की नीति को प्रतिबंधित करा दिया है अब हरिजनों को अपने अन्दर द्वेष और हीन भावना छोड़ना चाहिए शिक्षा संगठन और औद्योगिक प्रगति के अलभ्य अवसर विधान में दिए गए हैं। इस नीति पर चलकर हमारे भूखे बच्चे जिनके गाल चिपके आँखें गड्ढे में धँसी हैं उभरेंगी। हाँ रूढ़िगत परम्पराएँ जहाँ सवर्णों को जकड़े हैं वहीं हरिजन भी इनमें बिंधा हुआ है उसे भी पुरानी परम्पराओं से बाहर आकर मानवता का स्थान ग्रहण करना होगा इससे अच्छा अवसर उसे और कब मिलेगा। समय आ गया है देशवासी पुरानी गल्तियों को भूलें और उनसे शिक्षा लें जिससे देश फिर गुलाम न हो देश को गुलामी से तभी बचाया जा सकता है जब ऊँच नीच अमीर गरीब के भेदभाव से बचा जा सके। मैं फिर तमाम श्रोता गणों और नेताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हुआ सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

चौधरी रामगोपाल सिंह का मुख्य भाषण

माननीय अध्यक्ष एवं संयोजक बाबूलाल कुरील जी माननीय श्री बेनी सिंह जी अध्यक्ष जिला काँग्रेस कमेटी कानपुर हरिजन सम्मेलन की उपस्थिति को देखकर मुझे सन्तोष हुआ और लगता है कि यह गिरा हुआ समाज उठने के प्रयास में है इसमें सन्देह नहीं है कि मनुस्मृति में हरिजन समाज को मानवीय स्थान नहीं दिया।

मैं हरिजन भाइयों से कहना चाहता हूँ कि मनुस्मृति की ब्राह्मणवादी नीति से छुटकारा पाने के लिए हमें आपका सहयोग चाहिए हमारे दोनों हाथ आपकी ओर बढ़े हुए हैं आओ सीने से

सीना मिलाकर इनकी नीति का खुलकर विरोध करें। यों तो हम पड़ोसी होने के नाते आपको सहयोग देते रहें हैं अब खुलकर मैदान में आना है संकोच को छोड़कर समाज के उत्थान में जुटना है गाँधी जी की उदार नीति की अवस्थी जी ने प्रशंसा की है परन्तु आजादी के बाद हम उत्थान की ओर नहीं बढ़ सके। हरिजन भाइयों को ब्राह्मणवादी नीति से सजग रहना चाहिए और हमारे साथ आकर तन मन से इनका विरोध करना चाहिए। अवस्थी जी ने अपने भाषण में कोई ऐसी चीज नहीं दी है जिससे हम कांग्रेस पर विश्वास कर सकें। हम आपको समय-समय पर बताता रहा हूँ और आगे आने वाले समय में फिर बताऊँगा तथा इस सम्मेलन के अलावा हम एक और हरिजन सम्मेलन करके आपको बताऊँगा। इन्हीं शब्दों के साथ श्री सभापति, व उद्घाटन कर्ता एवं दलित वर्ग संघ के अध्यक्ष श्री ज्वाला प्रसाद कुरील को धन्यवाद देता हुआ भाषण समाप्त करता हूँ।

हरिजन सम्मेलन कैंधा का मेरा भाषण

अवस्थी जी ने मानव समाज में व्याप्त विषमता पर प्रकाश नहीं डाला। सम्भवता अवस्थी जी को यादव जी ने नहीं सुना, अवस्थी जी ने प्रखर शब्दों से सवर्णों द्वारा बरती जाने वाली नीति की भर्त्सना की है और यह भी कहा है कि पुरानी गल्तियों से शिक्षा लेनी चाहिए। चौधरी साहब ने मनुस्मृति के श्लोकों पर विस्तार से प्रकाश डाला जिनसे इस शूद्र समाज को मानवीय अधिकारों से वंचित किया गया है और उन्हें अत्यन्त घृणित व्यवहार द्वारा समाज से गिराया गया है। मैं चौधरी साहब के विचारों का स्वागत करता हूँ, और मानता हूँ कि उन ब्राह्मणवाद के कथनों की विषबेलि आज भी लहरा रही है। लगता है वह लहर अभी किनारा नहीं पायेगी मुझे प्रसन्नता है कि चौधरी साहब ने इस सत्य से मुख नहीं मोड़ा कि वह भी ब्राह्मण वाद की सामाजिक विषमता के झाँसे में आ फँसे हैं। मैं

चौधरी साहब से अनुरोध करूँगा कि वह यह भी स्वीकार करें कि हरिजन सवर्ण और पिछड़ी जाति के पाटों के बीच बेरहमी से पीसा जा रहा है। यह दोनों ही वर्ग शूद्रों का शोषण करने में दक्ष एवं कुशल हैं। कहना न होगा हरिजन सेवा का दम भर रहे हैं मैं इस सम्बन्ध में इनता ही संकेत करूँगा यह दोनों वर्ग शूद्र हरिजनों का सामाजिक व आर्थिक शोषण करके अपनी शक्ति बढ़ाते रहे हैं इन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि शूद्रों का शोषण बँधुवा मजदूर के रूप में करते हुए सदियाँ बीत गईं और वह इनकी सेवा करते हुए पतन के गहरे गर्त में पहुँच गया आज भी उसी प्रकार से उससे सेवा ली जा रही है। आश्चर्य होता है जब हमारे शोषक मालिक हमारी सेवा करने का मात्र भाषण देते हैं सेवक की परिभाषा का इन्हें कतई बोध नहीं है। अगर वास्तव में इन्हें सेवक की परिभाषा जाननी है तो यह हमारे शिष्य बनें हम सदियों तक सेवा करने के अनुभव से सेवा करने का ज्ञान दे सकते हैं।

हम फिर अपने सवर्ण तथा बैंकवर्ड वर्ग के मालिकों से कहना चाहते हैं कि सेवक बनने की बात कहकर हमें दृग्भ्रमित न करें सेवक तो मालिक के लिए समर्पित होता है वह अपने परिवार की चिन्ता से मुक्त होता है कहा गया है, "सबसे सेवक धर्म कठोरा" अस्तु सेवक बनने के स्वप्न को भूल जांय। हम घृणित से घृणित सेवा कर हिन्दू बने हुए हैं क्षमा करें आप भी हिंदू हैं पर हमारी जैसी सेवा करने के भार को एक दिन भी वहन नहीं कर सकते हटात कह उठेंगे हम ऐसे हिंदू नहीं हैं अब मैं आप सबका ध्यान मुख्य वक्ता महोदय के उस उदार भाषण की ओर ले चलना चाहता हूँ जिसमें उन्होंने हरिजनों से अपील की है कि हमारे दोनों हाथ आप से मिलने के लिये बढ़े हैं आप भी अपने हाथ बढ़ाएँ, दोनों हृदय से हृदय मिलाकर संगठित हों और इस ब्राह्मणवादी नीति का विरोध करें। इस स्थान पर एक शेर आपके सामने पेश करता हूँ। और फरमायें-

आगे किसी के क्या करें, दस्ते तमा दराज,
यह हाथ सुन हो गया है सिरहाने धरे-धरे।

हम अपने लालच के हाथ किसके आगे फैलाएँ हाथ फैल नहीं रहे क्योंकि दिन भर श्रम करने के बाद रात में यह हाथ ही तो तकिया का काम करते हैं जिससे सिकुड़ गये हैं और फिर हमें यह भी तो संदेह है कि हम शोषित पीड़ित तिरस्कृत हरिजनों के लिये हृदय है भी आपके पास वह घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, हिंसा निहित स्वार्थ से भरा है। हमारे मात्र हृदय से तो संगठन नहीं हो सकेगा। हाँ आपसे अधिक हमारे मन में ब्राह्मणवादी नीति के विरोध के लिये उत्सुकता है। "जो अति आतप व्याकुल होई, तरु साया सुख जाने सोई।" हम भुक्त-भोगी हैं, कूलर की ठण्डी हवा में रहने वालों को पेड़ की साया के सुख का अनुभव नहीं हो सकता लू की तपन में काम करने वाला ही पेड़ की साया का सुख समझ सकता है अतः अब हमें स्वयं संगठित होना होगा। बैसाखी के सहारे अधिक न चल सकेंगे।

भाइयों हम जिस ब्राह्मणवादी नीति के विरोधी हैं उसके आवरण को धारण करने वाले हमारे हितू नहीं हो सकते हैं। इस विषय में मैं श्री बेनी सिंह जी की सराहना किये बिना न रहूँगा यह ब्राह्मण के चिन्ह जनेऊ का अर्से से परित्याग किये हुए हैं। अतः उनसे निकटता सम्भव है। यादव जी से निवेदन करूँगा कि वह भी इस जनेऊ के सम्बन्ध में विचार करें हम हरिजनों का प्रबल विरोधी तो यह जनेऊ ही है। आप सशक्त हैं संभव है हर एक नहीं पहन सकता।

बात सन् ३३ की है मैं बरई की बाजार छोटी कटई बेचने ले गया था कबीर पंथी (हीरा-कंठी) गले में पहिने था। एक ठाकुर साहब वह गले में पड़ा तागा देखकर पहिले ऊपर से नीचे तक घूरते रहे फिर त्योरी बदल कर बोले तुम जनेउ पहिने हो? कोई अच्छा काम है क्या? यह तो इंसान से इंसान को अलग

करता है। मैं जनेऊ क्यों पहिनूँ। ठाकुर साहब घूरते हुये चल पड़े मैंने कहा क्या खूब, अब मोटा तागा भी न डालूँगा तब से मुझे जनेऊ से और घृणा हो गयी।

भाइयों यह बात तो छिपी नहीं है कि यह दलित समाज हिन्दू धर्म से उपेक्षित है कई प्रदेश हिन्दुत्व से शून्य हो गये। हिन्दू होकर भी सदियों से हिन्दुओं के मंदिर, देवी, देवताओं, तालाब, गंगा तथा नदियों से भी उपेक्षित रहा है। मुस्लिम शासन काल की बात है ६०० वर्ष हुये होंगे मजहब की संख्या बढ़ाने के लिये मुल्लाओं को अच्छा मौका हाथ आया और शूद्रों का धर्म परिवर्तन होने लगा इसके पहिले इस शूद्र समाज को अपनाने वाला कोई नहीं हुआ था इसी संक्रांति काल में महात्मा कबीर व रविदास का अभ्युदय हुआ और मानव समाज के पीड़ित वर्ग पर उनकी दृष्टि गई हिन्दू धर्म के पाखण्ड और रूढ़ियों से महात्मा कबीर ने हिन्दुओं को सचेत किया, हिन्दू धर्म की कमियों को दर्शाया साथ ही इस्लाम धर्म की गलत नीतियों पर तीखा प्रहार किया।

महात्मा कबीर ने कहा--
मंदिर में तो बुत धरे हैं, मस्जिद सफम सफाई है।
दिल दरगाह में दरशे एकदम नूर खुदाई है॥

मंदिर-मस्जिद, मूर्तियों की आराधना कल्पित ढोंग बताया और कहा "पत्थर पूजे जो हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़" बात समझ में आई और सरल कबीर पंथ की ओर लोग आकर्षित हुए धर्म परिवर्तन का रास्ता बन्द हो गया। हरिजन ही नहीं देश ऋणी है महात्मा कबीर का अन्यथा आज हमारी गिनती हिन्दुओं में न होती और पाकिस्तान का दायरा और बढ़ गया होता।

गाँधी जी के प्रयास आगे ले जा रहे हैं। परंतु गाँधी जी से पहिले समाजवाद की सही दिशा महात्मा कबीर ने दी।

कबिरा घास न मीजिये जो पाएँ तर होय,
कबहुँक उड़ि आँखिन परे पीर घनेरी होय।

स्पष्ट है कि तिनके रूपी गरीबों को न सताओ। यह उड़कर आँखों में पड़कर किरकिरी पैदा कर देंगे। गाँधी जी ने समाजवाद की हवा चला दी है हम तिनकों को जमीन से उठने का अवसर मिला है अतः हमें घूर कर चलने वाले सावधान हो जायँ कहीं हमारे जैसे तिनके आँख में घुस कर आँखों को पीड़ित करके अंतिम स्थिति में ले जा सकते हैं।

हम इन संतों का पंथ (मार्ग) अपनाये हुए हैं चाहते हैं हरिजनों से प्रेम लीला का ढोंग न रचा जाय। देश पर संकट आने पर हम कभी लांछनित नहीं हुए युगों की गुलामी से चिपटे हुये हिन्दू बने हैं रहम करें, बड़े भाई अमानवीय ढंग छोड़कर हार्दिक सहयोग करें जिससे इस समाज को शिक्षा उद्योग के अवसर हाथ लग सकें।

मानवीय अधिकारों से च्युत हुये अधिक समय बीत चुका है उचकने का अवसर शासन तथा नेताओं ने दिया है फिर भी राजनैतिक स्पर्धा से हम कुचले जा रहे हैं अंग्रेजों ने जो जमींदारी प्रथा बनायी थी उसके उन्मूलन होने पर भी आततायी जमींदार के रवैये में कोई परिवर्तन नहीं आ रहा है और वह अभी भी बँधुआ मजदूरों और गरीबों के कंधों पर आड़ा-गोड़ी (कुण्डली) लगाये बैठे हैं और उचकने का अवसर नहीं देते हैं। दलित समाज इस टोह में है कि उसे अँगड़ाई लेने का अवसर मिले और कंधों पर बैठे हुये लोग मुहभरा गिर जायें। हम उन्हें क्षति पहुँचाना नहीं चाहते हैं। गाँधी और कबीर तथा रविदास की नीति पर चल-कर उन्हें सचेत कर रहे हैं। मैंने जो कुछ कहा है यदि किसी को अनुचित लगा हो तो मुझे क्षमा करें अंत में मैं माननीय बेनीसिंह जी और श्री रामगोपाल सिंह श्री बाबूलाल कुरील व अध्यक्ष महोदय को आभार प्रकट करता हूँ।

हरिजन छात्रावास का निरीक्षण

८ मई १९६९ को बाबा लक्ष्मण दास छात्रावास का निरीक्षण किया जो कस्बे के अंदर सड़क के ऊपर स्थित है। यह छात्रावास यहाँ पर कई वर्षों से चल रहा है और विभाग द्वारा अभी तक इसको अनावर्तक सहायता ही दी जाती रही है।

छात्रावास देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि इस संस्था का अपना निजी भवन है। बाबा लक्ष्मण दास यहाँ के सम्मानित साधु थे जिनके नाम पर यह छात्रावास स्थापित है। यह एक पंजीकृत संस्था है और छात्रावास का प्रबंध संस्था के प्रबंधक द्वारा संतोषजनक ढंग से किया जाता है। छात्रावास का अहाता काफी बड़ा है और उसके चारों ओर पक्की चहार दीवारी है। अहाते के अंदर संस्था का निजी कुँआ है। अभी तक ५-६ कमरे बन पाये हैं, किंतु निकट भविष्य में संस्था अपने पैसों से छात्रावास के लिए भोजनालय और पुस्तकालय बनाने जा रही है। मैंने प्रबन्धक महोदय श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, एम. एल. ए. से अनुरोध किया है कि वह गर्मी की छुट्टी में छात्रावास के लिए भोजनालय तैयार कर सके तो बड़ा अच्छा होगा। श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, एम. एल. ए. इस छात्रावास के प्रमुख संस्थापकों में से हैं और उनके पथ-प्रदर्शन में छात्रावास निरन्तर उन्नति कर रहा है। मुझे आशा है कि भविष्य में इस छात्रावास की अपनी बड़ी अच्छी इमारत हो जायेगी और यह छात्रावास प्रदेश की एक बड़ी अच्छी संस्था बन सकेगी।

छात्रावास के अंदर कुछ हरिजन छात्र भी मिले। अधिकांश छात्र परीक्षा समाप्ति पर अपने घर चले गये हैं। छात्रावास के प्रबन्धक और अधिक कमरे बनाने जा रहे हैं जिससे कि अधिक

हरिजन छात्र यहाँ रह सकें। अभी तक भवन निर्माण का काम दान द्वारा प्राप्त धनराशि से किया जाता रहा। निश्चय ही यह निर्माण कार्य बड़ा प्रशंसनीय है।

इस संस्था को देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ क्योंकि प्रदेश में इस प्रकार की बहुत कम संस्थायें हैं जिन्होंने दान द्वारा प्राप्त पैसे से इस प्रकार का भवन निर्माण किया। छात्रावास के लिये भूमि ग्राम पंचायत द्वारा प्राप्त हुई है।

इस छात्रावास को पर्याप्त आवर्तक अनुदान मिलना चाहिए उप निदेशक (शिक्षा) तुरन्त इसकी व्यवस्था करेंगे और जिला हरिजन तथा समाज कल्याण अधिकारी, कानपुर इस ओर विशेष ध्यान दें जिससे कि यह संस्था हरिजन छात्रों की अधिक से अधिक सेवा कर सके और प्रदेश की एक बड़ी अच्छी संस्था बन सके।

(रामदास सोनकर)
निदेशक,
हरिजन तथा समाज कल्याण उ. प्र.
दिनांक ८-५-१९६९

प्रतिलिपि

१. उप निदेशक, शिक्षा हरिजन तथा समाज कल्याण उ. प्र. लखनउ।
२. जिला हरिजन तथा समाज कल्याण अधिकारी, कानपुर।
३. श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, एम. एल. ए., प्रबन्धक बाबा लक्ष्मण दास छात्रावास कानपुर।

छात्रावास के लिए जगह नहीं थी। सिहारी के प्रधान गुप्ता जी जगह देने को तैयार नहीं थे। घाटमपुर के सभापति श्री इलाही बक्श थे मैंने स्वयं उनसे अर्ज की कि आकबत के लिये एक ऐसी निशानी छोड़ जाओ जिसमें हरिजन और गरीब बच्चे पढ़ सकें। यह बात श्री इलाही बक्श ने मान ली और यह जगह उनके ही पास निकली जिसमें यह छात्रावास बना है।

जिला राष्ट्रीय भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ, कानपुर

प्रिय बन्धु,

जिले में भूमि वितरण कार्य सम्पन्न हो चुका है। भूमि आवंटन की गड़बड़ियों की जाँच करने की जिम्मेदारी प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं पर डाली है अतः निम्नांकित विषयों पर विचार करने के लिए ११ मार्च ७६ को १ बजे दिन में बैठक का आयोजन किया गया है। आपकी उपस्थिति आवश्यक एवं प्रार्थनीय है।

कार्यवाही प्रारम्भ होने के प्रथम जिला काँग्रेस कमेटी के मनोनीत पदाधिकारियों का स्वागत होगा।

बैठक के विचारणीय विषय

पिछली कार्यवाही ८-१०-७५ की पुष्टि-सर्वसम्मति से

(१) भूमि वितरण हेतु पात्र व्यक्तियों की सूची में सही व्यक्तियों को न लाना।

(२) अच्छी भूमि बचाकर नकारा भूमि का वितरण करना।

(३) तालाब, खलिहान के नाम दर्ज भूमि पर जिस पर खेती हो रही है की कागजात दुरस्ती न करके आवंटन से बचाना।

(४) भूमि वितरण सूची में फेर बदल करना और वितरण सम्बन्धी शिकायतों पर अधिकारियों द्वारा ध्यान न देना।

(५) अनाधिकार कब्जे की भूमि में कब्जा न देना तथा आवंटित भूमि पर दखल न मिलना।

(६) अनाधिकार जोतदारों पर मुकदमा चलाकर मुकदमा वापस लेकर जमीन दे देना।

(७) स्कूल तथा संस्था के नाम पर भूमि बचा लेना।

(८) स्कूल तथा संस्थाओं पर लगी गलत तरीके की भूमि की बेदखली न कराना।

(९) जमींदारी विनाश के बाद सम्पन्न किसानों को किये गये पट्टों की बेदखली कार्यवाही प्रारम्भ न होना।

(१०) ग्राम प्रधान तथा सदस्यों को भूमि आवंटन करने में अधिकारी से स्वीकृति न लेकर अनियमित तौर से पट्टे करना।

(११) जोती हुई भूमि पर हरिजन भूमिहीन को अधिकार न देना।

(१२) अदालत क्षेत्र के अन्तर्गत भूमि के अभाव वाले गाँवों के भूमिहीन मजदूरों को भूमि वाले गाँव से भूमि दिलाना।

नोट—उक्त विषय कार्यालय में प्राप्त प्रार्थना पत्रों के आधार पर रखे गये हैं। आप इन विषयों पर तथा यदि और अन्य कोई समस्यायें हों बैठक में विचार हेतु प्रेषित करें।

आपका भाई

रामऔतार भदौरिया
(एम. एल. ए.)

देवशरण शुक्ल
(महामन्त्री)
जि० काँग्रेस कमेटी कानपुर

राधेश्याम
(सदस्य)

मुरलीधर कुरील
(सदस्य)

ज्वालाप्रसाद कुरील
(सयोजक)

जि० भूमि आवंटन समिति, भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ कानपुर

श्री मुरलीधर कुरील

जाति तोड़ो सम्मेलन बेवर, जि. मैनपुरी में बाबूजी का भाषण

स्वागत समिति के अध्यक्ष, उपस्थित नेतागण, देवियों और सज्जनों ! मुझे बड़ी खुशी हुई कि आपके बीच में आया। पिछले कई दिन से जन सभाओं में बोल रहा हूँ। परसों हरियाणा में था, तावड़ में कल भी हरियाणा में ही था और इसी तरह तीन दिन से अधिक हो गये। आज मैं यहाँ आया। आप इतनी तादाद में बैठे हैं। अपने स्वागत भाषण में सुन्दरलाल ने एक मौलिक बात कही थी कि आर्यों के भारत में आने से पहले हमारा समाज एक विकसित समाज था। अभी जो खुदाइयाँ हुई हैं, मोहन जोदड़ों हड़प्पा में उनसे यह साबित हुआ है कि आर्यों के भारत आने से पहले भारत के मूल निवासियों की सभ्यता बहुत बढ़ी हुई थी। मैंने पहले भी सुन्दरलाल से कहा था आज भी कहता हूँ कि जब हमारी सभ्यता इतनी बढ़ी हुई थी तो हमारा कोई धर्म भी होगा और वह धर्म आर्यों के धर्म से पुराना होगा। चाहे वह वैदिक धर्म हो चाहे श्रमण धर्म हो। वैदिक धर्म और श्रमण धर्म दोनों ही आर्य धर्म हैं। हमारा धर्म दोनों से पुराना है। हमारा धर्म कर्म साधना है। हमारे इस धर्म पर ही दोनों ठहरे हुये हैं। वैदिक धर्म और श्रमण धर्म दोनों धर्मों का मूल सिद्धान्त सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक कर्म का है वैदिक और श्रमण दोनों में पहिले दर्शन तब ज्ञान और अन्त में कर्म। यहाँ पहली सीढ़ी कर्म की नहीं है। लेकिन हमारे मूल धर्म, तन्त्र की साधना ऐसी है कि उसमें पहिले साधना (कर्म), कर्म से ज्ञान और अन्त में दर्शन।

श्री जगजीवनराम कुरील के साथ विचार करते हुये ज्वाला प्रसाद कुरील

दर्शन ज्ञान और कर्म एक तरफ और कर्म ज्ञान और दर्शन दूसरी तरफ। दर्शन का निर्माण किसी ने कर दिया उसके प्रकाश में तुम ज्ञान अर्जन करो और तब कर्म करो। मूलबासियों की हमारी परम्परा में सरल तरीका है कि साधना करो, ज्ञान बढ़ेगा ज्ञान

बढ़ेगा तो दर्शन का निर्माण हो जायेगा। दर्शन से साक्षात्कार होना तो नहीं है। नहीं मिले तो कोई हर्ज नहीं। प्राचीन इतिहास को, वैदिक वांङमय को थोड़ा-बहुत पढ़ा। बराबर यह सोचता रहा हूँ कि केवल यह कह देने से तो काम नहीं चल सकता कि मूल भारतवासी हम हैं। हमको यह बताना होगा कि हमारा धर्म यह था। हमारी संस्कृति यह थी। हमारी सामाजिक शक्ल यह थी, हमारी सामाजिक व्यवस्था यह थी। हमारी परम्परा में, संतों की परम्परा में हम कर्म को महत्त्व देते हैं, दर्शन को महत्त्व नहीं देते। दर्शन तो दिमागी कसरत कराने वाली चीज है, आदमी को चक्कर में डालने वाली चीज है। हमारा कर्म प्रधान धर्म रहा है। कर्म अगर नहीं हो तो ज्ञान और दर्शन दोनों बेकार हो जाते हैं।

विषमता नहीं थी हमारे में, सभी बरावर थे। जाति मिटाने की बात, जाति मिटाना होगा तो हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था पर सीधी चोट करनी होगी। यह बात याद रखिये। हिन्दू समाज का व्यक्ति कहीं चला जाये किसी दूसरे धर्म को स्वीकार कर ले अपनी जाति को छोड़कर नहीं जाता। उसकी जाति उसके साथ चिपटी रहती है। मुसलमान बन जाये तो जाति पीछे लगी रहती है। ईसाई बन जाये तो जाति पीछे लगी रहती है। डाक्टर अम्बेडकर ऐसा मानते थे कि हिन्दू धर्म को छोड़ देने पर कालान्तर में जाति प्रथा से पिंड छूट जायेगा। इसलिए उन्होंने हिन्दू धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म को स्वीकार किया पर आज तक महाराष्ट्र में सिवाय उनकी अपनी महार जाति के अतिरिक्त किसी भी दूसरी अनुसूचित जाति के लोगों ने सामूहिक रूप से बौद्ध धर्म को स्वीकार नहीं किया। वहाँ के चमारों से पूछो तो वे कहते हैं कि हम बौद्ध नहीं बने। माँग बौद्ध नहीं बने, वाल्मीकि बौद्ध नहीं बने। महारों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया पर वे आमतौर से अपने को महार ही मानते हैं और महार ही कहते और लिखते हैं। तो यह परिवर्तन करके हम जा कहाँ रहे हैं। अभी एक लेख निकला था इंडियन एक्सप्रेस में।

महाराष्ट्र के दलित आंदोलन के बारे में और उसमें यह कहा गया है कि महाराष्ट्र में बौद्ध का अर्थ है महार और उत्तर प्रदेश में बौद्ध का माने चमारों की एक दो उप जातियाँ अनुसूचित जाति के लोग ईसाई बने तो अछूत ईसाई कहलाये, सिख बने तो रामदासिया और मजहबी सिख जाने जाते हैं अर्थात् अछूतपना सूचक उपाधियाँ उनके साथ लगी रहीं इसीलिये मैंने डा. अम्बेडकर साहब से कहा था कि धर्म परिवर्तन में हमारी मुक्ति नहीं है। हमारी मुक्ति तो एक ही चीज में है अर्थात् हिन्दू समाज का बुनियादी परिवर्तन करके नया समाज बनाना। जब तक नया समाज नहीं बनाते तब तक किसी समाज में हमारी मुक्ति नहीं है। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को प्रभावित और कलुषित किया है। आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि चार सौ बरस के पहले जो ईसाई हो गये हैं उनकी भी जाति आज तक कायम है इंदिरा काँग्रेस के एक प्रतिष्ठित नेता जो मेरे पुराने साथी हैं, बहुत विद्वान हैं, अमेरिका के एक विश्वविद्यालय से डाक्टर की उपाधि लिये हैं एक दिन कहने लगे बाबूजी हमारे पुरखे चार सौ बरस पहले ईसाई बने थे लेकिन आज भी हम मछुआ ही समझे जाते हैं। अभी मैं तावड़ गया था हरियाणा में। वहाँ मेवई लोग हैं। सैकड़ों बरसों पहले मुगलों के जमाने में राजपूत से मुसलमान बने थे। लेकिन आज भी उनका विवाह सम्बन्ध राजपूत से मुसलमान बने हुये परिवारों में ही होता है। १९८२ में चुनाव हो रहा था हरियाणा असेम्बली का। कुछ मुसलमान हमारे पास टिकट लेने के लिये आये। एक मौलवी साहब हमारे कान में कहने लगे, हम लोग तुम्हारी ही जाति के हैं। उसके खानदान को मुसलमान बने अढ़ाई सौ बरस हुये थे।

हम जिस मुक्ति को लाना चाहते हैं वह सिर्फ अनुसूचित जातियों के लिये नहीं बलिक सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए, सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिये। मैंने ठाकुरों से कहा कि आप किस भ्रम में पड़े हैं। आप भी तो ब्राह्मण के नीचे हैं। ठाकुर ब्राह्मण से छोटे हैं।

यदि हाई कोर्ट का चपरासी एक ब्राह्मण है तो वह समझता है कि हाई कोर्ट का ठाकुर जज हमसे नीचे स्तर का है। इसको कैसे मिटायेंगे और जब तक इसको नहीं मिटाते हैं तब तक भारतीय समाज से जन्म पर आधारित छोटाई, बड़ाई कैसे मिट सकती है, इस समाज को मुक्ति कैसे मिल सकती है। तो मैंने ठाकुरों से कहा कि मैं आपकी भी लड़ाई लड़ रहा हूँ। मेरा साथ दीजिये।

आर्य जब यहाँ आये तो वर्ण व्यवस्था अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी। उस समय सिर्फ तीन ही वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। वर्ण व्यवस्था कायम होने पर ब्राह्मणों के वर्चस्व के विरुद्ध बड़ा संघर्ष हुआ। राम ने ब्राह्मणसाही के खिलाफ यहाँ पहला संघर्ष छेड़ा था और अयोध्या, बक्सर और जनकपुर अर्थात् दशरथ, विश्वामित्र और जनक की धुरी कायम हो गई थी। यह क्षेत्रीय धुरी थी। दशरथ, विश्वामित्र और जनक तीनों क्षत्रियों के प्रतिनिधि नेता थे और रिजल्ट क्या हुआ ? जनकपुर में धनुषयज्ञ में एकत्रित राजाओं के बीच परशुराम आये। वाद-विवाद हुआ। अत में परशुराम ने कहा "राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटे संदेहू।" क्षेत्रीय कुमारों को प्रणाम कर सिधार गये। देखी आपने ब्राह्मणवाद की पराजय। फिर भी ब्राह्मणवादी परम्परायें कायम कर दी गयीं। तब कृष्ण आये। उन्होंने खुले आम ब्राह्मणवादी परम्पराओं को तोड़वाया, उन्हें तोड़ने में मदद की। वहुत शक्तिशाली और बुद्धिमान थे। ऐसा लगा कि ब्राह्मणवाद अपनी अंतिम साँस ले रहा है। परन्तु ब्राह्मणवाद समाज पर छा गया। फिर महावीर और सिद्धार्थ आये। रामकृष्ण, महावीर और सिद्धार्थ सभी क्षत्रिय थे। सभी राजा थे। महावीर और सिद्धार्थ दोनों ने वैदिक परम्परा पर सीधा प्रहार किया। मैं जैन और बौद्ध धर्मों के मौलिक दार्शनिक सिद्धांत की व्याख्या नहीं कर रहा हूँ। दोनों ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया। जैन धर्म भारत के बाहर नहीं जा सका। बौद्ध धर्म सर्वत्र फैला। पर उस समय वर्ण व्यवस्था को खण्डित नहीं किया गया सिर्फ वर्ण व्यवस्था की सूची

में ब्राह्मणों को प्रथम स्थान से हटाकर द्वितीय स्थान पर रखा गया और क्षत्रिय को प्रथम स्थान दिया गया। वैश्य शूद्र को ज्यों का त्यों रखा गया। उस समय क्रांति की जो आग फैली उसके इतिहास को बारीकी से पढ़ो तो मालूम होगा कि सर्वहारा को किनारे-किनारे रखा गया। बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार के काम में सबसे प्रमुख हाथ राजाओं अर्थात् क्षत्रियों का रहा। इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े सेठ पूँजीपति, व्यापारियों धर्म के प्रचार में अपने कर्मचारियों को लगाया तथा बेशुमार आर्थिक सहायता दी। बुद्ध के लिये बड़े-बड़े विहार का निर्माण किया। मैं सुन्दरलाल से कहूँगा कि वे इसका अध्ययन करें कि ये निहित स्वार्थ वाले लोग इतने उत्साह से बौद्ध धर्म के प्रचार में क्यों लगे ? इसको पढ़ना चाहिये कि बुद्ध ने गरीबी, दासता और परवशता मिटाने के लिये कोई व्यावहारिक कदम क्यों नहीं उठाया। वलिक जब कर्जदार लोग सेठों के तकाजा से परेशान होकर भिक्षु बनने लगे तो सेठों ने बुद्ध से शिकायत की कि हम तुम्हारे लिये विहार बनाते हैं, तुम्हारे धर्म का प्रचार करते हैं और तुम्हारे भिक्षु हमारे कर्जदारों को साधु बना रहे हैं तो बुद्ध ने आदेश जारी किया उन्होंने कहा था कि "भिक्षुओं कर्जदारों को प्रव्रज्या मत देना।" जव दास, गुलाम और बँधुआ मजदूर मुक्ति पाने के लिए भिक्षु बनने लगे तो फिर सेठों ने बुद्ध से शिकायत की और बुद्ध ने आदेश दिया कि "भिक्षुओं दासों को प्रव्रज्या नहीं देना" सैनिक जब भिक्षु बनने लगे तो बुद्ध ने फिर आदेश दिया कि "भिक्षुओं सैनिकों को प्रव्रज्या नहीं देना।" इन आदेशों का अर्थ हुआ कि सर्वहारा समुदाय के लिये विकास का मार्ग, मुक्ति का मार्ग बन्द कर दिया गया। कर्जदार कौन होता है ? सर्वहारा। दास कौन होता था ? सर्वहारा। सैनिक कौन होता था ? सर्वहारा। कर्जदार, दास और सैनिक अमीरों, के बेटे नहीं होते थे गरीबों के, दासों के सैनिकों के उद्धार और उत्थान का मार्ग बन्द कर दिया। ये त्रिपिटक की बातें हैं। मेरी नहीं। मेरी खराबी यही है कि इतिहास पढ़ता हूँ, धर्म को पढ़ता हूँ, तो उसमें यह देखने का

प्रयास करता हूँ कि हमारे वर्ग के साथ क्या हुआ, सर्वहारा वर्ग के साथ क्या हुआ, श्रमिकों और शोषितों के साथ क्या हुआ ? बौद्ध धर्म के नये सिद्धांत समता की आवाज ने सर्वहारा समुदाय को अपनी ओर आकृष्ट किया। लाखों लोग बौद्ध बने। जब उन लोगों ने देखा कि यहाँ भी निहित स्वार्थ का, राजाओं और पूँजीपतियों का वर्चस्व है तो निराश हुए। बौद्ध धर्म के प्रति उनका आकर्षण शिथिल हो गया। वे फिर आर्यों के आगमन के पूर्व के अपने धर्म को जागृत करने में लग गये। वैदिक और श्रमण दोनों संस्कृतियों से अलहदा हमारा इतिहास मिटा दिया गया है। पराजितों का इतिहास रहने नहीं दिया जाता लेकिन आर्यों ने अपना जो इतिहास लिखा है उसी में हमारा इतिहास है। उनके इतिहास की पंक्तियों के बीच से हमारा इतिहास झाँक रहा है। मनु को कहना पड़ा है कि अगर एक अस्पृश्य किसी ब्राह्मण लड़की के साथ संभोग करे तो उसको कड़ी से कड़ी सजा दी जाये। मनु ऐसा क्यों कह रहा है ? इसलिए कि अस्पृश्यों की ओर आकृष्ट होने के बहुत उदाहरण मिले होंगे। मनु ने कठिन दण्ड का विधान किया। पर साथ ही साथ मनु ने हमारे पुरुषों के पौरुष का इतिहास लिख दिया। पढ़ो इसको, आखें खोलकर पढ़ो, इक्के दुक्के होने वाले अपराध के लिए इतनी कड़ी सजा नहीं दी जाती। लगता है ऐसी सैकड़ों घटनायें हो रही होंगी। तभी तो मनु महाराज को अपने दण्ड विधान में इसका उल्लेख करना पड़ा। जैसा मैंने पहले कहा है कि आर्यों के आने से पहले यहाँ के मूल निवासियों का अपना कोई धर्म था। उस धर्म की धारा सूखी नहीं है। संतों ने उसे प्रवाहित रखा है। विजेता धर्म विजित का धर्म नहीं बन सकता, याद रखो। डाक्टर अंबेडकर साहब धर्म परिवर्तन की बात कहने लगे तो एक बात मैंने और कही थी। धर्म परिवर्तन तो उसका किया जाता है जिसका कोई धर्म हो। हमारा कोई धर्म ही नहीं है परिवर्तन क्या करा रहे हैं। हमारा धर्म कहाँ है।

मैंने हिन्दुओं से पूछा बताओ हिंदू किसको कहते हैं ? दिल्ली में होने वाले विराट हिंदू समाज के जोरदार प्रदर्शन के अवसर पर कुछ संयोजकों ने मेरे घर आकर मुझसे आग्रह किया था कि मैं उसमें उपस्थित होऊँ । उनके अनुरोध को अस्वीकार कर देने पर मुझसे उन लोगों ने एक संदेश माँगा । संदेश लिखा तो लम्बा हो गया । उसमें मैंने प्रश्न किया था कि बताओ हिंदू किसको कहते हैं ? ऐसी भाषा में बताओ कि सड़कों की नाली साफ करने वाला एक बाल्मीकि भाई उसे समझ सके । तो डाक्टर करण सिंह ने उपनिषद का एक श्लोक "ईशा वास्य इदम सर्वम" उद्धृत किया । इस दार्शनिक वाक्य को कितने लोग समझेंगे । मैं तो चाहता हूँ कि ऐसी परिभाषा हो जिसे सड़क पर बैठकर जूता गाँठने वाला व्यक्ति भी समझ सके कि हिंदू किसे कहते हैं । परन्तु हिंदू और हिंदू धर्म की ऐसी परिभाषा नहीं है । सही बात तो यह है कि हिंदू धर्म और हिंदू समाज बन्धनहीन है, कायदा विहीन है । यहाँ तो जो मन में आये करो लेकिन कह दो कि हम हिंदू हैं तो हिंदू हो गये ममेरी बहन से शादी करो तब ठीक, चचेरी बहन से शादी करो, तब ठीक, भाँजी से शादी करो, तब ठीक, इन सबों को कन्यातुल्य समझो तब भी ठीक । शाकाहारी रहो तब भी ठीक, माँसाहारी रहो तब भी ठीक, मूर्ति पूजा करो तब भी ठीक, मूर्ति खण्डन करो तब भी ठीक, आर्य समाजी रहो तब भी ठीक, सनातन धर्मी रहो तब भी ठीक । शिवजी पर जल चढ़ाओ तब भी ठीक, नहीं चढ़ाओ तब भी ठीक तो मैंने मन ही मन पूछा आखिर हमारा धर्म क्या है । मन ही मन जवाब आया कि हिंदू समाज में जन्मे हैं तो हम भी कह देते हैं कि हम हिंदू हैं ।

किसी धर्म में उसके अनुयायी का उत्तरदायित्व होता है तो अधिकार भी होता है हिंदू धर्म में हमारा कोई अधिकार नहीं है । सामाजिक सेवाओं से वंचित हैं, मन्दिर में नहीं जा सकते । जाना भी नहीं चाहते । जो देवता हमारे जाने से अपवित्र हो जायें

ऐसे कमजोर देवता के पास जाने का क्यों झमेला ? हाँ, काशी में विश्वनाथ जी के मन्दिर में सत्याग्रह किया था तब मैंने कहा था कि मैं इसलिए सत्याग्रह का समर्थन कर रहा हूँ कि शंकर को मैं अनार्य देवता मानता हूँ। अनार्य देवता अपवित्र नहीं होता क्योंकि वह छूतछात जाति पाँत के भेदभाव को नहीं मानता। शंकर जैसा समदर्शी, उसको भी आर्यों ने बन्द कर रखा है। मैं विश्वनाथ को मुक्त कराने जा रहा हूँ। शंकर ! आपने देखा है हिन्दू क्यों उसके लिंग की ही पूजा करते हैं। आर्य देवों ने शंकर को अपने बराबर नहीं माना। परेशान कर दिया तब शंकर ने सबको ब्रह्मा, विष्णु सभी परेशान हो गये तब आये शकर के पास और कहा कि माफ करो। शंकर ने तब दर्प से कहा (जरा क्रूड लैंग्वेज है) लेकिन बात तो सही है। शंकर ने कहा हमारे लिंग की पूजा करो। इसलिये लिंग की पूजा करने लगे। मन्दिरों में सब देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं। शिवालय में शंकर का सिर्फ लिंग ही स्थापित होता है। वह हमारा देवता है। मैं यह कह रहा था कि हमें तो सबको मुक्त कराना है। देवताओं को भी।

सब देवताओं का वर्णन वेद में है, उनके सघर्ष का उनकी आपसी लड़ाइयों का भी वर्णन है। यही वर्णन वेद में है वेद ईश्वर-दत्त है ऐसा मानना कठिन है। मैंने कहा भगवान तो प्राणी मात्र का है। सबके लिए बराबर है। अगर ईश्वर की सृष्टि प्र णी मात्र है तो जो कुछ रचना वेद में उसने की है सबके लिए करता। यह पढ़ने को नहीं मिला है कि किसी युग में सर्वत्र सस्कृत बोली जाती थी और समझी जाती थी। इसलिए वेद अपौरुषेय है। (ईश्वरदत्त है) ऐसा मैं मानता नहीं हूँ। मैं यह मानता हूँ कि यहाँ के मूलवासियों का ज्ञान पुराना है। यह रिसर्च (शोध) करने की बात है। मेरे पास समय नहीं है पर सुन्दर लाल जैसे युवक इसमें लगें। मैं यह मानता हूँ कि वेद में जो ज्ञान की बातें हैं वह हमारी हैं, वेद में जो लड़ाई की बातें हैं वह आर्यों की है

अगर ज्ञान की बातें आर्यों की होतीं तो आर्य जहाँ-जहाँ गये वहाँ-वहाँ इसी ज्ञान की बात होती। वेद अगर भगवान ने बनाया तो ऐसा बनाता कि सबके लिए होता सारे विश्व के लिए मानव मात्र के लिए होता।

खैर मैंने बहुत बातें कहीं, सवाल यह है कि जाति कैसे टूटे। यह शामियाना खड़ा है। खम्भों पर खड़ा है। शामियाने को गिराना है तो खंभों को गिरा दो। जिस चीज पर जाति प्रथा, वर्ण यवस्था खड़ी है उसे खींच लो वह गिर जायेगी। जाति प्रथा सुरक्षित रखने के लिए ऐसा कानून बनाया और आज समाज में उसको कानून जैसी ही शक्ति प्राप्त है कि एक ही जाति के वर और वधू की शादी जायज मानी जायेगी। आज यदि यह कानून बना दी जाये कि एक ही जाति के वर और वधू की शादी नाजा-यज होगी तो धीरे-धीरे जाति प्रथा का बंधन ढीला पड़ेगा। इसे मैंने जवाहर लाल जी से कहा था तो वे कहने लगे तुम वर-वधू के चुनाव के दायरे को संकुचित क्यों करना चाहते हो। मैंने कहा पंडित जी आपको गलत फहमी है। मैं तो चुनाव के दायरे को और बढ़ा रहा हूँ। मैं तो वर-वधू के चुनाव का दायरा तमाम हिन्दू समाज तक फैलाये दे रहा हूँ जो आगे चलकर यह दायरा संपूर्ण भारतीय समाज को घेर लेगा। कहने लगे बात तो ठीक कह रहे हो लेकिन आज कोई मेरी मानेगा ? मैंने कहा पंडित जी आप नहीं मना सकेंगे तो कौन मनावेगा। लेकिन जवाहर लाल जी की हिम्मत नहीं पड़ी। जाति के खिलाफ अक्सर बोलने लगे थे उन्होंने एक कमेटी बनाई थी। दिवाकर कमेटी जिसका काम यह देखने का था कि लोग सरकारी कागजों में अपनी जाति का नाम नहीं लिखें। कमेटी की सिफारिश आ गई। उस पर विचार हुआ। मैंने पंडित जी से कहा कि दिवाकर कमेटी की सिफारिशें हमें ठगने के लिए हैं।

मैंने कहा कि मेरे नाम से पता नहीं चलता कि मैं कौन

हूँ। ब्राह्मण हूँ कि राजपूत हूँ। वैश्य हूँ कि शूद्र हूँ। जगजीवन-राम ब्राह्मण भी हो सकता है, क्षत्रिय भी हो सकता है। लाला भी हो सकता है। लेकिन पंत जी को जाति बताने की क्या जरूरत है। गोविन्द वल्लभ पंत ब्राह्मण के अलावा कोई दूसरा हो ही नहीं सकते। मेरी जाति लिखना तो बन्द करा दो, ब्राह्मणों, कुछ दूसरों की जाति लिखना खुला रहे इससे बढ़कर फ्राड क्या हो सकता है। कहने लगे कि बात तो ठीक कहते हो लेकिन क्या किया जाये मैंने कहा बहुत सरल तरीका है। किसी के नाम के आगे या पीछे कोई जाति सूचक विशेषण, या उपाधि नहीं लगाई जाये। कहने लगे बड़ी गड़बड़ी होगी। मैंने कहा हाँ, एक पीढ़ी में कठिनाइयाँ आयेंगी। दूसरी पीढ़ी में ठीक हो जायेगी। आज तो जाति सूचक उपाधि लगाने की बीमारी तेजी से बढ़ रही है। यह क्या है कि हर आदमी के साथ उसकी जाति सदा जाहिर होती रहे और हम जाति मिटाने का नारा लगाते रहें। अपनी जाति का विज्ञापन करने पर लोग क्यों तुल गये हैं। अपनी जाति को अपने नाम के साथ लेकर सारी दुनिया को क्यों बताने लगे कि हम इस जाति के हैं। माल बेचने का तरीका होता है। बनिया कभी नहीं कहता कि मेरा माल खोटा है, खोटा माल होता है तो कहता बढ़िया माल है, चोखा माल है। पंत और पांडे लिखना शुरू किया फिर भटनागर और सक्सेना ने शुरू किया। जाटव लोगों ने लिखना शुरू कर दिया। मैं सिर्फ आपको नहीं कह रहा हूँ। सबको कह रहा हूँ। मैंने कहा कि हमारे लड़कपन के जितने यादव बिहार के थे अपने नाम के साथ राम लिखा करते थे। जितना हम जाति मिटाने की कोशिश करते गये उतनी ही जाति बढ़ती गयी। बिहार के मुंगेर शहर में मैंने अखिल भारतीय रविदास सम्मेलन १९३४ में बुलाया था। चमारों की उपजातियों का नाम इकट्ठा किया था एक सौ तेरह उप-जातियाँ उस समय थीं। सारे हिंदुस्तान में दो ही जातियाँ पाई जाती हैं, ब्राह्मण और चमार। चमार के कई एक नाम हैं। भारतीय समाज

से यदि जाति को मिटाना है तो हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था को मिटाना होगा जातियों में नाम बदलने से कुछ नहीं होगा। गाँधी जी ने अछूतों का हरिजन नाम रख दिया एक दिन सेवाग्राम आश्रम में मैंने कहा बापू, हम तो हरिजन शब्द का कभी इस्तेमाल नहीं करूँगा और पिछले हफ्ते यह निश्चय कर लिया कि अब दलित शब्द का इस्तेमाल नहीं करूँगा अरे तुम अपने को दलित कहते रहोगे जो तुमको ऊँचा कौन समझेगा? हरिजन उसको कहते हैं तो लावारिस हो। जिसको कोई भरोसा नहीं, कोई आधार नहीं उसका भगवान भरोसा होता है, आधार होता है। तुम अपने को ऐसा निराधार मत बनाओ। तुम अपने को दलित कहोगे तो दूसरा तुमको क्या कहेगा। कोई उपयुक्त नाम नहीं मिले तो अपने को अनुसूचित जाति का कहो। अगर हिंदू समाज से वर्ण व्यवस्था खत्म करना है तो सबका नया नामकरन करना होगा। ब्राह्मण का नया नामकरन होगा। शूद्र का भी नामकरन होगा। मैंने आरम्भ में परशुराम का जिक्र किया था ना। ऐसा लगता है कि परशुराम भी अनार्य ब्राह्मण थे तभी तो अनार्य देवता शंकर के धनुष टूटने पर उन्हें ही क्रोध आया था। पर अंतिम निर्णय करने के पहिले बहुत रिसर्च, बहुत शोध करना है जो वैदिक धर्म के ग्रंथों से किया जा सकता है श्रमण धर्म के ग्रंथों से किया जा सकेगा।

मनुष्यों में जाति या जाति-प्रथा प्राकृतिक नहीं, कृत्रिम है। भगवान ने आदमी की जात एक बनाई है। भगवान की सृष्टि में आदमी सबसे बुद्धिमान और शक्तिशाली है। अगर उसकी अलग-अलग जातियाँ बन जायें और वे संघर्ष करने लगें तो सृष्टि का विनाश हो सकता है। इसलिए आदमी की जाति एक बनाई। बैल को देखकर कोई नहीं पूछेगा कि किस जाति का पशु है। भैंस को देखकर कोई नहीं पूछेगा कि इसकी जाति क्या है। आम को

देखकर कोई नहीं पूछेगा कि किस जाति का दरख्त है। तोता को देखकर कोई नहीं पूछेगा किस जाति की चिड़िया है।

लेकिन आदमी को देखकर तो कोई किसी की जाति को जान या पहचान नहीं सकता। ब्राह्मण के तीन टाँगें कहाँ हैं? न भंगी के एक टाँग है। आकृति से मनुष्य की पहचान होती है, जाति की नहीं। जाति की पहचान का माप दण्ड विज्ञान में है। लेकिन इससे भी ज्यादा विस्तारपूर्वक जाति पहचान के लक्षण हमारे शास्त्रों में लिखा है। स्वजातीय (एक ही जाति के) नर मादा में आकर्षण होता है। विजातीय नर मादा में आकर्षण नहीं होता है। विजातीय नर मादा में आकर्षण हो भी जाये तो संतान की उत्पत्ति नहीं होती। ब्राह्मण और भंगी स्त्री पुरुष में आकर्षण होता है। अगर दोनों का मिलन हो जाये तो ब्राह्मण और भंगी से संतानें पैदा हो जाती हैं। इसका यह वैज्ञानिक प्रमाण है कि दोनों की जाति एक है अर्थात् दोनों मनुष्य जाति के हैं। प्रचलित जातियाँ परम्परा से पैदा हुई हैं। ईश्वर की बनाई हुई नहीं हैं। जातियाँ कृत्रिम हैं। जितनी जातियों का अन्त हो, समाज और राष्ट्र के लिए उतना ही अच्छा होगा।

वाराणसी के एक सम्मेलन में मैंने कहा था कि हममें शक्ति आ जाये तो हम भी कह सकते हैं कि ब्राह्मणों का छुआ पानी हम नहीं पियेंगे क्योंकि उनके छूने से पानी अपवित्र हो गया। हालांकि यह बेवकूफी की बात है। किसी के छूने से पानी के गुण में कोई अन्तर नहीं आता। इस बात पर एक मुकदमा कानपुर की कचहरी में मेरे ऊपर दायर किया गया। दावा यह किया गया कि एक पंडित जी सुबह-सुबह नल से पानी लेने गये। वहाँ कुछ बालमीकी बहनें भी पानी लेने आ गयीं। उन्होंने कहा पण्डित देवता हमार घड़ा मत छूना, बाबूजी ने कहा कि ब्राह्मण के छूने से हमारा धर्म नष्ट हो जायेगा। पण्डित जी ने हम पर मुकदमा कर दिया कि जगजीवनराम के भाषण के कारण हमारी बड़ी भारी

बेइज्जती हो गयी है। मैंने कहा कि भगवान हमें इतनी ताकत दे दे कि सारे हिन्दुस्तान के अनुसूचित जाति वालों पर हमारी आवाज का तत्काल असर हो जाये तो सिर्फ अनुसूचित जाति या सर्वहारा का ही नहीं, सम्पूर्ण समाज का कल्याण हो, यह तो मैं नहीं कहूँगा कि जो हमें अछूत मानते हैं हम उन्हें अछूत मानें। मैंने कहा था कि धर्म परिवर्तन से समस्या नहीं सुलझेगी, समाज नहीं बदलेगा।

इस्लाम यहाँ आया समता का संदेश लेकर, ईसाई धर्म आया जो जाति-पाँति को नहीं मानता। भारत में आने वाले धर्म इस विश्वास से आये कि विषमता को खत्म करेंगे, भारतीय समाज में जाति प्रथा को खत्म करेंगे और भारतीय समाज को मुक्त करेंगे पर सफल नहीं हुए। हमारा धर्म, तन्त्र का मार्ग है, सत धर्म है, संत शिरोमणि गुरु रविदास ने कहा है, "पराधीन को दीन क्या, पराधीन बेदीन। रविदास दीन पराधीन को सबहि समझे दीन" रामधानी और परवश जातियों का एकमात्र धर्म है परवशता का अन्त करना। उन्होंने जाति-पाँति के विरुद्ध विद्रोह किया और कहा कि "जाति-जाति में जाति है, ज्यों बदली की पात, रविदास न मानुष जुड़ सके, जब लोग जाति न जात।" गुरु रविदास कहते हैं कि इंसान को नहीं बचा सकते जब तक जाति को खत्म नहीं करते। क्योंकि "मानवता को खात है, जाति-पाँति का रोग, रविदास जी पूजा पाठ के कायल नहीं थे। किस अनुपम अछूते पदार्थ से पूजा की जाये। ऐसा कुछ है नहीं।" इसलिये "मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊ सहज सरूप" दूध को बछड़े ने जूठा कर दिया है। फूल और जल को भौंरे और मछली ने सिर्फ जूठा ही नहीं किया है, उन्हें बिगाड़ दिया है। क्योंकि वहीं टट्टी भी कर दिया है, पेशाब भी कर दिया है। फिर उन्हें कैसे चढ़ाया जाये पूजा में। अतः मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊ सहज सरूप॥ 'सहज सरूप' का ध्यान क्योंकि गुरु रविदास को मूर्ति

पूजा में विश्वास नहीं था । उन्होंने "चरण पाताल शीष आसमाना । सो साहेब कैसे सम्पुट समाना ।।" भला विराट ब्रह्म को सम्पुट अर्थात् डब्बले में कैसे रखा जाये बताओ तो । कबीर और रविदास को कौन पढ़ाता । उस जमाने में जुलाहे और चमार को पढ़ाया नहीं जाता था । तंत्र साधना से, संत मत से उन्होंने भीतर की शक्ति जगाई थी तो सारे वेद की पूजायें खड़े होकर उनके सामने नाचा करती थीं । गुरु रविदास ने कहा था "चारों वेद किया खड़ौती, जन रविदास करे दण्डवती ।" कबीर और रविदास लिख गये हैं धर्म के सार को । वे नया धर्म दे गये हैं । उस पर चलो । हिंदू धर्म क्या है, कोई बताता नहीं । किसी मुसलमान से पूछो कि मुसलमान कौन है तो जवाब मिलेगा कि खुदा, पैगम्बर और कुरान पर ईमान लावे और नमाज पढ़े वह मुसलमान है ।

मैंने आपका बहुत समय लिया । राजनीति में याद रखो कोई किसी को देता नहीं है लेकिन अगर आप संगठित हो जायें तो बहुत कुछ कर सकते हैं पंजाब के सिख लोग संगठित हो गये हैं तो उनकी शक्ति को, सिख समाज को भारतीय समाज में आदर से देखा जाने लगा है । वैसे लोग जिनको हिंदू समाज के एक किनारे पर रखा हुआ है, संगठित हो जायें तो एक नया समाज बनाया जा सकता है । असमानता मिटाई जा सकती है । समता लाई जा सकती है । जन्म और जाति पर आधारित भेदभाव मिटाया जा सकता है और सबों को सम्मान मिल सकता है । आज हिंदू समाज में समता और सम्मान सबको नहीं मिल सकता । मैं तो उसी तरह का समाज बनाना चाहता हूँ कि समाज में प्रत्येक नागरिक को सम्मान मिलेगा, प्रत्येक नागरिक की इज्जत की जायेगी । एक नया समाज बनाओ, एक नया इन्सान बनाओ, एक नया धर्म दो । धर्म को अफीम कहा जाता है, इसके नशे में इन्सान इन्सानियत को भूल जाता है । दुनिया के इतिहास में धर्म के नाम पर किये गये अन्याय, अत्याचार और अमानुषिक जघन्यकामों की बड़ी लम्बी कहानी है । इस लिए इस धर्म में आ जाओ जिसे संतों

ने दिया है। उस धर्म में आ जाने के बाद धर्म भिन्नता नहीं है, जाति नहीं है सब मानव हैं, सब बराबर हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई, आप लोगों के बीच में आया।

बहुत बातें कहीं कुछ लोगों को मेरी बातें अच्छी नहीं लगी होंगी, लेकिन मेरी आदत है, सच्ची बातें कह देता हूँ। नीतिकारों ने कहा "सत्यम ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात सत्य बोलो, मीठा बोलो, नां ब्रूयात सत्यमप्रियम"। सत्य जो कड़वा हो उसे मत बोलो लेकिन सत्य सत्य है। मीठा भी सत्य बोलो, कड़वा भी सत्य बोलो। सत्य को बराबर बोलते जाओ, कहते जाओ रामदीन जी को धन्यवाद। सुन्दरलाल को धन्यवाद। पिछले तीन दिनों से मीटिंगों में बोल रहा हूँ। घर वाले कह रहे थे कि धूप तेज है बीमार पड़ जाओगे, मैंने कहा हिंदुस्तान में जो धूप से बीमार पड़े तो उसे बीमार ही समझना चाहिए। जाति तोड़ो सम्मेलन में आज मैं यहाँ आ गया। आप सबों को धन्यवाद। याद करते जाइये कि हिंदू समाज की वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा समाप्त कर एक नया समाज बनाना है।

कार्यकर्ता का कर्तव्य

बजरंग दंगल कुड़नी के पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने अपनी अन्तरंग बैठक में श्री गोवर्धन सिंह को ब्लाक प्रमुख का चुनाव लड़ाने का निर्णय लिया। इस निर्णय की सूचना बाद में मुझे देकर नेतृत्त्व सम्हालने के लिए कहा। मैंने प्रत्युत्तर में विचार करने का समय माँगा और यह भी कहा कि दंगल समिति के सदस्यों को राजनैतिक शिकंजे में न पड़ना चाहिए था। उत्तर मिला श्री बजरंग के सामने यह निर्णय लिया गया है कि श्री गोवर्धन सिंह जीत कर साथ रहेंगे। मेरे सामने उभय संकट आ गया। श्री चन्द्रशेखर मिश्र चुनाव में आ गये। श्री मिश्र जिला परिषद कानपुर के वाइस चेयरमैन रह चुके हैं और उनके नेतृत्त्व की साख थी क्षेत्र से ऊपर भी उठ चुके थे।

मैंने श्री बेनी सिंह से अनुरोध किया कि गोवर्धन सिंह साथ रहेंगे लड़ने की स्वीकृति देने की कृपा करें। श्री अवस्थी जी ने एक ही बात कही ज्वाला हाथी को ऊँख पकड़ा कर फिर उससे छीनी नहीं जा सकती। उनका एक-एक शब्द मस्तिष्क में गूँज रहा है। उनकी इस भावना से संकेत स्पष्ट होता था परन्तु क्षेत्रीय साथियों के आश्वासन पर दृढ़ रहकर और भावी चुनाव में अच्छे परिणाम की आशा रखकर मैंने श्री अवस्थी जी के संकेत की अनसुनी की और साथियों से कह दिया श्री गोवर्धन सिंह को विजयी बनाना है। उभय पक्षीय कार्यकर्ता चुनाव मैदान में कूद पड़े यह लड़ाई तो महाभारत के युद्ध का स्मरण कराती थी। श्री गोवर्धन सिंह के विशेष आग्रह पर मैं भी एक दिन रात चुनाव प्रचार में लगा हाँ एक दिन शेष रहने पर एक सदस्य का

पता लगा वह नजबगढ़ में है शीत की ठिठुरती रात में श्री पूर्वी दीन जगदीश पुर को लाने के लिए दो दलित समुदाय के कार्यकर्ता भेजे गये जो प्रातः ८ बजे भीतर गाँव चुनाव कैम्प में आकर सम्मिलित हो गये। इस चुनाव में दलित समुदाय के कार्यकर्ताओं ने लगकर कार्य किया श्री गुरुप्रसाद व फगुनी राम (पंजाबी) चन्दापुरवा के यहाँ एक अच्छा खासा चुनाव कैम्प लगा जिसमें मतदाता विश्राम कर रहे थे। इनका प्रयास उत्साह वर्धक था। चुनाव के एक दिन पहले मुझे विजय संदिग्ध लगती थी। कहीं श्री बेनीसिंह जी कानपुर से विरसिंह पुर न आ जायें उनके आने और वापस जाने मात्र से ही चुनाव की हवा में बदलाव आ जाता। मतदान के दिन आकर लौट गये होते तो भी हमें विजयी होने में भ्रम था परन्तु श्री बेनी सिंह जी ने चुनाव भर कानपुर नहीं छोड़ा और न मतदान करने आए तब विश्वास हुआ कि अब गोवर्धन सिंह की विजय होगी। इस पर भी संघर्ष काँटे का रहा चुनाव में श्री गोवर्धन सिंह विजयी घोषित हुए। पहले ही दिन श्री गोवर्धन सिंह को श्री बेनी सिंह जी के यहाँ मिलाने ले गये। श्री गोवर्धन सिंह की विजय में खुशी तो थी परन्तु श्री चन्द्रशेखर की हार का ध्यान आने पर भी दिल बैठता था।

श्री चंद्रशेखर श्री बेनीसिंह जी के अत्यंत निकट और सहयोगी थे। मेरे जैसे तुच्छ कार्यकर्ता की रुचि रखने के लिए अवस्थी जी ने चुनाव में भाग नहीं लिया। जब उनके हृदय गांभीर्य, उदारता, सहृदयता, सदाशयता, कार्यकर्ता को असीम सम्मान देने की क्षमता पर आँखें बंद कर सोचने लगता हूँ तो अपने को कृतघ्नी महा कृतघ्नी पाता हूँ। सदैव रुख समझकर कार्य करने में लग जाता रहा इस बार उसका उल्लंघन करना मन को सदमें के गहरे गर्त में डुबो देता है जब सोचता हूँ। एक ओर मेरा जैसा अनुशासनहीन और उधर श्री बेनीसिंह सरीखा नेता कार्यकर्ता के प्रति उदार चेता, सुहृद-सम्मान बढ़ाने की वृहद अभिरुचि वाला

नेता जो मेरी अभिरुचि की रक्षा के लिये इस ब्लाक प्रमुख के चुनाव में तटस्थ हो गये उन्हें दो ही साल में खो दिया। श्री अवस्थी जी की मिसाल दूसरी नहीं मिली है। सन् १९७४ विधान सभा निर्वाचन में भीतर गाँव ब्लाक प्रमुख के चुनाव की घोर प्रतिक्रिया हुई श्री चंद्रशेखर की पराजय से असंतुष्ट कार्यकर्ताओं ने अपनी पूरी शक्ति अवस्थी जी को हराने में लगा दी। दोनों नदियों के बीच के जिन साथियों ने आश्वासन साथ रहने का दिया था उनमें भी बहुत से छोड़ गये थे। घाटमपुर-भोगनीपुर विधान सभा क्षेत्र के काँग्रेस कार्यकर्ता दोनों काँग्रेसी उम्मीदवारों को हराने के लिए महायता पहुँचाने में एक जुट थे। अत: दोनों क्षेत्रों में काँग्रेस की जोरदार पराजय हुई। बहुत सी लिकें थीं हराने की उसका मुझे दु:ख भी नहीं है।

मेरा सोचना सब गलत हुआ आपने कोई अंकुश नहीं लगाया। अंकुश क्यों लगाऊँ जब रुख और चेहरे से कार्य का अनुमान लगाकर काम करने लगते थे तो देखा इस बार तुम वैसा नहीं करना चाहते थे। हमने कहा चलो अबकी ज्वाला की रह जाने दो। यही बातें मुझे अथाह विचार प्रवाह में डाल देती हैं। मैं बहुत न कहकर मानता हूँ मैं अनुशासनहीन कर्तव्यच्युत हूँ इसका प्रायश्चित क्या अन्त तक न हो पायेगा-साथ जाएगा। वह तो गये शेष जीवन में पकड़ूँ किसे ? जिन साथियों की बदौलत यह कर्तव्य-हीनता की थी उनके अतिरिक्त किसे क्षेत्रीय साथी कहें जिनके उत्थान के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी हो उनसे कीमती हमारे लिये और कौन हो सकते हैं वह अनजान होंगे जो बड़ी कीमत से पाने वाले साथियों को छोड़कर जायें। राजनैतिक क्षेत्र में कोई कहीं हो पर हमारा साथ पूर्ववत् अमर रहेगा। ईश्वर से यही प्रार्थना है भले ही दलीय मतभेद हो जायें कभी पर परिवार के हित को उन्हें ध्यान रहे इस चाहत के साथ विचार समाप्त करता हूँ।

मैं सदैव श्री अवस्थी जी के संकेत व रुख पर कार्य करता रहता था। अबकी अवस्थी जी ने कहा कि ज्वाला की इच्छा पूरी होने दो कार्यकर्ता के उभार को दमन करना ठीक नहीं। मैं दृढ़ विश्वास के साथ यह मानता हूँ कि मुझ छोटे से कार्यकर्ता की इच्छा फलित होने के लिए अवस्थी जी ने तटस्थता ग्रहण की यह विजय अवस्थी जी की ही थी। मैं उनका सदैव ऋणी रहा हूँ। दंगल के दिन उनके अस्वस्थ होने सें दंगल न लगा पं कमलापति त्रिपाठी उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का परवाना लेकर आये थे। दूर्भाग्य प्रदेश का था जो शुभ अवसर प्रकृति ने हटात हमसे छीन लिया। बिना अवस्थी जी के हम सब असहाय रह गये हैं।

—

मेरे चाबुकी ठाकुर जंगबहादुर सिंह

पूर्व अध्यक्ष डिस्ट्रिक्ट बोर्ड जिला परिषद,
अध्यक्ष जिला काँग्रेस कमेटी, कानपुर

स्व० ठाकुर जगबहादुर सिंह जी, मेरे मार्ग दर्शक अग्रज के रूप में रहे हैं, मैं उनके चरणों में अपनी लेखनी से पुष्प अर्पित कर उन्हें स्वर्ग में यह यकीन दिलाता हूँ कि ठाकुर साहब आपके ज्वाला में वह ज्वाला आज भी विद्यमान है जिसने अन्याय, अत्याचार को समूल भस्म करने का प्रयास किया है।

मेरे ही नहीं अपितु सभी काँग्रेस जनों के श्रद्धा के पात्र ठाकुर साहब हमेशा काँग्रेस जनों पर अपना अनुशासन का चाबुक रखते रहे हैं, हाँ बुढ़ापे में इतना अवश्य हो गया था कि वह कभी-कभी अच्छी चाल चलते भी चाबुक जमा देते जिसका बाद में अहसास भी करते थे। मुझे भी एक बार गलत चाबुक लगाया।

घटना सन् १९६७ की है, श्री धर्मव्रत शुक्ल जी काँग्रेस के नेता रहे हैं, उनके यहाँ एक निमन्त्रण था, जिसमें ठाकुर साहब मुझसे गुस्सा गये और बुढ़ापे का गुस्सा इतना तेज हुआ कि वह मुझे छड़ी लेकर मारने तक दौड़े, चूँकि मैं सत्य था चाबुक गलत लगा था इसलिए मैं अपनी बात पर अडिग रहा। चुनाव हारने के बाद सांत्वना तो दी नहीं बल्कि क्रोधावेश में जो व्यवहार किया इससे स्पष्ट हो गया कि वह मेरे पक्ष में नहीं रहे।

दोनों तरफ से वाद-विवाद में तेजी रही। यहाँ काँग्रेस कार्यकर्ता अधिक एकत्रित थे जिनका मन इससे कुण्ठित दिखायी दे रहा था। इस घटना से जिले के काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने ठाकुर साहब के यहाँ बैठक बन्द कर दी।

जब यह घटना श्री बेनीसिंह जी को मालूम पड़ी तो बड़े दुखितमन से कहा कि बुजुर्ग ठाकुर हैं बुजुर्ग होने की वजह से सहन करो। मैंने कहा कि इस तरह का अपमान बर्दाश्त करना होता तो कुड़नी के ठाकुर-ब्राह्मण छोड़कर क्यों यहाँ आता।

किन्तु धन्य हैं, मेरे बुजुर्ग कि तुम गाँधी की तरह अपनी भूल का अहसास भी करते थे। चन्द दिन बाद ही ठाकुर साहब मुझसे बोले कि ज्वाला यदि बाप से गलती हो तो क्या बेटा क्षमा नहीं करेगा, और मुझे अपने सीने से लगा लिया, मैं नतमस्तक होकर धन्य हो गया। ठाकुर साहब की यह विशेषता थी कि वह कार्यकर्ता से नाराज होते थे, तो उसे प्यार भी करते थे। जिससे कार्यकर्ता का दिल कभी टूटता नहीं था।

मैं आप को यह विश्वास दिलाता हूँ, कि ठाकुर साहब आपका ज्वाला जीते दम तक ज्वाला रहेगा मरने पर तो सभी राख होते हैं।

—ज्वाला प्रसाद कुरील

संघर्षमय जीवन

श्री ज्वाला प्रसाद कुरील के संघर्षमय जीवन से लगेगा कि जैसे उन्होंने अपने संघर्षशील और अनुभवी जीवन का निचोड़ कर दिया है। अतीत से वर्तमान तक उन्हें संघर्ष करते ही बीता। बात उस समय से शुरू करता हूँ जब मैं मात्र ६ या ७ वर्ष का था हमारे यहाँ की परिस्थितियाँ वह थीं कि खाने को भी मात्र एक समय ही मिलता था, क्योंकि उस समय जमींदारों का शासन दलित वर्ग पर इस तरह हावी था कि सारा दिन कड़ी मेहनत करने और उनकी चाकरी करने के बाद शाम को कहीं थोड़ा खाना खाने को मिलता था। इस स्थिति में भी मेरे (स्व० पिता श्री पूर्वीदीन) ने अपना धैर्य नहीं खोया। उन्हें जब भी मौका मिलता था अपने घर में ही अध्ययन करते थे और हम लोगों को समझाते थे कि बेटा कड़ी मेहनत और अच्छी शिक्षा से कभी तो हमारे दिन भी सुधरेंगे। धीरे-धीरे जब मैं युवावस्था में पहुँचा और मैंने हाईस्कूल साइंस से प्रथम स्थान में प्राप्त किया तब उस दिन मेरे पिताजी ने मुझे यह आशीर्वाद दिया कि बेटा इसी तरह संघर्ष करते रहे तो एक दिन तुम भी बहुत बड़े आदमी बनोगे और समाज के लिए अपने पिछड़े वर्ग के साथियों के कुछ काम आ सकोगे। इसके बाद मैं गाँव से शहर आया मैंने यहाँ इण्टर पास किया। पढ़ने में मैं इतना अच्छा नहीं था लेकिन मेरी लगन और मेरे त्याग ने बराबर मेरा साथ दिया।

प्रेरणा स्रोत के रूप में मेरे स्वर्गीय पिता का ही हाथ था लेकिन आर्थिक साधन जुटाने में एवं साहस बढ़ाने में मेरी स्वर्गीय माता जी का हाथ किसी प्रकार से कम नहीं था। कक्षा ८ तक शिक्षा

गृहण करने में मुझे अपने स्वयं में जो भी कठिन से कठिन परिश्रम करना चाहिये वह मैंने कृषि क्षेत्र में कार्य करने में प्रयास किया। इसके बाद की शिक्षा में मेरी आदरणीय मौसी जी का बहुत बड़ा त्याग सभी प्रकार से रहा। इसको भी मैं अपने जीवन में किसी भी क्षण में भूल नहीं सकता।

इस शिक्षा के दौरान शहर में रहकर के भी किसी परिश्रम से पीछे नहीं रहा यहाँ तक कि मुझे अपने लिए साधनों की पूर्ति एवं शिक्षा को निरन्तर जारी रखने के लिये रिक्शा भी चलाना पड़ा। उसको भी साहस के साथ किया। इंजीनियरिंग की शिक्षा में मैं अपने बहनोई (श्री आर० यन० सिंह) जी का मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ। इंजीनियरिंग का अध्ययन करवाने में मेरी हर तरह से मदद की। मैंने अपने जीवन में जितनी परिस्थितियों का सामना किया है वह बहुत दिलचस्प हैं। एक बार की बात है मैं इन्जीनियरिंग का कोर्स कर रहा था। पैसे की इतनी जरूरत आ गयी थी कि खर्चों को पूरा करने के लिए छुट्टियों के दौरान साइकिल में एक-डेढ़ कुन्तल गेहूँ बाँध करके शहर में बेचना पड़ता था जिससे मुझे सारा दिन में मात्र २५ रुपये ही मिल पाते थे। उसी से मैं आगे की अध्ययन की व्यवस्था बनाता था।

एक बार अचानक रास्ते में मेरे मित्रगण मिल गये और मुझसे कहा कि तुम इंजीनियरिंग के छात्र हो तुम्हारा स्टेटस एक इन्जीनियर का होगा और तुम गेहूँ बेचने का काम साइकिल से करते हो तुम्हें शर्म नहीं लगती। उस दिन मुझे काफी अपमान महसूस हुआ मैंने घर में जाकर पिताजी को बताया तो उन्होंने बड़े प्यार से मेरे मनोबल को बहु ऊँचा उठाया उन्होंने कहा कि जो लोग ऐसा कहते हैं वह जीवन में कुछ नहीं कर सकेंगे और अगर तुम मेरे बताये हुए रास्ते में चले तो जीवन के कल्याणकारी मार्ग तक अवश्य पहुँचोगे। वे स्व० पिताजी अब इस दुनियाँ में नहीं हैं। किन्तु फिर भी मुझे ऐसा विश्वास है कि उनके शब्दों

की वाणी का मैंने अपने जीवन में पालन किया और आज मैं सभी प्रकार से सम्पन्न हूँ। जिन लोगों ने मुझे जलील किया था वह लोग तो जीवन में कुछ भी नहीं कर सके। उपरोक्त जीवन के अनुभवों से मुझे खुद को जीवन का ऐसा तजुर्बा है। यदि मनुष्य किसी चीज को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प एवं त्याग की भावना रखता है तो ऐसा कुछ भी नहीं है कि वह कुछ भी न कर सके। सामाजिक दर्शन के रूप में मैं अपने बाबा साहब भीमराव अम्बेद-कर जी का पक्का अनुयायी हूँ। उनके बताये रास्ते पर हमेशा चलता रहूँगा। मेरे ख्याल से अगर लोग त्याग की भावना को रख-कर आगे बढ़ने की स्वयं कोशिश करे तो वह अवश्य ही जीवन में सफल होंगे और उन्हें कोई न कोई शक्ति सहारा देने के लिए आ जाती है।

यदि किसी का भी परिवार गिरा हुआ है और नितांत दयनीय स्थिति में हो तो उसको आगे बढ़ाने के लिए किसी भी एक सदस्य को कुर्बानी देनी ही पड़ेगी। वर्ना आदमी को बद से बत्तर जीवनी जीने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। हम लोग सबसे

(महादेव वर्मा)

पहले बाबा साहब के ऋणी हैं। जिन्होंने अपने अथक प्रयास से तमाम कुर्बानियों के बाद यह अवसर दिलाया। मैं शुक्रगुजार हूँ उनके बाद के अपने पूर्वजों का। उनके बताये हुए कारवाँ को आगे ही बढ़ाते चले जा रहे हैं।

उपरोक्त वार्ता में मैं अपने आने वाले समाज के बच्चों को यही समझाना चाहता हूँ कि परिस्थितियों से डर कर हमें भागना नहीं चाहिए बल्कि डटकर उनका मुकाबला करना चाहिए अगर कोई यह कहकर हमारा मनोबल गिराना चाहे कि एक सब्जी बेचने वाले का बच्चा डाक्टर या इन्जीनियर नहीं बन सकता तो यह गलत है। अगर कोई यह कहता है कि वह एक मोची का बेटा है और वह मोची का ही काम कर सकता है तो यह भी गलत है। मैं (यम. डी. वर्मा) अपने लेख में आने वाली कल की पीढ़ी को यही सन्देश देता हूँ कि जो कुछ भी करना हो तुम अपने त्याग-लगन से अपने आप को सक्षम बनाकर ही कर सकते हो।

श्री शिवदयाल

ग्राम साल्हेपुर कांड
(२९ दिसम्बर सन् १९७९)

आजादी के बत्तीस साल गुजरने के बाद देश के अनुसूचित जाति, जन-जाति और पिछड़े वर्ग के लोगों में शायद यह विश्वास जागा हो कि अब अन्याय, अत्याचार और सामन्तवाद का अन्त हो रहा है और हम लोगों को भी मानव अधिकार मिलने से स्वच्छन्द रूप से साँस लेने का अवसर मिला है। किन्तु २९ दिसम्बर सन् १९७९ की मनहूस सुबह ने ग्राम साल्हेपुर, थाना चाँदपुर, जनपद फतेहपुर के अनुसूचित जाति के लोगों का अन्ध-विश्वास तब टूट गया जब उनके गाँव पर ग्राम चाँदपुर के कई सौ लोगों ने आक्रमण कर आग की लपटों में समर्पित कर दिया।

घटना की शुरुआत तब हुई जब सामंतवादियों के विचारों का असर उनके उन बालकों पर पड़ा, जो किशोरावस्था में विद्या अध्ययन कर रहे थे। ग्राम चाँदपुर सामंतवादिता एवं अनैतिक कार्यों के लिए ख्याति प्राप्त गाँव था। आस-पास छोटे-छोटे गाँव बसे हैं जिनमें अछूत और पिछड़े वर्ग के लोग रहते हैं। चाँदपुर के सवर्ण लोगों के किशोर विद्या अध्ययन के लिये उस समय इण्टर कालेज अमौली में जाते थे। इन सवर्ण छात्रों का अछूत और पिछड़े वर्ग के छात्रों पर इतना दबदबा था कि इस वर्ग के लोग कक्षाओं में सदैव सवर्ण छात्रों के पीछे की कुर्सियों पर बैठने के लिये आतंकित किये जाते थे। सवर्ण छात्रों के देर से आने अथवा विद्यालय में न आने पर भी आगे की कुर्सियाँ खाली रहती थीं।

एक दिन साल्हेपुर के एक छात्र ने अपनी कक्षा में आगे की सीट पर बैठने का साहस किया, जिस पर चाँदपुर के छात्रों ने उस छात्र के साथ ही साल्हेपुर के अन्य छात्रों की भी जमकर

पिटाई कर दी, सवर्ण छात्रों के आतंक से शिक्षक भी हस्तक्षेप का साहस नहीं कर सके। इसी घटना के तारतम्य में एक दिन साल्हेपुर के छात्रों के साथ सठगाँव चौराहे पर कुछ झगड़ा हुआ, किन्तु एक बस आ गइ उसमें बैठे पुलिस जनों ने समझा-बुझाकर मामला रफा-दफा करा दिया। किन्तु सवर्णों के आतंक की ज्वाला बुझी नहीं, इसलिये कि उनके दिमाग में अछूतों और पिछड़े वर्ग के लोगों का लिखना पढ़ना और आगे बढ़ना कतई बरदास्त नहीं था। साल्हेपुर गाँव में अधिकतर पिछड़ी जाति और अछूतों की आबादी है। यहाँ पर चाँदपुर गाँव के लोगों की जमींदारी भी रह चुकी थी। इसलिए यह लोग उस गाँव के लोगों को सदैव हेय दृष्टि से देखते थे तथा उनका आगे बढ़ना सवर्णों को काँटे की तरह कसकता था।

इस गाँव में श्री कालीचरन वर्मा एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी हैं। श्री वर्मा बहुत ही जुझारू और कर्मठ नेता के रूप में जनपद फतेहपुर में जाने जाते रहे हैं, वह इस गाँव के प्रधान भी रहे हैं, गाँव के उत्थान के लिये वह सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। उनका लक्ष्य था आजादी के बाद यदि लोगों को हम उनकी प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी कर सके तो हमारा आजादी की लड़ाई में जाना सफल हो, इसीलिये उन्होंने इस गाँव के उत्थान के लिये विद्यालय, पोस्ट आफिस, सहकारी संघ, सठगाँव चौराहे पर कन्या विद्यालय भी बनवाया, जहाँ सार्वजनिक समारोह होने लगे। साल्हेपुर गाँव का उत्थान पड़ोसी गाँव खासकर चाँदपुर के लोगों की आँखों में किरकिरी पैदा करने लगा क्योंकि अछूतों और पिछड़े लोगों का उत्थान उनके लिये सरदर्द था। इसी कारण से तत्कालीन ब्लाक प्रमुख अमौली श्री नन्दन बाबू के नेतृत्व में ब्लाक कार्यालय के सामने आरक्षण के विरोध में एक सभा भी की, जिसमें तमाम अछूतों और पिछड़े लोगों के सम्बन्ध में भाषण हुये, जिससे सवर्णों में जोश पैदा हुआ और अछूतों को मिटा देने पर आमादा हो गये। इसके बाद दिनाँक २८ दिसम्बर की पूर्व

संध्या पर चाँदपुर के रामलीला मैदान पर, गाँव के लोगों को डुग्गी पीट कर बुलाया गया और सुबह साल्हेपुर पर हमला करने की योजना बनाई गई। आश्चर्य है कि चाँदपुर में थाना है, किन्तु वहाँ की पुलिस इन सब उत्तेजनात्मक भाषणों और योजनाओं को कान में तेल डालकर सुनती रही।

श्री जगन्नाथ
श्री ज्वालाप्रसाद कुरील
श्री रामधनी

दिनांक २९ दिसम्बर १९७९ को प्रातः चाँदपुर में फिर डुग्गी पिटी और पाँच-छै सौ आदमी एकत्र हुये और धौंसा बजाते हुये थाने के सामने से साल्हेपुर पर आक्रमण करने के लिये निकल पड़े, क्योंकि आक्रमणकारियों का नेतृत्त्व पुलिस के दलाल और थाने में बैठने वाले ही लोग कर रहे थे इसलिये थाने के सामने से ही यह सारा हजूम साल्हेपुर में कहर बरतने के लिये निकला और पुलिस जन उसे ऐसे देखते रहे जैसे रामलीला का जलूस हो। करीब १० बजे आतताइयों का हजूम साल्हेपुर में पहुँच गया और हमला बोल दिया, गाँव के उत्तरी सिरे पर जूनियर हाई स्कूल स्थित है,

उधर से जब हमलावर आये तो इसकी जानकारी प्रधान श्री अमरनाथ वर्मा को हुई वह दौड़ते हुये जूनियर हाई स्कूल में आये और प्रधानाध्यापक श्री गोरेलाल उमराव को इस घटना की जानकारी दी। इतने में आक्रमणकारी विद्यालय परिसर में आ गये प्रधान श्री अमरनाथ वर्मा व प्रधानाध्यापक श्री उमराव ने आक्रमणकारियों से निवेदन किया कि वह इस तरीके का जघन्य अपराध न करें, परन्तु इन लोगों की एक भी न चली, मकान धूँ-धूँ कर जलने लगे, स्त्रियों और बच्चों की चीत्कार से वातावरण थर्रा उठा, प्रधान श्री रामकुमार वर्मा (बटगवाँ) श्री रामनाथ गुप्ता, जंगबहादुर सिंह और गोरेलाल उमराव एक छत पर चढ़ गये। वहाँ से ईटों के रोड़े फेंककर आक्रमण कारियों को रोकने का प्रयास करने लगे, इतने में आक्रमणकारियों की फायर से गोरेलाल के पैर में गोली लगी, वह गिर पड़े, फिर भी गुलूबन्द से पैर बाँधकर जब तक गोरेलाल पुनः विरोध करने को तैयार हों, आक्रमणकारी आगे बढ़ चुके थे। आक्रमणकारियों के शिकार से नब्बे वर्षीय एक खटिक बुड्ढा भी न बचा। उसको इतना मारा कि उसके दोनों हाथ टूट गये और दो माह बाद मर गया। इस मार धाड़, लूटपाट और आगजनी की सूचना जब रामपुर निवासी श्री रामधनी, अवकाश प्राप्त फौजी को मिली तो वह अपनी बंदूक लेकर आये और कुछ अध्यापकों के साथ आक्रमणकारियों को ललकारा और पीछा किया। शायद आक्रमणकारियों की गोलियाँ समाप्त हो गई थीं, इसलिये वह भागे और भागते हुये भी बर्तन, रजाइयाँ, बकरे एवं अन्य सामान भी लूट ले गये। इस घटना में लगभग ६ घण्टे तक आततायियों ने अपना ताण्डव नृत्य किया। जिसमें लगभग बीस बाइस घर जलकर राख हो गये। कुछ आंशिक रूप से जले तथा बीस व्यक्तियों को गम्भीर चोटें भी आयीं।

साल्हेपुर जल जाने और लोगों के लुट-पिट जाने के बाद पुलिस ने अपनी कार्यवाही शुरू की। उसकी सूचना बायरलेस से जनपद पुलिस कार्यालय को दी। घटना की रिपोर्ट इस घटना क

शिकार हुये लुटे श्री शिवशंकर वर्मा ने लिखाई, उनका घर भी जला दिया गया था, जिसमें ८३ व्यक्तियों को नामजद किया गया। घटना के दूसरे दिन श्री गोरेलाल उमराव प्रधानाध्यापक श्री के. जी. वर्मा के साथ मेरे पास कानपुर आये और घटना की पूरी जानकारी मुझे दी, मैं उन दोनों लोगों के साथ तुरन्त साल्हेपुर पहुँचा वहाँ पहुँचकर जो दृश्य मैंने देखा दंग रह गया क्योंकि इतने बड़े काण्ड की कभी कल्पना भी न की थी, जिन मूल्यों और आदर्शों को लेकर मैंने जीवन भर संघर्ष किया था, वह आज बिखरे दीख रहे थे, किन्तु मैंने साल्हेपुर में एक बात पाई कि कुरीलों के किसी भी घर को कोई क्षति नहीं पहुँची थी। जबकि आक्रमणकारियों ने मेहतरों तक को नहीं छोड़ा, सम्भव है कि कुरीलों में कोई ऐसा खुशामदी व्यक्ति रहा हो जिसके कहने से इनके घर लुटने और जलने से बच गये। ऐसी स्थिति में जो बच गये वह भाग्यशाली कहे जा सकते हैं।

साल्हेपुर देखने के बाद मैं तुरन्त चाँदपुर गया तथा थाना अध्यक्ष से मिला, मेरे साथ पूर्व विधायक इस क्षेत्र के कर्मठ जनसेवी श्री रामकिशोर वर्मा, श्री कृष्णगोपाल वर्मा तथा श्री गोरेलाल उमराव भी थे। मैंने थाना अध्यक्ष से स्पष्ट कहा कि घटना में पुलिस का दामन साफ नहीं है। इसके बाद उपरोक्त लोगों को साथ लेकर फतेहपुर जिला मुख्यालय पहुँचा, वहाँ पर श्री शम्भूनाथ जिलाधीश, एस. पी. श्री लियाकत अली से मिला और साल्हेपुर की दुर्दान्त काण्ड की कहानी बताई जिलाधीश से साल्हेपुर जाने और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुँचाने के लिए प्रबंध कराया तथा एस. पी. से कड़े सुरक्षा प्रबंध कर तत्काल आवश्यक कार्यवाही के लिए कहकर हम सभी लोग लखनऊ के लिए रवाना हुए लखनऊ में पहुँचकर गृहमंत्री के कार्यालय कक्ष में पहुँचा, संयोगवश वहाँ पर कासिम हसन तथा चाँदपुर के प्रधान भी बैठे गृहमंत्री से बात कर रहे थे मैं भी बैठ गया। कासिम हसन ने एक प्रार्थना-पत्र मंत्री जी को बढ़ाया, मैं समझ गया कि कासिम

हसन साल्हेपुर काण्ड में आक्रमणकारियों की मदद कर रहे हैं ।

मुझसे रहा नहीं गया, मैंने तुरन्त कहा मंत्री जी आप किसी अन्धे आदमी को भेजकर साल्हेपुर काण्ड की जाँच करावें और वह अपनी अंधी आँखों से टटोलकर जो बतावे वही रिपोर्ट यदि आप देख लें तो भी सत्यता आपके सामने आ जावेगी । तब तक मैं चाहता हूँ, आप पुलिस बल व जिला प्रशासन को तत्काल आदेश दें कि अग्नि काण्ड से पीड़ित लोगों को राहत कार्य और घायलों को उपचार की व्यवस्था तत्काल कराई जावे । तथा वैधानिक कार्यवाही कराकर इस वीभत्स काण्ड के जिम्मेदार आततायियों को दण्डित करान का कष्ट करें ।

मेरे इस प्रयास से साल्हेपुर काण्ड के लोगों को तत्काल राहत व्यवस्था की गई और अभियुक्तों के खिलाफ मुकदमा चला जिसमें अदालत ने अभियुक्तों को कारावास की सजायें दीं ।

यह जानते हुए कि यह लड़ाई मँहगी पड़ेगी फिर भी इस जोखिम को उठाकर अपने सही कर्तव्य का पालन किया ।

करघा एसोसिएशन का गठन

जिस समय अंग्रेजों ने भारत को अपने अधीन किया उन्होंने यहाँ के सारे उद्योगों पर परोक्ष रूप में हमला किया। जिसमें भारत की शिल्पकला व वस्त्र उद्योग प्रभावित हुआ। यहाँ पर मिलों का कपड़ा आया जो हस्त निर्मित कपड़े से सस्ता पड़ता था। इसलिए उसे लोग खरीदने लगे इससे यहाँ का बुनकर बेकार होकर रोजी विहीन हुआ। उधर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हर चीज में भीषण मँहगाई आई जिससे कपड़े की और गहन समस्या

श्री कुँवरलाल

पैदा हुई। इस कच्चे धागे की भी किल्लत पैदा हुई जिससे यहाँ का बुनकर कुछ मोटा-झोटा कपड़ा बुनकर अपना पेट पालता था। इस कच्चे धागे की कमी के कारण बुनकर बेहद परेशान हुआ। कच्चे धागे (सूत) पर उस समय राशनिंग की व्यवस्था की गई जिसका नाजायज फायदा उस समय सरकारी कर्मचारी और कुछ दलाल उठाने लगे जिससे ग्रामीण अँचल का बुनकर बेहद परेशान हो रहा था। सन् १९४५-४६ की बात है, सूत की चालीस रुपये

वाली गड्डी १०० रुपये से लेकर डेढ़-दो सौ रुपये तक में बिकने लगी।

मैं एक दिन कचहरी के सामने के पार्क के पास से गुजरा देखा सैकड़ों की संख्या में देहात के बुनकर वहाँ पर पड़े थे मैंने पूछा कि कहो भाई क्या १०७/११७ के मुल्जिम हो गये हो ? तो लोगों ने दुखी स्वरों में कहा कि १०७/११७ के मुल्जिम नहीं पेट के शिकार हो रहे हैं। वैसे तो हमारा पेशा अँग्रेजों ने मिलों का कपड़ा लाकर उजाड़ ही दिया है। जो रहा था वह अब सूत न मिलने से चौपट है, अब हम लोग कहीं के नहीं रहे परिवार के भूखों मरने की नौबत आ रही है।

सैकड़ों बुनकरों की मर्म भरी वेदना की आवाज पड़ते ही मानों मेरे दिल को किसी ने कचोट लिया हो, मैंने तुरन्त आश्वासन दिया कि मैं आप की इस वेदना से आहत हुआ हूँ। मैं इसका इलाज करूँगा।

मैं उस समय काँग्रेस का एक सक्रिय कार्यकर्ता था, इसलिए मैं बुनकरों की आहत, वेदना भरी आहों की अपने नेता माननीय बेनी भैया (श्री बेनीसिंह अवस्थी) के पास ले गया और सप्लाई आफिस और काला धन्धा करने वालों की कारगुजारियों से बेनी भैया को अवगत कराया। जन समस्याओं के निराकरण के लिये ही जन्मे श्री बेनीसिंह जी ने मुझे उसी समय एक बुनकरों की समिति बनाने के लिये प्रेरित किया और कहा कि तुम समिति बनाकर तैयार करो मैं समस्या का निदान तत्काल करा दूँगा।

मैंने श्री अवस्थी जी के निर्देश का पालन किया और कचहरी के सामने उसी पार्क में पहुँचा जहाँ पर बुनकर सूत की गड्डी पाने के लिये डेरा डाले भूखे प्यासे पड़े थे। मैंने वहीं पर एक लिस्ट तैयार की और निम्न लोगों को उसमें शामिल किया।

(१) सर्वश्री कुँवर लाल ढुकुवापुर कुढ़नी त. घाटमपुर (२) तेजालाल (३) श्री सीताराम (४) श्री मेवालाल निवासी ग्राम गढ़ मूसानगर (५) श्री रामरतन ग्राम रवाईपुर

(६) श्री रामसेवक नि. बरीपाल (७) श्री रामअधार नि. बरीपाल (८) श्री शिवप्रसाद भूषण निवासी अमरौधा (९) श्री जमना प्रसाद निवासी भदरस (१०) श्री घसीटे लाल निवासी गेदामऊ (११) श्री रामसनेही नि. नसीरपुर (१२) श्री मक्का नि. दिब्बा निवादा (१३) श्री रामप्रसाद नि. दिब्बा निवादा (१४) श्री रामलाल कमलवंशी नि. बनीपारा (१५) श्री श्याम लाल नि. बनीपारा (१६) श्री रामसुमेर भारतीय नि. अकबरपुर (१७) श्री मथुरा प्रसाद नि. रंजीतपुर (१८) श्री इन्दल नि. राजपुर बिल्हौर (१९) श्री जयराम नि. फुफुवार (२०) श्री पराग (२१) श्री भगावन नि. नौगवाँ गौतम (२२) श्री भजनलाल उर्फ भजनू नि. पूरा ।

श्री सी० एल० आर्या

उपरोक्त के साथ अन्य लोगों को शामिल कर एक एसोसियेशन का गठन मैंने पं. बेनीसिंह जी के आदेशानुसार कर दिया। इसके बाद श्री अवस्थी जी ने अपने प्रभाव से मुझे जिलापूर्ति कार्यालय से राशन कार्ड दिलाना शुरू कर दिया। कर्घा एसोसियेशन की ओर से जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय तिलकहाल में दो लिपिकों को रक्खा गया जो राशन कार्ड में नाम पता लिखकर

तैयार करते थे। उन कार्डों पर अपर जिला पूर्ति कार्यालय के सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर होकर सील लगकर कार्ड हमारी एसोसियेशन को मिल जाते थे, जिन्हें हम लोग सम्बन्धित लोगों को वितरित कर देते थे। इन्हीं राशन कार्डों के मार्फत बुनकरों को सूत की

श्री भीमसेन

गड्डी प्राप्त होने लगी। जिला पूर्ति कार्यालय की मारा मारी खतम हो गई और जो बुनकरों को सूत की गड्डी के नाम पर ठगा जाता था बह ठगी भी समाप्त हो गई, कर्घा एसोसियशन के इस कार्य की सराहना होने लगी। यह कार्य उस समय कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने में काफी सहायक सिद्ध हुआ।

भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ का गठन

अन्याय अत्याचारों का विरोध करने तथा भूमिहीन ग्रामीण खेतिहर मजदूरों की समस्याओं के निराकरण के लिये मैं अपनी किशोरावस्था से चिंतित रहता था। मेरा जन्म व पालन पोषण जब हुआ उस समय देश में राजे रजवाड़ों के साथ गाँवों में जमीनदारों का शासन था। स्याह को सफेद व सफेद को स्याह कहलाने का हक जमीनदार को था, जमीनदार के आतंकवादी आचरणों का अनुसरण कर इस वर्ग के लोगों पर अन्याय करने का अपना जन्मसिद्ध अधिकार भूमिपति भी समझते थे। गाँवों में प्राय: भूमिहीनों को भूपति यह धमकी दे देते थे कि देखें बेटा हगोगे कहाँ, मेरी मेढ़ से निकले तो हाथ-पाँव से हाथ धोना पड़ेंगे।

मेढ़ों से निकलने पर तो हाथ-पैर तोड़ देने की अनेकों घटनायें उस काल की मेरे सामने आज भी चित्रित हो जाती हैं, यह तो साधारण बात थी, साथ ही कुछ घटनायें इस प्रकार की भी सामने आयीं कि यदि किसी भूमिहीन खेतिहर मजदूर अछूत ने किसी जमीनदार के खेत में पाखाना कर दिया और जमीनदार उससे नाराज है, तो उसे वह अपना पाखाना भी उठाना पड़ा।

इस प्रकार की घटनाओं से मेरा दिल उद्वेलित होता रहता था और इस अन्याय अत्याचार से शोषित वर्ग को मुक्ति दिलाने की बात सोचता रहता था। सन् ९६९ में जब मैं पुनः विधान सभा सदस्य चुना गया तो मेरे मन में यह भावना जागृत हुई कि मैं इस वर्ग का एक संगठन बनाकर तैयार करूँ और संघर्ष के लिये मैदान में कूद पड़ूँ इस मामले में गहन विचार विमर्श के पश्चात् मैंने "भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ" का गठन करने का निश्चय किया। इस मामले में पूर्व विधायक और तत्कालीन जिला

काँग्रेस कमेटी देहात के महामंत्री श्री राधेश्याम ने मेरा जमकर साथ दिया। विधान तैयार हुआ जिसमें यह तय हुआ कि इस संगठन का कार्य कानपुर से प्रारम्भ हो और इसे प्रदेश व्यापी बनाया जावे, श्री राधेश्याम इस समिति के मेरे साथ सह-संयोजक हुये संगठन का कार्य प्रारम्भ हुआ। माँगपत्र तैयार हुआ और तय हुआ कि भूमिहीन खेतिहर मजदूरों का प्रदर्शन तहसील स्तर से प्रारम्भ किये जावें और देहात की तहसीलों पर प्रदर्शन के बाद नगर में एक जोरदार प्रदर्शन किया जावे जिसकी आवाज शासन तक पहुँचे।

योजना बनते तैयारी होते सन् १९७४ आया, मैं चुनाव में पराजित हुआ तो पूरा समय इस पुण्य कार्य के लिये मिला। प्रदर्शनों की तैयारी के लिये तथा माँगपत्र तैयार करने के लिये जिले के प्रत्येक ब्लाक से भूमिहीनों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया गया। बैठक में माँगपत्र में मुख्य माँग यह रक्खी गई कि सरकार गाँव समाज की बचत भूमि से भूमिहीनों को भूमि आवंटित करे ताकि जमीनदारों की यह धमकी खतम हो कि बच्चू "हगोगे कहाँ।" इस संघ का मुख्य नारा था कि, "भूमिहीन खेतिहर मजदूर भारत की आँखों का नूर", "जो हल जोते उसे दो धरती", "मिट्टी से सोना पैदा करने वाले का सम्मान करो", "सोने को मिट्टी करने वालों का अपमान करो" इन नारों के साथ तहसीलों पर प्रदर्शन हुए खेतिहर मजदूरों में जोश पैदा हुआ। अधिकारियों के कान सतर हुये इसी बीच एक विशाल प्रदर्शन कानपुर मुख्यालय पर हुआ उस समय प्रदर्शनकारियों का मेघराज ने स्वागत किया जोर की बारिस हुई। उसी बरसते पानी में हजारों की संख्या में लोगों ने अपनी माँगों के समर्थन में जिलाधिकारी आवास पर अपने नारों की बुलन्दी से शासन के कान खोल दिये। तत्कालीन मुख्यमन्त्री मा० श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा ने इस पर एक समिति बैठाई और उन्होंने मेरी उन .ांगों के आधार पर गाँव समाज की बंजर भूमि को भूमिहीन खेतिहर मजदूरों में वितरित करने के

आदेश दिये, यही नहीं हमारी आवाज उस समय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी तक पहुँची उन्होंने इस पर विशेष अमल किया और खेती के साथ-साथ आवास की भूमि के भी पट्टे करने सम्बन्धी भारत सरकार ने योजना बनाई जिसके क्रियान्वयन का महत्त्व प्रदेश सरकारों को दिया गया।

इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा जी ने कानपुर जनपद और खीरी लखीमपुर जनपद में जिला भूमि प्रबन्ध समितियों का गठन किया। जिसके परिणामस्वरूप ही कानपुर जनपद की भूमि प्रबन्ध समिति में हमारे इस आदोलन के सह संयोजक श्री राधेश्याम को सदस्य मनोनीत किया गया। श्री राधेश्याम ने इस कार्य में विशेष रुचि ली और जिले भर में घूम-घूम कर इस कार्य को देखा। हमारे इस संगठन में उस समय इतनी गति थी कि श्री राधेश्याम के सतर्क निरीक्षण कार्य से राजस्व विभाग के तहसीलदार स्तर तक के अधिकारी और कर्मचारी निलम्बित हुए। हमारे इस संगठन को प्रदेश सरकार के तत्कालीन राजस्व मंत्री मा० श्री स्वामी प्रसाद सिंह ने काफी सराहा और उन्होंने भूमिहीन खेतिहर मज-दूरों को भूमि आवन्टन का कार्य एक आंदोलन के रूप में चलाया।

मुझे बड़ी आत्मशांति मिलती है कि मेरे द्वारा गठित इस संगठन के सुझावों व माँगों के आधार पर ही इस वर्ग के लोगों को भूमि आवन्टन का कार्य प्रारम्भ हुआ जिससे चाहे बिसुवों में ही सही किन्तु इस वर्ग के लोगों को जमीनें मिलीं और परिणाम-स्वरूप आज कोई इस वर्ग के लोगों को हगने के लिये नहीं तरसा सकता है। मालदार नहीं तो मान वाले बन गये।

मेरे साथी तथा सहयोगी

प्रिय पाठकगण !

मैं अपनी इस लघु कृति में अपने कुछ अग्रज बुजुर्गों, साथियों, सहयोगियों का संक्षिप्त चित्रण करना अपना परम सौभाग्य समझता हूँ। पाठकगण मेरी इस भावना को अन्यत्र न लें, मात्र मैं इसलिये इन सबको साथ ले रहा हूँ, क्योंकि मुझे कभी एकाकी जीवन पसन्द नहीं रहा है। मैं सदैव साथियों के साथ रहा हूँ, मरणोपरांत मैं इस पुस्तक में साथियों के साथ रहकर सुख और शांति का अनुभव करता रहूँ यही मेरी कामना है।

मैं अपने अग्रज मार्गदर्शक राजनैतिक गुरु श्रद्धेय स्व. पं. बेनीसिंह जी व श्रद्धेय स्व. ठाकुर जंगबहादुर सिंह की वन्दना मैं पहले ही कर चुका हूँ। अब अन्य अग्रजों सहयोगियों का भी संक्षिप्त परिचय लिखना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ।

श्री रामदुलारे मिश्र

पूर्व विधायक, पूर्व अध्यक्ष जिला परिषद व
जिला कांग्रेस कानपुर

मिश्र जी कानपुर के वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी, सादगी के पुजारी और निर्बल वर्ग के मसीहा थे। आजादी की लड़ाई में कई बार कठोर कारावास हुआ। १२ बेतों की सजा दी गई। फिर भी अंग्रेजों के सामने नतमस्तक न होने वाले श्री मिश्र का सादा जीवन उच्च विचार था। वह कभी पद लोलुप नहीं रहे, हाँ जब कभी चुनाव के मैदान में उन्हें किसी ने पछाड़ने का साहस किया तो उन्होंने राजनैतिक ढंग से बदला लिया। श्री मिश्र ३ बार

विधान सभा सदस्य रहे और अंत में वह कानपुर जिला परिषद के अध्यक्ष भी रहे, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहकर उन्होंने जिले का कांग्रेस संगठन सुन्दर ढंग से चलाया। श्री मिश्र जी के सानिध्य में रहकर मुझे विधान सभा और कांग्रेस संगठन में कार्य करने का अवसर मिला। स्वभाव से कभी न हँसने वाले श्री मिश्र का दिल असहायों के लिये सदैव खुला रहता था। मिश्र जी स्वभाव से निर्धन असहाय की सेवा में अधिक रुचि रखते थे। आततायी जमीनदार से समझौता न करके उसे वैधानिक दण्ड दिलाने में गौरव का अनुभव करते थे।

श्री जमना नारायण शुक्ल
पूर्व अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी
कानपुर

श्री जमना नारायण जी के साथ मुझे काम करने का काफी समय मिला। स्वच्छता के पुजारी श्री शुक्ल के जितने वस्त्र साफ रहते थे, उतने ही वह दिल के भी साफ थे। संघर्ष कर संकटों का सामना उनका स्वभाव था। हम लोग एक साथ मिल कर जिस निष्ठा और लगन से जन सेवा करते थे वह आज मात्र यादें ही रह गई हैं, हम लोग तिलक हाल में रहकर शिवाले के सामने की मस्जिद की दूकान के पराठे जो रिक्शा वालों के लिये ही विशेष तौर पर दूकान थी, को खाकर भी जन सेवा में गौरव का अनुभव करते थे।

श्री शुक्ल मेरे जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष पद से हटने के बाद अध्यक्ष हुये थे, उन्होंने जिस उत्साह और लगन से जिला कांग्रेस कमेटी का संचालन कर कांग्रेस संगठन को बल दिया वह एक मिशाल है। दो बार विधान सभा का कांग्रेस टिकट भी सरसौल से आपको मिला किंतु आस्तीन के सांपों के कारण आप को पराजय का मुँह देखना पड़ा। आज भी पुराना कांग्रेस जन आप को याद कर अपनी आँखें नम कर लेता है।

पं० गंगा सहाय चौबे

आज अचानक एक लम्बे अरसे के बाद अतीत का वह शुभ दिन याद आ गया जब १५ नवम्बर १९३६ ई. को मैं कानपुर कांग्रेस कमेटी के कार्यालय तिलक हाल आया था। क्योंकि मेरे राज-नैतिक गुरु श्रीकृष्ण प्रसाद अग्नि ने फरवरी सन् १९३७ में असेम्बली चुनाव के पूर्व की तैयारी में सहायक कार्यकर्ता के रूप में बुला लिया था।

तिलक हाल आने पर प्रातः स्मरणीय श्री गंगा सहाय चौबे, श्री बेनी सिंह अवस्थी तथा शहर कांग्रेस कमेटी में भाई हमीद खां के दर्शन हुए। श्री गंगा सहाय चौबे को मैंने पिता तुल्य पाया उनका पुत्रवत् स्नेह मुझे सदा याद रहेगा। श्री बेनीसिंह अवस्थी नेता रूप में बड़े भाई के तुल्य थे जिनका स्नेह तथा शुद्ध साफ दिशा निर्देशन मेरे सरीखे मूक विद्यार्थी के लिये पथ प्रदर्शन का काम करता रहा। इसी प्रकार भाई हमीद खाँ का भी बड़े भाई जैसा व्यवहार था। इनमें से कुछ के संबंध में पिछले संस्मरणों का उल्लेख करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

स्व. पं. गंगा सहाय चौबे जिला फर्रुखाबाद के सौरिख ग्राम के निवासी थे। कानपुर म्युनिस्पिल बोर्ड में एकाउन्टेन्ट थे। वे अदम्य साहस तथा निर्भीक व्यक्तित्व के नेता थे। जनसाधारण के दुख-दर्द को अपना दुख मानकर सार्वजनिक सेवा में विशेष रुचि लेते थे। अपने कार्यकाल के कारनामे तथा मुआइने आदि के समय प्रदर्शित अपनी साहसपूर्ण बहादुरी का जिक्र किया करते थे। जिससे हम साधारण कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊँचा रहता था और उनके स्मरण मात्र से सदा प्रेरणा मिलती रहती थी।

श्री गंगा सहाय चौबे वैसे निवासी तो फर्रुखाबाद जिले के थे किन्तु उन्होंने अपनी राजनैतिक गतिविधि का क्षेत्र कानपुर बनाया था। अपनी नौकरी त्यागने के बाद से वे राजनीति में छा गये और सदा दीन दुखी पीड़ितों के दुख दर्द के निवारण हेतु प्रयत्नशील रहे।

८ फरवरी १९३७ ई. को उत्तर प्रदेश असेम्बली का आम चुनाव हुआ जिसमें उनका मुकाबला सर जे पी. श्रीवास्तव व लेडी कैलाश सरीखे पूँजीपति व अँग्रेज परस्तों जिन्होंने चुनाव व्यवस्था में पानी की तरह पैसा बहाया। उनके मुकाबले में काँग्रेस के पास धन तथा साधनों का पूरा अभाव था। सिर्फ जन बल का समर्थन अवश्य था जिसके लिये काँग्रेस के अध्यक्ष व मन्त्री की हैसियत से गंगा सहाय चौबे तथा श्री बेनीसिंह आदि नेताओं ने गाँव-गाँव दौड़े करके आजादी की अलख जगाने का कार्य किया तथा निरन्तर जन-जन में चेतना पैदा की और जमीनदारों की ज्यादतियों तथा नौकरशाही के जुल्मों का मुकाबला निर्भीकता से करने का साहस दिलाया और हिम्मत बढ़ाई।

अँग्रेजी शासन में जमीनदारों के जुल्म व अत्याचारों का जनता में आतंक व्याप्त था। भय के कारण लोग बात कहने तक की हिम्मत नहीं करते थे। इन नेताओं (चौबे जी व बेनीसिंह) ने गाँव-गाँव का सालों दौड़ा किया और सदा संपर्क बनाये रहे जिससे लोगों में निर्भीकता आई और समय-बेसमय आने वाले संकटों का सामना करने में हिम्मत करने लगे।

फरवरी का असेम्बली चुनाव भी अजीब तरह का हुआ। काँग्रेस ने चन्दा करके पोलिंग स्टेशनों पर गुड़ व भुने चने के बोरे रखवाये थे ताकि आने वाले वोटर गुड़ चना खाकर पानी तो पी सकें जबकि पूँजीपतियों ने मिठाई पूड़ी व रुपयों की थैलियाँ खोल रक्खी थीं। किन्तु उस समय गाँधी व नेहरू की काँग्रेस के प्रति जन साधारण के दिलों में इतनी श्रद्धा थी कि उसका गुड़ चना भी खर्च कराना उचित नहीं समझा इसलिए अधिकाँश वोटर अपना चबेना अपने साथ लाये थे किन्तु काँग्रेस का गुड़ चना तक लेना और खर्च का बोझ बढ़ाना उचित नहीं समझा। इस प्रकार की भावना भरने तथा जनता का स्नेह प्राप्त करने का श्रेय श्री चौबे जी तथा उनके सहयोगियों पर जाता है।

फरवरी ३७ के चुनाव के बाद काँग्रेस की विजय और प्रदेश में पं. गोविन्द बल्लभ पन्त के नेतृत्व में सरकार बन जाने के बाद अँग्रेज सरकार परस्त विशेषकर जमीनदार वर्ग बौखला गया था। किसानों पर दिन प्रतिदिन आतंक बढ़ने लगे थे। जि. कांग्रेस में पं. गंगा सहाय चौबे अध्यक्ष तथा श्री बेनीसिंह अवस्थी मन्त्री थे। प्रतिदिन सताये हुये किसान हजारों की संख्या में काँग्रेस कार्यालय आने लगे। मैं उस समय जिला काँग्रेस कमेटी का आफिस मन्त्री था।

किसी-किसी दिन तो दो-दो हजार तृषित व प्रताड़ित किसान अपनी शिकायतें लेकर तिलक हाल आ जाते थे। उनकी करुण कथायें सुनने व अधिकारियों से मिलकर उनके समाधान में आदरणीय चौबे जी तथा हम सभी जुटे रहते थे और जमीन-दारों के कुत्सित मन्सूबों को ध्वस्त करते थे।

श्री गंगा सहाय चौबे का घर द्वार सब कुछ तिलक हाल ही था। सदा यहीं रहते थे और दीन दुखियों के कष्ट निवारण में योगदान ही अपना धर्म समझते थे। अपने छोटे भाई गौरीशंकर चौबे के मनाने पर भी छोड़कर यहाँ से नहीं गये। सर्वश्री एम. एन राय व बटकेश्वर दत्त आदि क्रांतिकारियों के साथ रिहायी में छूटकर आये क्रांतिकारी श्री रागेन्द्र दत्त निगम भी जेल से छूटने के बाद चौबे जी के साथ ही तिलक हाल के ऊपरी कक्ष में रहते थे।

तिलक व्यायाम शाला का प्रबन्ध स्वयं देखते थे। तिलक हाल में पहले व्यायाम शाला चलता था उसके लिये चौबे जी ने अशोक नगर में जगह एलाट कराई और उस पर धीरे-धीरे इमारत खड़ी करवा दी। आज वह संस्था (तिलक व्यायाम शाला) जो उन्हीं की देन है जो अच्छी तरह चल रही है। जिसमें बैठक आदि के अलावा ऊपरी कक्ष में एक सार्वजनिक पुस्तकालय भी अपने स्वतन्त्र प्रबन्ध के साथ चल रहा है।

श्री गंगा सहाय चौबे गम्भीर विचारधारा के समर्पित देशभक्त थे। उनका सहज स्वभाव हर एक को आकर्षित करता

था। यहाँ पर एक संस्मरण लिख देना उचित समझता हूँ।

वैसे सदा चौबे जी का स्नेह हम सरीखे नवजवानों पर पुत्रवत् रहता था। एक बार मैं बीमार पड़ गया, बुखार लगातार कई दिन आया। चौबे जी ने डा. एस. एन. मिश्रा मेस्टन रोड से दवा लाकर स्वयं अपने हाथों दी और पानी पिलाया। ऐसा स्नेह जैसे बाप अपने बच्चे का पालन कर रहा हो। यह विशेषता उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

स्वभाव के कितने सरल थे उसकी एक मिसाल देता हूँ कि जमीनदारों की ज्यादतियों की जाँच आदि में अक्सर देहात के दौड़े पर चौबे जी चले जाते थे। दो-दो तीन दिन तक वापस नहीं लौट पाते थे। कई बार ऐसा हुआ कि वे १०-११ बजे रात तक नहीं आये। उनका बिस्तर बन्द तिलक हाल में ही रहता था। रक्खा हुआ पाकर हममें से किसी ने अगर बिछा लिया और सो गया, उसके बाद अगर वे १२-१ बजे रात में वापस लौटे तो पहले तो अपने बिस्तरे को खोजा जब देखा कोई उस पर लेटा है तो उसे जगाते नहीं थे बल्कि स्वयं अपना कुर्ता उतार कर तिलक हाल में ऊपर दरवाजे की देहरी पर सिर रखकर फर्श पर बिना कुछ बिछाये ही लेट जाते थे। सुबह उन्हें उस दशा में सोता देख हम लोग स्तब्ध रह जाते थे। किन्तु जगने पर दिन में वह किसी से कुछ भी नहीं कहते थे। उनकी इस सहृद-यता और सहिष्णुता का हम लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि भविष्य में हम लोगों ने उनका बिस्तर सुरक्षित रखना ही उचित समझा ताकि उन्हें भविष्य में कष्ट न उठाना पड़े। उसके बाद किसी ने उसे नहीं बिछाया।

श्री गंगा सहाय चौबे एक बार संभवतः फैजाबाद से उप चुनाव में विधायक भी हुये थे किन्तु उन पर विधायक होने का कोई विशेष प्रभाव नहीं दिखाई दिया जैसा कि आजकल दिखाई देता है। वे आडम्बर तथा पाखण्ड व बनावट से कोसों दूर रहते थे तिलक व्यायामशाला बन जाने पर वह वहीं रहने लगे थे। राज-नैतिक परिवर्तनों में कांग्रेस छोड़कर उन्होंने (पी. एस. पी.) प्रजा

सोशलिस्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली थी, जिसमें नये-नये पार्टी के लोगों ने खासकर शहर की पी. एस. पी. जिसके नेता श्री बलवान सिंह यादव थे, ने उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था। बैठक में उनकी छीछालेदर करने की कोशिश की गई। कार्यवाही समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई जिसे मैंने भी पढ़ा उनके साथ हुए व्यवहार का बड़ा कष्ट हुआ।

मैंने ढूँढ़कर चौबे जी से मुलाकात की और अनुरोध किया कि आप कहाँ उन लोगों के साथ फँस गये उन लोगों के साथ आपकी कैसे पटेगी। वे हर समय जलील करने की कोशिश करेंगे। इससे अच्छा होगा कि आप पहले काँग्रेस में जहाँ थे वहीं आ जायें वहाँ लोग कम से कम आपका सदा अदब तो करते रहेंगे।

इस पर चौबे जी ने जो टिप्पणी की थी वह मुझे याद है- "कि हमारे पुराने राजनैतिक काँग्रेसी साथियों में दुष्ट से दुष्ट यानी खराब से खराब व्यक्ति भी आजकल की इन पार्टियों के भले से भले आदमी से लाख गुना अच्छा है।"

इसके बाद उन्होंने पी. एस. पी. छोड़ दी और भ्रष्टाचार उन्मूलन व व्यायाम शाला आदि के संचालन में ही अपना समय देने लगे थे।

श्री गंगा सहाय चौबे सम्मेलनों में प्रायः भाग लेते थे। भारत स्काउट गाइड का अखिल भारतीय सम्मेलन दक्षिण भारत संभवता बँगलौर में होने वाला था। चौबे जी की हार्दिक इच्छा थी कि हम भी उनके साथ सम्मेलन में चलें इसलिये रेलवे के कन्सेशन फार्म जिसमें आधे किराये में दोनों तरफ के सफर की सुविधा मिलती थी, मँगवाए १०-१२ आदमियों का एक समूह जाना था। फार्म भर लिये गये। पास कराना था उसी बीच एकाएक चौबे जी को लकवा टाइप का आक्रमण हो गया। फोन आने पर मैं व पं. चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष शहर काँ० क. वहाँ पहुँचे। स्थानीय डाक्टर की सलाह पर उन्हें हैलट अस्पताल

में भर्ती कराया गया। जहाँ काफी संघर्ष के बाद उनका प्राणांत हो गया।

प्रतिभा के धनी पं. गंगा सहाय चौबे की कर्मठता व आदर्शों को हम समय-समय पर याद करते रहते हैं। उनके चरणों में नत मस्तक हो अपना प्रणाम सर्मपित करते हैं।

श्री सूरज प्रसाद शुक्ल

वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी

मूसानगर, कानपुर देहात

मूसा नगर एक ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। देवासुर संग्राम की कड़ी भी मूसा नगर से जुड़ी है। असुरों के गुरु शुक्राचार्य की यह तपो भूमि है। शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का ऐतिहासिक तालाब यहीं पर आज भी विद्यमान है। यह तालाब वर्ष में एक बार यहीं के प्राचीन इतिहास की याद उस समय उजागर करता है· जब गणेश चतुर्थी को यहाँ पर विराट मेले और दीपदान का कार्यक्रम होता है। इस तपो भूमि पर जब आवश्यकता पड़ी है, राष्ट्रीय धारा से जुड़ने वाले व्यक्तियों ने जन्म लेकर इस तपो भूमि की विस्मृत हो रही मुर्झाई ऐतिहासिक घटनाओं का सिंचन कर फिर उसमें नई कोपलें पैदा की हैं।

स्वर्गीय श्री सूरज प्रसाद जी शुक्ला का जन्म इस कस्बे के इतिहास में हिंसा को समाप्त कर देश प्रेम, राष्ट्रीयता का सिंचन करने के लिये ही हुआ था। इस क्षेत्र के दुखी, शोषित, पीड़ित लोगों के लिये श्री शुक्ला एक महामानव के रूप में साबित हुए, अन्याय, अत्याचार का जमकर विरोध करना मानो उनकी छठी में रक्खा गया हो, उन्होंने जिस प्रकार देश की आजादी की लड़ाई में अपनी जवानी भी न्योछावर की, आजादी के बाद उन्होंने अपना सारा जीवन इस क्षेत्र की जनता के लिये समर्पित कर दिया था।

संगठन क्षमता में श्री शुक्ल का कोई जोड़ नहीं था। जब भी चुनावी बिगुल बजता श्री शुक्ला अपनी सेना के साथ युद्ध मैदान में कूद पड़ते और अपने क्षेत्र में कभी पराजित नहीं हुए। श्री शुक्ला अंत तक अत्याचारों का विरोध करते रहे, अंत में अत्याचारियों के कलुषित मंसूबे सफल हुए, उन्होंने उन्हें सदैव के लिये सुला दिया किंतु उनके वसूलों को आज भी याद कर इस क्षेत्र के निर्बल वर्ग लोग दो आँसू अवश्य बहा लेते हैं। देश के त्याग के बलिदानी इतिहास में जहाँ तमाम महापुरुषों का नाम अमर रहेगा वहीं श्री शुक्ल का नाम कानपुर के बलिदानियों में अजर अमर रहेगा। मैं अपनी लेखनी द्वारा श्री सूरज प्रसाद शुक्ल की वंदना करता हूँ। वहीं इनके साथी सहयोगी सेनानी श्री मेवालाल जी तार्किक व श्री शिवरतन लाल गुप्ता की कुर्बानियों और त्याग की वंदना भी करता हूँ।

श्री बृजनारायण दुबे

ग्राम–रेउना, ब्लाक–घाटमपुर

श्री दुबे जैसे निष्ठावान, ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति साथी के रूप में मिलना एक परम सौभाग्य की बात होती है, श्री दुबे जी मुझे एक सहयोगी के रूप में मिले इसमें मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ। श्री द्विवेदी एक ऐसे नेता हैं जिन्हें विकास का पर्याय कहा जावे तो अतिशयोक्ति न होगी। आज ग्रामसभा रेउना में जो भी चमत्कार है उस सबमें श्री बृजनारायण जी प्रतिबिम्बित होते हैं, श्री द्विवेदी की निष्ठा लगन और विकास कार्यों की रुचि से प्रभावित हो तत्कालीन सार्वजनिक निर्माण मंत्री मा. लक्ष्मीशंकर यादव ने ग्राम रेउना को मुगल रोड से जोड़ने की घोषणा ग्रा[illegible] रेउना की जनसभा में ही की थी। स्मरणीय है कि श्री द्विवेदी ने अपनी गाँव सभा से रेउना से नवेड़ी तक ७ किलोमीटर मार्ग पर मिट्टी, पुलिया और कंकड़ का एक कोड कर सार्वजनिक सभा में यह सड़क सार्वजनिक मंत्री को भेंट की थी।

ग्राम रेउना में चिकित्सालय, पुलिस चौकी, ग्राम समूह पेय जल योजना, बाजार का विस्तार, प्रधान पद के दायित्वों का निर्वाहन कर किया। जिला परिषद सदस्य चुनने के बाद आपने ग्राम रेउना को विकास का केन्द्र बना दिया। शिक्षा सुविधा के लिये आपने इस ग्राम में एक इण्टर कालेज की स्थापना कर इस क्षेत्र के बच्चों को अच्छी एवं सस्ती शिक्षा दिलाने का साधन बनाकर राष्ट्र और समाज को अच्छे होनहार नागरिक प्रदान करने का जो पुनीत कार्य किया है, उससे श्री द्विवेदी का नाम सदैव अजर-अमर रहेगा। श्री द्विवेदी मेरे अभिन्न सहयोगी मित्र के रूप में साबित हुये। उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री मेवालाल उर्फ वीरेन्द्र तार्किक

(अमर स्वतन्त्रता सेनानी)

प्राचीन खोजों के अनुसार इस माँ वसुन्धरा पर अनेक तपोस्थल ऐसे हैं, जहाँ पर त्यागी, बलिदानी और पुरुषार्थी लोग ही जन्म लेते हैं। ऐसा ही तपोस्थल इस कानपुर देहात जनपद में कस्बा मूसानगर है, जहाँ का इतिहास त्यागी-बलिदानी लोगों से भरा है। महान् दानी, पराक्रमी राजा बलि की यह राजधानी रही है। असुर राजा विषपर्वा के गुरु शुक्राचार्य का निवास यहीं पर रहा तथा उस समय शुक्राचार्य यहीं पर आश्रम में शिक्षण कार्य करते थे। देव गुरु बृहस्पति पुत्र कच यहीं पर शुक्राचार्य जी के यहाँ संजीवनी मंत्र सीखने आये थे। यहाँ पर शुक्राचार्य जी की पुत्री देवयानी के नाम से आज भी देवयानी सरोवर विद्यमान है, जिसका एक धार्मिक महत्त्व है।

इसी तपोस्थली पर वीर सेनानी कवि श्री तार्किक ने भी जन्म लेकर इस पवित्र स्थली का नाम अमर किया था। श्री तार्किक के तर्क अकाट्य होते थे। कवि भाव से प्रेरित श्री तार्किक

ने राष्ट्रीय आल्हा नामक एक पुस्तक की रचना की थी, जिसमें उन्होंने सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर १९४७ को हुए स्वतंत्र भारत का चित्रण अपनी वीर रस की भावना से बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। श्री तार्किक ने राष्ट्रीय आल्हा के अलावा आजादी की लड़ाई और कांग्रेस पर कुछ अन्य लघु पुस्तकें लिखी थीं। आम चुनाव में श्री तार्किक जनता के सम्मुख काँग्रेस की नीतियों तथा काँग्रेस के घोषणा-पत्रों को अपनी कवि शैली में बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करते थे, जो बहुत सरल व हृदय-स्पर्शी लोकगीतों के रूप में गाये जाते थे।

यही नहीं श्री तार्किक कवि होने के साथ ही एक कुशल वैद्य भी थे, तमाम अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने घरेलू चिकित्सा प्रणाली को लिखा है।

श्री तार्किक जी ! आपने मुझे त्याग तथा जन सेवा का मार्ग, देश को स्वतंत्र कराकर प्रशस्त किया था, उस पर मैं आपके पग-चिह्नों पर अब तक धैर्य और निष्ठा के साथ चलता रहा किंतु अब थक चुका हूँ। मेरे पैर जो करीब ८३ साल से मेरे शरीर के बोझ को अपने ऊपर लादे जन-सेवा करते रहे वही अब अधिक चलने से इनकार कर रहे हैं। यद्यपि मैं मन से अभी भी थका नहीं हूँ, मन में अभी भी वह जोश है जो आपने मुझे दिया था, किंतु मित्र अब मैं भी आपके साथ आकर विश्राम करना चाहता हूँ। आशा है कि स्वर्ग में आप मुझे भूले नहीं होंगे। आपके जीवन के संबंध में कुछ पंक्तियाँ लिखकर आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्री जगन्नाथ प्रसाद निषाद

(स्वतन्त्रता सेनानी)

निवासी ग्राम कुटरा मकरन्दपुर, कानपुर देहात

श्री निषाद मेरे अभिन्न साथी, सहयोगी और क्रांतिकारी विचारधारा के व्यक्ति थे। जिस प्रकार वह देश की आजादी की

लड़ाई में अँग्रेजों के खिलाफ जेहाद छेड़ने में अग्रिम पंक्ति में रहे, उसी प्रकार निर्धन निर्बल वर्ग की सेवा करने एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों को समूल नष्ट करने के लिये मरते दम तक प्राण-प्रण से जुटे रहे। यद्यपि श्री निषाद पिछड़े वर्ग में जन्मे थे किंतु वह समाज के उत्पीड़ित निर्धन व निर्बल वर्ग के मसीहा थे। सर्वहारा वर्ग के लोग उनको सदैव श्रद्धा से नमन करते थे।

श्री निषाद के जीवन काल के कुछ विशेष संघर्षों को वर्णित कर उनको सच्ची श्रद्धांजलि देना अपना पुनीत कर्तव्य पूरा करना चाहता हूँ।

ग्राम कटरी निवासी ठाकुर वर्रासिह जो बड़े सामंती आतंकी शोषक एवं पेशे से डाकू थे, इसी प्रकार ग्राम गड़ाथा निवासी ठाकुर अकबर सिंह जो उत्तर प्रदेश के मशहूर डाकुओं में थे। इनके अन्याय अत्याचारों का भी निषाद ने डटकर मुकाबला कर इन लोगों का मान मर्दन किया।

ग्राम हलिया निवासी श्री मन्नीलाल पांडेय जो बड़े जमीनदार थे इनका भी एक अलग किस्म का आतंक व अत्याचार था श्री पांडेय अपने को कृष्ण कहकर गरीबों की माँ-बहनों को गोपिका मानकर उनके सतीत्त्व तक से खिलवाड़ करने पर उतारू रहते थे। इनके खिलाफ भी श्री निषाद ने अपनी अहिंसात्मक तलवार उठाई और उसकी पैनी धार से पांडेय के सामंती मनसूबों का कत्ल किया।

यह सारी घटनायें तो श्री निषाद के जीवन में उस समय घटीं जब वह देश की आजादी के दीवाने बन आजादी पाई उसके बाद जवानी के जोश में संघर्ष करते रहे। किंतु वृद्धावस्था में भी उनके विचार एक संघर्षशील नवयुवक से कम नहीं रहे, जिसके परिणामस्वरूप ही जनपद हमीरपुर के आततायियों से लोहा लेते रहे।

ग्राम जलाला-भौली जनपद हमीरपुर में ठकुरी अन्याय अनाचार के लिए प्रसिद्ध थे। जिनका विरोध करके श्री निषाद ने

ग्राम भौली-जलाला के गरीबों के पक्ष में अपनी अहिंसा रूपी तलवार उठाई। जिसके विरोध में वहाँ के आततताई दरिंदों ने इस गाँधी के पुजारी के साथ दरिन्दगी का परिचय दिया उससे मानवता भी थर्रा जाती है।

श्री निषाद को १२ अप्रैल की तपती दोपहर में आतताइयों ने जलाला से पकड़ा और ३ मील जमुना की गर्म बालू की रेत में नंगे पैर चलाया जिससे उनके पैरों की खाल जल जाने से निकल गई तथा अन्य इतनी शारीरिक यातनायें दीं कि जिसे श्री निषाद जैसा ही क्रांतिकारी जिसे गरीबों की सेवा से मोह हो वही सहन कर जीवित रह सकता था। श्री निषाद का डाक्टरी परीक्षण जब हुआ तो उनके शरीर में ६२ चोटें थीं जिसे देखकर लिखने वाला भी सहम गया था। मैं उस घटना को देख चकित रह गया था, और यह समझ गया था कि इतनी यातनायें कोई जीवन से मोही व्यक्ति सहन कर जीवित नहीं रह सकता था। ऐसी यातनायें तो वही व्यक्ति सहन कर जीवित रह सकता है, जो अपने जीवन का मोह त्याग अपना सुख, दुखियों के दुख को दे चुका हो।

श्री जगन्नाथ प्रसाद निषाद

श्री मुरलीधर कुरील
पूर्व विधायक, बिल्हौर

श्री मुरलीधर जी एक सच्चे साथी व सहयोगी के साथ-साथ लोगों के सुख-दुख में सदैव भागीदार रहे हैं। मैं इनका आभारी हूँ। क्योंकि जब मेरा बाल संत सुशील बीमार था उस समय मेरे पास कानपुर में कोई ऐसा स्थान न था, जहाँ मैं सुशील को रखकर इलाज कराता। इस समय श्री कुरील अनवरगंज में रहते थे जब उन्हें यह जानकारी हुई कि मैं पुत्र की व्यथा से व्यथित हूँ, तो उन्होंने मुझे मेरे बिना कहे ही अपने आवास में रक्खा जहाँ रहकर मैं सुशील का इलाज कराता रहा।

श्री कुरील का मेरा अन्दरूनी गहरा सम्बन्ध रहा। राजनीति में इसे जाहिर करना ठीक नहीं था।

जब हम सुशील की बीमारी के समय अनवरगंज में इनके साथ रहते थे, उस समय श्री मुरलीधर दलित वर्ग संघ में थे। मैं काँग्रेस में था। मुरलीधर मेरा तन-मन-धन से सहयोग करते थे।

सहोदर के समान भाँजे श्री भीमसेन

विद्वानों का मत पूर्णतया सत्य है, कि भाई ही नहीं अपितु मित्र रिश्ते-नातेदार भी कभी-कभी ऐसे निकल आते हैं जो सगे सहोदर से भी अधिक वफादार और सहयोगी सिद्ध होते हैं, इसी प्रकार का आचरण हमारी बहन के पुत्र भाँजे श्री भीमसेन का रहा है।

मेरी माता का स्वर्गवास बचपन में ही हो चुका था, इसलिए मेरा पालन-पोषण मेरे बहनोई तथा मेरी बहन ने किया जो प्यार मुझे माँ-बाप से मिलना चाहिये था वह मुझे बहन-बहनोई से मिला। माता जी की मृत्यु के बाद मेरी बहन व बहनोई अपने गाँव डोमन से ढकुआपुर आ बसे। उनसे जो लाड़-प्यार मुझे प्राप्त

हुआ उसमें हमें यह विस्मरण हो गया कि मेरी माता नहीं हैं। मुझे प्राइमरी तक की शिक्षा दिलाई, मैं परीक्षा में केन्द्र में प्रथम आया। इसके बाद मुझे आगे मिडिल की शिक्षा प्रारम्भ कराई उस समय मुझे योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति भी प्राप्त होती रही। इस प्रकार मेरे बहनोई साहब का साया मुझे पिता की तरह प्राप्त हुआ। एक बार बहनोई साहब ने स्वयं चोट खाकर बद-माशों से मुझे बचाया।

भीम तथा मैं दोनों ही सगे भाई के रूप में रहते रहे, जमीन की लड़ाई में मेरे एकमात्र सहयोगी भीम ही रहे, आगे चलकर जब मैंने सामाजिक कुरीतियों, वेट बेगार का विरोध किया उस समय भी भीम ने अपना जीवन अर्पण कर संघर्ष करने में सदैव उद्यत रहे। शादी होने के बाद जीवन यापन के लिये श्री भीम बहू के साथ कानपुर चले आये। कानपुर में काटन मिल में नौकरी की इसके बाद आचार्य मेधार्थी के स्कूल में अध्यापन कार्य किया। इसी बीच रेलवे विभाग में टी. सी. की नौकरी हेतु स्थान रिक्त हुए जिसमें श्री भीम को सेवा करने का अवसर मिल गया, इसके बाद तरक्की हुई और लखनऊ में बाबू के पद पर नियुक्ति हुई। अपने कार्य में दक्ष कर्तव्य परायण श्री भीम ने तरक्की कर आफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट का पद प्राप्त किया। जब इनके सेवा निवृत्त होने की तारीख करीब आई तो खुशी में सगे संबंधियों एवं कार्यालय के साथियों ने स्वागत कर विदाई करने की तारीख ३० नवंबर तय की किंतु संयोगवश उस तिथि के ६ दिन पूर्व ही श्री भीम इस असार संसार से चल बसे।

चूँकि स्वर्गवास सेवाकाल में ही हुआ इसलिये रेलवे विभाग ने एक पुत्र को सेवा का अवसर दिया। यह भी संयोग श्री भीम की निष्ठा त्याग का ही कारण रहा। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में श्री भीम अपने कुछ विचार लिख रहे थे जिन्हें मुझे दिखाकर संस्तुति प्राप्त की थी।

मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि श्री भीम के पुत्रों में

सभी शिक्षित और कार्यों में संलग्न हैं।

श्री भीम मुझसे उम्र में करीब बीस साल छोटे थे किंतु वह अपने हर काम में मुझसे आगे रहते थे। वहाँ भी वह मुझे

श्री भीमसेन पत्नी श्रीमती उषा के साथ

पीछे छोड़कर पहले चले गये, श्री भीम की मृत्यु से मुझे बहुत बड़ा आघात लगा। हम दोनों का रिश्ता तो मामा-भांजे का था,

किंतु थे हम एक दूसरे के सगे भाई के समान पूरक।

प्रिय भीमसेन मेरा मन भी तुम्हारे पास आने के लिए अकुला रहा है किंतु कुछ कार्य अभी पूरे करने हैं जिनकी योजना में तुम्हारी भी भागीदारी थी, तुम्हारी मंशा के अनुरूप ही मैं उन्हें पूरा कर इस असार संसार से विलीन हो तुम्हारे पास आऊँगा। तुम मेरी प्रतीक्षा में व्याकुल मत होना।

भीमसेन का पारिवारिक सजरा

१. श्री जगजीवनराम उर्फ सुरेश कुमार (स्वतन्त्र विचारधारा)
२. रमेश कुमार (रेलवे सर्विस)
३. शारदा पत्नी श्री रमेश कुमार (अपट्रान टी.वी. में सर्विस)
४. महेश चन्द्रा उर्फ मुन्ना (पिता के स्थान पर रेलवे सर्विस)
   अविनाश (महेश-पुत्र)
५. दिनेश कुमार प्रधान (छात्र जीवन)
६. मीना पत्नी श्री महेश चन्द्रा (एम. ए.)
७. कृणाल कुमार आत्मज श्री रमेश
८. ऊषा पत्नी श्री भीमसेन

सभी लड़के शिक्षित हैं पत्नियाँ भी शिक्षित और काम करने में दक्ष हैं।

श्री रमेश व शारदा पुत्र कृणाल

श्री महेश व मीना

श्री दयाराम त्यागी

इनका जन्म ५ मई सन् १९५६ को ग्राम डोमनपुर मजरा अलावलखेड़ा पोस्ट महोली, जिला कानपुर के एक साधनहीन परिवार में हुआ था। अपने ही ग्राम से प्राइमरी परीक्षा तत्पश्चात् महोली व सरसौल से जू हा. स्कूल तथा बकेवर जिला फतेहपुर से १९६२ में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९६३ से १९६६ के मध्य तक कानपुर के कई मिलों में मजदूरी का कार्य करते रहे। २५ अगस्त १९६६ से प्रा. पा. पुरवामीर में अप्रशिक्षित सहायक अध्यापक के रूप में सेवा का अवसर मिला। वर्ष १९६८ में व्यक्तिगत छात्र के रूप में इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा वर्ष १९६९-७० में लल्लू प्रसाद इण्टर कालेज से बी टी. सी. उत्तीर्ण कर १९ अक्टूबर १९७० से प्रा. पा. सरसौल में सहायक अध्यापक के पद पर कार्य किया।

गाँव में अनुसूचित जाति के लिये साइकिल पर चढ़कर जाना, चारपाई पर बैठना, कंधे पर लाठी लेकर चलना, तहमत लगाने में सख्ती से मनाही थी बेगार करनी पड़ती थी। कुछ ही लोग थे जो कम मजदूरी पर काम करते थे। यह गाँव बाहर रास्ते में ही साइकिल पर चढ़ सकते थे। जब यह हाईस्कूल उत्तीर्ण कर चुके थे उसी समय बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर का जीवन चरित्र खूब मन लगाकर कई बार पढ़ चुके थे इसलिये सामाजिक रूढ़ियों का परित्याग अपना ध्येय बना चुके थे यह समझ चुके थे कि अन्याय बरदाश्त करना कायरता है।

अपने सजातीय भाइयों से कहा कि चमड़े के गन्दे काम को बन्द कर दो, पालकी (डोली) मत उठाओ। क्या आप लोगों ने अपने माता-पिता को कन्धे पर उठाकर अर्थात् हाथोंहाथ लेकर उनकी सेवा की है यदि नहीं, तो जो लोग तुम्हें गुलाम बनाये रखना चाहते हैं उनकी पालकी मत उठाओ। गाँव में शिकायत की गई कि मास्टर दयाराम पालकी उठाने से मना करते हैं।

लोगों ने दयाराम से कहा कि हम कहाँ से पालकी उठाने वाले ढूँढ़ने जायँ। मास्टर कुछ पालकी उठाकर कमा लिया करो। तुम्हारे गंगा बाबा पालकी उठाते थे। दयाराम ने उत्तर दिया कि जिस कमाई से अपमान मिलता है उसे मैं धिक्कारता हूँ।

शिक्षा के प्रति लगन थी प्राइवेट बी. ए., एम. ए एलाऊ नहीं था किंतु ऐसे अध्यापक, जिनकी सेवायें ३ वर्ष हो गयी हों, वे अनुमति लेकर व्यक्तिगत छात्र के रूप में कानपुर विश्वविद्यालय से बैठ सकते थे। दयाराम ने वर्ष १९७३ में बी. ए प्रथम वर्ष उत्तीर्ण किया तथा वर्ष १९७४ में बी. ए. फाइनल में साहित्यिक अँग्रेजी में फेल हो गये अतएव वर्ष १९७५ में बी ए. उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात् वर्ष १९७६ में पी. सी. एस. परीक्षा में बैठे किन्तु असफल रहे। वर्ष १९७७ में पुन: पी. सी. एस. परीक्षा में बैठे किंतु इस वर्ष पहले साल से भी कम अंक प्राप्त हुये और असफल रहे। वर्ष १९७६ व १९७७ में राजनीति विज्ञान से एम. ए. उत्तीर्ण कर लिया। वर्ष १९७८ में डी. ए. वी. कालेज कानपुर में एल. एल. बी. में प्रवेश लिया तथा परीक्षा दी, किंतु रिजल्ट अपूर्ण घोषित हुआ। छतिग्रस्त एवं सुखाधिकार की कापी (उत्तर पुस्तिका) कहाँ गयी। कुछ पता नहीं चला और एल. एल. बी. अधूरी ही छोड़ दी। वर्ष १९७८ में यू डी. ए. की उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में आवेदन किया और परीक्षा दी।

भूमि आवंटन में गड़बड़ी की शिकायत राजस्व मन्त्री से की उनसे कहा कि सोमेश्वर इन्जीनियर ब्राह्मण का पट्टा किया गया। सरकारी कर्मचारियों के पट्टे किये गये किंतु दलितों को छोड़ दिया गया है। यह भी कहा कि ग्राम समाज के अनेक शीशम के पेड़ काटे गये हैं जिन पर मा. मन्त्री जी बैठे हैं वे कुर्सियां ग्राम समाज के शीशम के पेड़ों की हैं जिसके दो टिम्बर शिवनारायण लेखपाल महुआ गाँव के घर में पड़े हैं। इस घटना की प्रतिक्रिया स्वरूप ए. डी. एम./एस. डी. एम. का स्थानान्तरण

तथा तत्कालीन तहसीलदार कश्यप नायब तहसीलदार तथा लेख-पाल निलम्बित किये गये थे।

राजाराम कुरील ने कहा कि मेरी भैंस कर्जे के एवज में जमीनदार ने बाँध ली है जिसकी पुष्टि दयाराम के छोटे भाई श्री शिवराम ने की थी। उसी वक्त दयाराम ने मन्त्री जी से कहा कि मेरी साइकिल की रिपोर्ट थाने वालों ने नहीं लिखी। इस पर मा. मन्त्री जी थाने गये और यह कहा कि राजाराम की भैंस आज ही जमींदार से दिलायी जाय। इसके फलस्वरूप उसी रात को पुलिस

श्री दयाराम त्यागी अपने परिवार के साथ

ने राजाराम को भैंस दिलवा दी जो पेपर में प्रकाशित हुआ (जिसकी प्रेस कतरन आज भी मौजूद है।)

इस बीच भूमि आवंटन में गाँव के अनुसूचित वर्ग को छः छः बीघे प्रति बालिग के हिसाब से भूमि मिली। यदि दो भाई बालिग हैं तो १२ बीघा, यदि पिता और दो भाई हैं तो १८-१८ बीघा तक जमीन दी गई। जबकि प्रधान ने अपने रिश्ते-नातेदारों को पट्टे कर दिये थे।

एक समय की बात है सीलिंग की बचत की जमीन की नीलामी थी दयाराम ने ६० रु. की बोली में ३ बीघे जमीन ले ली। दूसरे साल वह जमीन ३०० रुपये की बोली में ली। किंतु

श्री देशराज भतीजे दयाराम

तीसरे साल विजई सिंह ने ३५०-४०० में ले ली क्योंकि वह जमीन उनके खेतों के पास में थी और उन्होंने ग्राम प्रधान को पटाकर

उसका पट्टा करा लिया इस पर दयाराम ने कानपुर सदर तहसील में शिकायत की कि विजयी सिंह आदि सवर्णों के पास पचासों बीघे है जमीन वालों को पट्टे किस नियम से किये गये हैं। जांच में नायब तहसीलदार गाँव में आये और यह कहा कि यह अदालत है आपको जो भी कठिनाई हो बताओ दयाराम ने कहा कि पचासों बीघे वाले सवर्णों को किस आधार पर पट्टे किये जा रहे हैं इसके फलस्वरूप जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी क्षेत्रीय सवर्णों ने दयाराम तथा उनके परिवार का सफाया किये जाने का षडयन्त्र रचा।

इसके दूसरे दिन जब दयाराम गंगा स्नान को जा रहे थे श्री रामपाल सिंह, श्री वासुदेव सिंह तथा अवध नारायण अवस्थी ने रास्ते में प्राण घातक हमला किया। डाक्टर ने १७ गंभीर चोटें अंकित की थीं किंतु मुकदमा ३२३/५०४/५०६ भा. द. वि. ही कायम किया गया क्योंकि थाने को पहले ही बाँध रखा गया था। कोई कार्यवाही नहीं की गई।

मुझे याद है कि इसी वक्त वह मुझसे कानपुर में मिले तब मैंने पूछा कि आपके मामले में क्या हुआ ? उस समय मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त जैसी स्थिति आ गयी थी। वह केश की पैरवी नहीं कर सके क्योंकि वह प्रतियोगी परीक्षाओं की ओर धुन लगाये थे और यह सोचा था कि गवाहों से उनके विरुद्ध हलफनामे लगवा लिये गये हैं अर्थात् कुछ भी होने के आसार नहीं थे और पूरा दलित समाज भयाकुल था।

वर्ष १९७८ में एक दिन जब स्कूल के लिये तैयार हो रहे थे। उसी समय श्री मन्नूसिंह पुत्र वीरेन्द्र सिंह ने पुनः जान से मारने की धमकी दी क्योंकि वह दयाराम की साइकिल ले गये थे और जेल में २८ दिन तक बन्द भी रहे थे उसी वक्त श्री रामप्रसाद अध्यापक निवासी हाथी गाँव मौजूद थे और वे दयाराम को अपने गाँव अर्थात् हाथी गाँव ले आये।

यहाँ पर दयाराम ने एक समिति बनायी जिसका उन्हें मन्त्री पद दिया गया और सबने डाक्टर अम्बेडकर जन्म दिवस मनाया।

गाँव में दलितों की एकता को देखकर सवर्णों की छाती पर साँप लोटने लगा। सवर्णों ने सोचा कि इस दयाराम त्यागी को गाँव से हटाया जाय इसलिये मोती धोबी आदि से उनके ऊपर चार मुकदमे दर्ज कराये गये इस समय दयाराम का स्थानान्तरण कमालपुर हो गया था। सितंबर १९८१ का समय था एक रजिस्ट्री कमालपुर पत्रालय में आयी। उन्हें पत्रालय बुलाया गया एक रजिस्ट्री प्राप्त की देखा तो वर्ष १९७८ में यू. डी ए. की दी गयी परीक्षा का परिणाम था वह एल. डी. ए. में उत्तीर्ण हो गये थे। फलतः १९ सितंबर १९८१ को सचिवालय में ज्वाइन किया। वर्ष १९८३ की रिक्तियों में पुनः इसी परीक्षा में बैठे तब एल. डी. ए. और यू. डी. ए. दोनों ही उत्तीर्ण कर लिया जिसके फलस्वरूप ८ अप्रैल १९९१ में अनुभाग अधिकारी के पद पर प्रोन्नति मिली।

उ. प्र. सचिवालय में आकर उ. प्र. सचिवालय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति अधिकारी कर्मचारी कल्याण संघ में सक्रिय हो गये। वर्तमान में सचिवालय शाखा प्रभारी के पद पर सेवा का अवसर मिला। इसी बीच जनहित प्रेम प्रसारिणी समिति में संगठन मन्त्री, नवयुवक संघ का संरक्षक (पंजीकृत), प्रभूबाग जन कल्याण समिति (पंजीकृत) का महामन्त्री तथा डा. अम्बेडकर मंच शक्तिनगर के अध्यक्ष पद के भार सौंपे गये हैं।

सचिवालय सेवा के साथ-साथ दयाराम ने सौ कवितायें लिखी हैं। लगभग ३५ कवितायें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसी बीच ५०० पृष्ठीय डा० भीमराव अम्बेडकर का जीवन चरित्र खड़ीबोली की कविताओं में लिखा है जिसका प्रकाशन होना है। इसके अतिरिक्त कुछ लेख, सेलोगन भी इनके द्वारा लिखे गये हैं। नवंबर १९९२ के आरण्यक में, जो सामाजिक वानिकी विभाग द्वारा प्रकाशित की जाती है में कविता प्रकाशित हुयी है जिसमें कुछ धनराशि तथा प्रशस्ति पत्र शीघ्र ही मिलने वाला है। यह कार्य लगभग २७ वर्ष से पेट के रोगी रहने पर भी किया।

दयाराम के बचपन में पूज्य पिता स्वर्गीय श्री गयादीन जी डा०

श्री लक्ष्मीनारायण अपने परिवार के साथ

श्री जितेन्द्र साले-लक्ष्मीनारायण

अंबेडकर को डाक्टर अमेरिकन कहा करते थे। जिन्हें यह मालूम था कि दलितों का कोई विख्यात नेता समाज के लिये लड़ रहा है। दयाराम को उन पर किताब लिखकर गौरव हो रहा है। उनके जीवन चरित्र से इन्होंने शिक्षा ली थी कि समय बेकार नहीं करना चाहिये। अतएव डा० अंबेडकर इनके जीवन के पूज्य हीरो हैं।

इनकी सफलता, साहस, लगन और शिक्षा के प्रति अधिक लगाव होने से है। डाक्टर साहब का यही महामन्त्र मानवीय जीवन में नयापन ला देता है।

श्री बल्देव प्रसाद संखवार

श्री संखवार आज हमारे मध्य नहीं हैं, किन्तु उनकी अमर स्मृति आज भी मेरे मन में चित्रित है। श्री संखवार जाजपुर ग्राम के निवासी, एक साहसी, जनसेवक थे। वह कभी भी राज-नीति को साधन बनाकर नहीं रहे अपनी जीविकोपार्जन के कार्य से कुछ समय निकालकर जनसेवा का कार्य करते थे, जो भी दुखिया शोषित पीड़ित उनके पास अपनी व्याधि निवारण हेतु

श्री बल्देव संखवार

सहायतार्थ उनके पास पहुँचता तो उसकी उचित एवं संभव सहायता करना वह अपना परम कर्तव्य समझ उसकी ईमानदारी से सहायता करते थे यदि व्यथित व्यक्ति की व्याधि उनकी क्षमता के परे होती तो वह उस व्यक्ति की सहायता के लिये मेरे पास आते यदि मैं उपलब्ध न हुआ तो फिर अन्य सक्षम व्यक्ति की तलाश कर वह उसके कष्ट निवारण का प्रयास करते थे। इन कार्यों को वह निष्ठा व ईमानदारी पूर्वक कराके अपने गृह कार्य में लीन हो जाते थे।

श्री संखवार शोषित पीड़ित अछूत वर्ग के लोगों की सहायता में पीड़क वर्ग का विरोध करने में जरा भी भयभीत नहीं होते थे। वह मेरे द्वारा चलाये गये भूमिहीन खेतिहर मजदूर आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। मैं अपने साथी सहयोगी की पुण्य स्मृति में उनका स्मरण कर अपने को धन्य समझता हूँ।

श्री फूलचन्द संखवार नोनापुर कानपुर निरन्तर समाज की जागृति के लिए सभायें करते रहते थे, अनवरत एकमात्र मन पसंद कार्य सामाजिक सुधार में निरन्तर लगे रहते थे।

श्री हमीद खाँ साहब (ताऊ जी)

जन्मस्थान एवं दिनाँक–ग्राम व तहसील डेरापुर २६-१०-१९००

पिता का नाम–श्री छेदा खाँ साहब (कम्पाउण्डर)

१४ वर्ष की आयु से ही स्वच्छ सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन प्रारम्भ

सन् १९१९ ई०– कांग्रेस में प्रवेश

" –२१ " जब काँग्रेस गैर कानूनी घोषित की गयी तो ७ माह की सख्त कैद की सजा

" २३ " कानपुर से काँग्रेसी जत्था लेकर इलाहाबाद गये जहाँ से, पं० जवाहर लाल नेहरू और श्री पुरुषोत्तम दास टंडन के साथ नागपुर गये। नागपुर झण्डा सत्याग्रह में एक साल की कैद

धारा १०९, नागपुर केन्द्र जेल से, खण्डवा जेल से छूटे।

सन् १९२५ ई०– कानपुर में, अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी, खुला अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया।

" –२७ " तिलक व्यायामशाला के संस्थापक, तिलक हाल।

" –३० " नमक सत्याग्रह आर्डीनेन्स में ६ माह का कठोर कारावास १९-८-१९३० को उन्नाव में, ३१-१-१९३१ में मुक्त।

" –३१ " ३१-१-१९३१ को दिल्ली षडयन्त्र केस में दिल्ली गिरफ्तार करके ले जाया गया, १२ फरवरी १९३१ में मुक्त। मार्च में हिन्दू-मुस्लिम दंगे में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के अमन कार्यों में साथ रहे।

" –३२ " शहर काँग्रेस कमेटी कानपुर के ज्वाइन्ट सेक्रेटरी। लगान बन्दी धारा १७ (२) दो साल कारावास कठोर कानपुर से लखनऊ, बाराबंकी से छूटे।

" –३६ " लखनऊ, काँग्रेस सेवादल कानपुर से १०० वालियन्टर का जत्था ले गये और कार्य किया। प्रधानमन्त्री शहर काँग्रेस कमेटी चुने गये, नेशनल हेराल्ड और आई. एन. ए. की आर्थिक सहायता की। वालियन्टर सत्याग्रह का संचालन श्री रामसिंह के साथ किया।

" –४० " व्यक्तिगत सत्याग्रह धारा ३८ के अनुसार एक साल सख्त कारागार, फतेहगढ़ जिला जेल से मुक्ति।

" ४२ " 'करो या मरो' आन्दोलन में धारा १२९ व २६ में उन्नाव जिला जेल में दो साल रहे।

सन् १९५० ई०– सन् १९५० से १९५२ तक काँग्रेस सेवादल के अधिनायक (कप्तान) रहे।

" –५२ " उत्तर प्रदेश काँग्रेस सेवादल बोर्ड के सदस्य। सन् १९५२ से १९६७ तक एम. एल. ए. रहे। तथा सिटी काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे।

" –७३ " स्वर्गवास १०-१२-१९७३ को (उर्सला हार्समैन अस्पताल, परेड, कानपुर में।

श्री पूसूराम

श्री पूसूराम जी निवासी ग्राम धौरी एक साहसी समाज-सेवी व्यक्ति हैं। अन्याय व अत्याचार का इन्होंने सदैव विरोध किया है। समाज सेवा का कार्य श्री पूसूराम अपनी जीविकोपार्जन के कार्यों से समय निकालकर करते रहे हैं। अपनी मान मर्यादा को कायम रखने के निमित्त इन्होंने अपने प्राणों की बाजी भी लगाई है, यह इनका लक्ष्य रहा है। मेरे द्वारा गठित भूमिहीन खेतिहर मजदूर संघ में जुटकर काम करते रहे हैं। ग्राम रमईपुरमें एक

श्री पूसूराम

सफल सम्मेलन का आयोजन श्री पूसूराम जी के संयोजकत्व में ही सम्पन्न हुआ था।

परिवार का भार अपने ऊपर होने के कारण श्री पूसूराम अपनी शिक्षा दीक्षा में स्वयं पीछे रहे किन्तु बुद्धि विवेक और सोच में आप किसी से पीछे नहीं रहे अपने आश्रित परिवार के लोगों को शिक्षित बनाने में आप ने बाबा साहब के नारे को साकार किया। मेरी कामना है कि श्री पूसूराम से आगे आने वाले समय के नवजवान शिक्षा लें।

श्री पूसूराम जी समाज में शिक्षा के प्रसार के लिये प्रबल पक्षधर थे स्वयं अपने जानवर चराते थे जो लड़के अपने एक या दो जानवर चराते थे उनके जानवर स्वयं चराने लगे और उन लड़कों को पढ़ने का अवसर दे दिया। यह था अगाध प्रेम सामाजिक शिक्षा का।

श्री वीरेन्द्र सिंह

श्री वीरेन्द्र सिंह श्री उमराव सिंह के सुपुत्र थे श्री उमराव सिंह को प्रारम्भ से ही दंगल लगवाने का बड़ा शौक था, पिता जी

श्री वीरेन्द्र सिंह

के इस उत्साह में श्री वीरेन्द्र सिंह पूर्ण रूप से सहयोगी बन गये। उस समय दंगल सँभालने में वीरेन्द्र सिंह का लच्छीदार कोड़ा बहुत प्रसिद्ध था। दंगल में कुछ भी गड़बड़ी मची नहीं कि श्री वीरेन्द्र सिंह कोड़ा लेकर कूद पड़ते थे लोग देखकर दंग रह जाते कि बजरंग ने कहाँ का बल व तेजी दे दी है। यह शौक बढ़ता गया। पिता श्री उमराव सिंह के स्वर्गवासी होने पर दंगल चलाने की बात चली तो वीरेंद्र सिंह ने पूरा-२ सहयोग देने को कहा। कुड़नी का बजरंग दंगल १८ साल तक चन्दे के सहारे चलता रहा। चन्दे की उगाही में श्री सिंह जुताई बुआई के समय दोपहर को पहुँचते और चन्दा प्राप्त कर ही लौटते। कुड़नी दंगल का जब दूसरा स्थान मैंने सुझाया तो सर्वप्रथम श्री वीरेंद्र सिंह जी ने साथ दिया। कुड़नी में इण्टर स्कूल के लिये वह तैयार थे इसी बीच एक सुयोग्य साथी स्वर्गारोही हो गया। वीरेंद्र सिंह का प्रबंध मशहूर था किसान आज की दुर्व्यवस्था देखकर श्री वीरेंद्र सिंह की याद करते हैं। जब कोई अच्छा व्यक्ति हमारे बीच से जाता है तो स्वाभाविक है कि उसकी याद आए। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनका परिवार जन सहयोग में पिता की भाँति अनुसरण करके जनसेवा करते रहें। गत दो दंगलों में उनके स्थान पर उनके सुपुत्र श्री कन्हैयालाल जी सहयोग कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें जनसेवा की शक्ति दे।

श्री शिवकुमार

परिवार भूमिहीन तथा क्षणिक उद्योग अपनाने वाला रहा है शिवकुमार के पिता दो भाई हैं।

(१) रमजूराम (२) श्यामलाल, ग्राम हिरदेपुर केंधा है। श्री रमजू के एक पुत्री छायादेवी मात्र है जिसकी दो लड़कियाँ हैं पति डाक्टर है एक लड़की की शादी श्री सुघर लाल जी रवाइयपुर

पुर (परास) के निवासी इस समय टेलीग्राफ आफिस देहरादून में सेवारत हैं दूसरी पुत्री विजय लक्ष्मी बी· ए· कर चुकी है अब मैं आपको श्री श्यामलाल जी की ओर ले चल रहा हूँ। ६ पुत्र और एक पुत्री है। बात कहने की नहीं ध्यान देने की है इतने बड़े परिवार जो शहर के करीब हो अच्छी स्थिति में वही हो सकता है जो कर्मशील हो काहिली से दूर होकर काम में हाथ जमकर डाल दे पर बताया तो यह गया कि बड़े भाई श्री प्रभूदयाल जी काम से दूर पिता माता के अधिक प्रिय होने से खाने पीने की आजादी रखते थे। पढ़ने गये हाईस्कूल से आगे पैर न बढ़ा सके। बुद्धिजीवी तो रहे पर सभी से अलग रहकर। इस समय भी बुद्धि बल से कोई न कोई काम पकड़कर परिवार की जीविका चला रहे हैं यह और भी अच्छा है कि एक लड़का सरसौल में डाल दिया है उसका जीवन तो अपने आप सुदृढ़ हो जाएगा। लड़की भी गृह-लक्ष्मी के कार्य में लीन है और दक्ष भी है।

भूमिहीन धनहीन होने से चमड़े का काम थोड़े रूप में होता था श्री रमजू बाजार देखते सौदा के लेन-देन का काम भी यही सम्हालते थे। घर में रहकर काम करते रहते थे। श्री शिवकुमार शिक्षा की ओर पूरी तौर से झुक गये थे। इनकी किताबों व पढ़ने के अन्य व्यय भार को चमड़े की रँगाई के किनारे की कटन बेच कर काम चलाते, रँगे चमड़े साइकिल में रखकर कानपुर बाजार ले आते थे। प्रारम्भिक शिक्षा कँधा में तथा जू० हा० स्कूल तथा इण्टर तक भारतीय विद्यालय इण्टरमीडिएट कानपुर शहर से किया।

स्नातक क्राइस्टचर्च कालेज कानपुर से किया। जू. हा स्कूल, हाईस्कूल, इण्टर व बी· एस-सी. परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। इनके करने में बताया कि इण्टर की परीक्षा के बाद रिविट कील बनाने की फैक्ट्री में काम किया।

बी. एस-सी. की छुट्टियों में तथा पढ़ाई से समय निकाल कर रबर फैक्ट्री में कार्य कर लेते थे। बी. एस-सी· में दाखिले के

लिए चालीस रुपये कर्ज लिए घर से इतनी रकम मिलना कभी भी सम्भव नहीं था। बी· एस-सी· के बाद मय सूद ८० रुपये अदा कर दिये।

बी· एस-सी. के बाद विवाह की बात श्री ज्वाला प्रसाद विधायक की पुत्री मुन्नीदेवी से चली। हालत बताई कि परिवार में एक बिसुवा जमीन नहीं है और चमड़े की रँगाई ही अच्छी तरह से चलाई जा रही है। उत्तर में श्री ज्वाला प्रसाद ने कहा प्रथम इन्सान की माँ ही धरती है, माँ की सेवा इन्सान को पहले करनी होती है शिक्षित व्यक्ति धरती माँ की सेवा और अच्छे ढंग से करेगा। विधान में धरती माँ को ही अधिक महत्त्व दिया जाता है जमानत धरती रखने वाला कर सकता है। ईंट से बने मकान वाले को जमानत लेने का अधिकार होता है। इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर और ऊँचे शिक्षक को विभाग की योग्यता पर जमानत लेने का अधिकार विधान में नहीं है इसे अंधा कानून कहा जा सकता है। योग्यता के आधार पर किसी की जमानत करने में यदि वह व्यक्ति जिसकी जमानत की गई है, धोखा दे तो जमानत

श्री शिवकुमार, मुन्नीदेवी, अजय कुमार, राजय

करने वाले की योग्यता डिग्री समाप्त की जाय। मैं यह जानता हूँ कि बी. एस-सी. अधिक है कई बीघा जमीन होने के मुकाबले में और बुद्धि का स्थान देकर मुन्नोदेवी की शादी श्री शिवकुमार बी. एस-सी से करने में गौरव समझ श्री ज्वाला प्रसाद प्रसन्न होते हैं जब बात भूमि वाले की और डिग्री वाले की चलती है।

श्री शिवकुमार ने शादी के बाद डिफेंस में सर्विस की ८ वर्ष के बाद भारतीय साँख्यकीय सेवा में सन् १९८८ से देहली में हैं, दो सुपुत्र हैं (१) अजय कुमार (२) संजय कुमार।

श्री ज्वाला प्रसाद जी ने बताया कि बीमारी में यों तो सभी ने मेरी सेवा की है पर लक्ष्मी देवी, ऊषा देवी और मुन्नी देवी का योगदान अधिक सराहनीय है उनका यही मत है कि पुत्रों से अधिक पुत्रियों में सेवा भावना होती है।

श्री जगदीश चन्द्रा

कोड़र मजरा महराजपुर जिला कानपुर में श्री वद्दलराम का परिवार समाज में प्रमुख स्थान रखता था। कोई दिन ऐसा कोरा नहीं जाता था जिसमें दो-चार अभ्यागत न आते हों। यहाँ मेरी ससुराल थी अतः स्नेह और लगाव की बावत कहना ही क्या। रामायण के प्रेमी थे शाम को पड़ोसी जमा हो जाते और रामायण का आनन्द उठाते। मैं श्री वद्दलराम को साला न समझ-कर स्नेहिल भाई मानता था। उनके सुपुत्र मेरे भतीजे होते थे खून का रिश्ता प्रगाढ़ स्नेह में बदले था। श्री वद्दलराम के तीन सुपुत्र थे। (१) मुल्लूराम (२) गयाप्रसाद (दुर्जन) (३) नरायन प्रसाद।

मुल्लूराम शरीर से प्रौढ़ शक्ति में भरपूर गया प्रसाद समाज सुधार में निरन्तर लीन रहने के साथ उसे उँचे स्थान पर लाने का निरन्तर प्रयास करते रहना, नरायन शांतिप्रिय था। बाल संत सुशील के निर्वाण के पश्चात् घर गहरे शोक में डूब गया मैंने

कहा समाज के बच्चों में सुशील को ढूँढ़ना है दर्शन सिंह रहनस के असीमित अत्याचारों से अधमरे गांव शिवपुरी की स्थिति का मुझे अवलोकन कराया और वहीं, "होली नहीं मनाएँगे" आन्दोलन की बुनियाद पड़ी। प्रमुख स्थान इस आन्दोलन में गयाप्रसाद (दुर्जन) का था। गयाप्रसाद सुलझा व्यक्ति था बाजार के लेन देन का अधिकारी रहता था। यह दलालों के चक्कर में बुरी तरह फँस गया लखनउ ले जाकर घुड़दौड़ की रेश में फँसा दिया और ऐसा भँवर में डाला कि फिर उसे उबरने न दिया। मुल्लूराम बड़ा भाई तो कहता था कि कमाई करना मेरा काम है प्राप्त पूँजी के परिव्यय का अधिकार गयाप्रसाद को है फिर और कोई ऐसा न था जो गयाप्रसाद को घुड़दौड़ के जुएँ से बचा सकता। धन तो धन है जब उसके निकलने का स्रोत चल पड़ा तो घर निर्धनता की अंतिम रेखा पर पहुँच गया। परिवार में भाई व भौजाई मजदूरी से परिवार की जीविका चलाते रहे।

गयाप्रसाद इस शाक को बर्दाश्त न कर सका। मानसिक बीमारी ने ऐसा दबोचा कि फिर वह उठ न सका। ऐहिक लीला समाप्ति के समय दो बच्चे थे ठाकुर प्रसाद, जगदीश। किसी को उस समय की स्मृति नहीं है। दोनों बच्चों की प्राथमिक शिक्षा भदरसा प्राइमरी स्कूल से और जू० हा० स्कूल शिक्षा सरसौल से हुई गाँव से तुलसिया पुरवा अपने मौसिया के यहाँ रहकर हाईस्कूल तक की शिक्षा पाई। गोविन्द नगर कालोनी से बी. ए, बी. एस. सी क्राइस्टचर्च कालेज से ग्रहण की। घर के हालात से इन दोनों ने सोचा कि शिक्षित होकर ही जीविका चल सकेगी यह प्रगाढ़ धारणा घर कर गइ।

गोविंद नगर मोहन विद्या मंदिर के पास कालोनी में ठाकुर प्रसाद जगदीश सत्यप्रकाश के साथ मैं भी रहता रहा। मुझे इन सबसे समय बिताने का अच्छा अवसर मिला और सत्यप्रकाश के यच. बी. टी. करने का श्रेय जगदीश के साथ होने का मानता हूँ। मैं ७४ में चुनाव हार गया था पास में कुछ भी नहीं

था घर से गेहूँ-बेझर-दाल तथा सब्जी का प्रबंध कुछ कृष्ण माधव मिश्र जैसे साथी किया करते थे।

तिलकहाल जाकर समय काटने के लिए श्रीकृष्ण माधव मिश्र रिक्शे में साथ ले जाया करते थे।

जगदीश चन्द्रा ने क्राइस्टचर्च कालेज से इण्टर करके-

(१) डाक्टरी परीक्षा दी जिसमें नाम आ गया परन्तु धनाभाव से मेरठ न भेजा जा सका। श्री बेनीसिंह ने खेद प्रकट किया कि तुम्हें बताना चाहिये था। मेरी स्थिति को जानकर कभी-कभी सहयोग दिला देते थे।

(२) डिफेंस में जगदीश जी लगे और यहीं से बम्बई चले गये साथी बनाकर। बम्बई में कस्टम अधिकारी सी. आई. डी. हैं।

(३) अपना फ्लैट भी है बम्बई में अधिकारी बिना कार कैसे चलेगा इसलिए अपनी कार भी है।

श्रीकृष्ण माधव मिश्र श्री बेनीसिंह जी से घुले मिले थे। मोटा देखकर चौंका करता था। संशय दूर हो गया। मिलना होता रहा जब मैं ७४ में हार गया तो गोविन्द नगर में रह रहा था एक दिन तिलकहाल में मिल गये घर आते समय मुझे रिक्शे में ले लिया। पूछने लगे काम कैसे चल रहा है। काम तो मेरे पास कुछ है नहीं कभी-कभी तिलकहाल आने का मन बन जाता है आ जाता हूँ। मिश्रा जी ने कहा कि दो तीन लड़के साथ हैं उनका प्रबंध कैसे करते हो। करना क्या पड़ता है होता है होता रहता है। कहा कुछ रखते हो ? जेब में कुछ है। वह कह उठे जान पड़ रहा है कुछ नहीं है और एक सौ रुपया मेरी जेब में घुसेड़ दिए। मैंने कहा कुछ काम है क्या कराने को। नहीं काम कुछ नहीं जब तब कुछ खर्चा ले लिया करो और मेरे साथ रिक्शे में तिलकहाल जाया करो। मैं जानता हूँ तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं फिर बच्चे साथ में हैं।

मैं नहीं कह सकता मिश्रा जी का ऐसा मन कैसे बन गया मैं तो किसी के काम आता नहीं। फिर भी मिश्रा जी यदा-कदा

मेरी सहायता कर देते रहे मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

काम से बिन्दकी गया था वहाँ श्री प्रभूदयाल नोनारे वाले मिल गये रिश्ता प्रेम का था। ५०० (पाँच सौ) रुपये हो गये फिर काफी

श्री जगदीश चन्द्रा, पत्नी व पुत्री
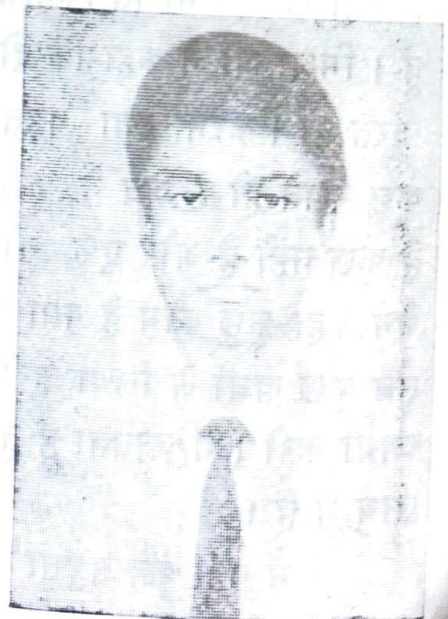
श्री सत्य प्रकाश अधिशासी अभियन्ता भतीजा अनिल कुमार

दिन साग-दाल का काम चल गया फिर और कुछ याद नहीं। हाँ जगदीश चन्द्रा के साथ जो शांति और संतोष मिला वैसा मुझे दुर्लभ ही रहा है जगदीश चन्द्रा का स्वभाव आज भी हृदय में स्थान बनाये है परिवार को देखने का मन चलता है वैसे अब मुझे सहयोगी सहित रेलवे गाड़ी का पास मिल गया है।

२३ दिसंबर ९२ से बीमार हुआ था अभी बीमारी से छुटकारा नहीं मिला। स्वस्थ होता तो किसी को साथी बनाकर देश भ्रमण कर लेता।

आधुनिक भारत के महाशिल्पी
डा० भीमराव अम्बेडकर

आधुनिक भारत के महाशिल्पी थे डा० भीमराव अबेडकर। जिन्हें न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व में भारत से दलित वर्ग का मसीहा माना जाता है। इसमें कोई दोराय नहीं है, कि डा० भीमराव अम्बेडकर जीवन पर्यन्त समाज के उन दबे पिसे और पिछड़े वर्गों समेत दलितों के शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए उनके उत्थान में लगे रहे। लेकिन यहाँ यह कहना भी परमावश्यक है कि उनके मस्तिष्क में एक महान् भारत की जो परिकल्पना थी उसको मूर्त रूप देने में भी उन्होंने कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी थी। यह भावना उनके महान् व्यक्तित्त्व को परि-लक्षित करती है।

समानता के सूत्र पर आधारित संसदीय लोकतंत्र का जो रूप भारत में आज दिखाई दे रहा है उसकी आधारशिला तैयार करने का कार्य डा० अम्बेडकर ने उस समय ही प्रारम्भ कर दिया था जब वह युवा थे। भारत में उन दिनों देश की स्वतंत्रता के लिये आंदोलन चल रहा था। एक तरफ जहाँ देश का संपूर्ण समाज आजादी के लिये व्यग्र था वहीं डा० भीमराव अम्बेडकर ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस आंदोलन में भाग नहीं लिया

था। क्योंकि आंदोलन के नेताओं और डा० अम्बेडकर के दृष्टि-कोण में मौलिक अंतर था नेताओं का विचार था कि देश पहले आजाद हो उसके बाद हिंदू समाज में व्याप्त त्रुटियों और कुरी-तियों को दूर कर दिया जायेगा। जबकि डा० अम्बेडकर का विचार था कि हिंदू समाज की ब्राह्मणवादी व्यवस्था के हाथ यदि स्वतंत्र भारत की शासन सत्ता आयी तो उसकी प्रभुता और प्रभाव इतना बढ़ जायेगा कि देश में दलितों की दशा और भी दयनीय हो जायेगी इसीलिये वह आजादी के बजाय अँग्रेजों के शासन के तब तक पक्षधर थे जब तक ब्राह्मणवादी व्यवस्था का अंत न कर दिया जाये।

बात १९३१ की है, उस समय राजनीति की दो विलक्षण प्रतिभायें अपनी विचारधाराओं के आधार पर राजनीति की गाड़ी को आगे बढ़ाना चाहती थीं। इनमें एक थे डा० भीमराव अंबेडकर और दूसरे थे महात्मा गाँधी। इन दोनों महान् पुरुषों की विचार-धारायें नदी के दो किनारों की तरह साथ-२ चलीं किंतु कभी परस्पर मिल नहीं सकीं। एक विद्या वारिधि पतित उद्धारक सामा-जिक न्याय का क्रांति दूत था। तो दूसरा हिंदू समाज की जातीय व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था की यथास्थिति बनाये रखने का पक्ष-पाती। किंतु राजनीति परिवर्तन का अहिंसावादी शांतिदूत। एक दलितों को उबारने के लिये क्रांति का सेतु था, तो दूसरा हिंदू समाज की नारकीय व्यवस्था को बिना बदले देश के राजनैतिक बदलाव के लिये दमकता हुआ केतु था। एक वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था को समाप्त कर देने के पक्ष में था। तो दूसरा हिंदू समाज की जाति प्रथा को उसकी मौलिक शक्ति मानते हुये दलितों के विकास का पक्षधर था। अर्थात् एक मानव कल्याण की धरती का उत्तरी ध्रुव था, तो दूसरा दक्षिणी ध्रुव जिनका मिलन कभी संभव नहीं हो सकता।

२८ सितंबर १९ सौ इकतीस को अल्पसंख्यक समिति की बैठक होनी थी। बैठक की पूर्व संन्ध्या पर गाँधी जी के पुत्र

देवदास गांधी डा० अम्बेडकर से मिले उन्होंने गांधी जी और डा० अम्बेडकर के बीच बातचीत का प्रस्ताव रखा। बैठक सरोजनी नायडू के निवास पर हुई। जिसमें डा० अबेडकर ने अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए जो प्रस्ताव रखा उसमें गाँधी जी ने उनके प्रस्ताव को सशर्त स्वीकार किया था।

जिस देश में शोषितों पीड़ितों का मुखिया अपने अभियान में अकेले पड़ जाता है। तथा प्रतिगामी और प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ पुंजीभूत होकर जब उनके विरुद्ध एक साथ संघर्ष करती हैं तब दलितों के एकाकी नेतृत्व को चारों ओर सावधान दृष्टि रखनी पड़ती है। संघर्ष के हर मोड़ पर डा० अंबेडकर सावधान थे और सफल हुए। २८ सितंबर की अल्प संख्यक समिति की बैठक में जब विभिन्न विचार धाराओं के नेताओं की कोई सहमति न हुई तो बैठक में उपस्थित ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री ने कहा था, कि जब तक सभी प्रतिनिधि सहमत न हों तब तक किसी की बात मान लेना सरकार के लिये उचित नहीं है। मुस्लिम नेता आगा खाँ ने कहा था कि चूंकि गाँधी जी आज ही रात्रि में मुस्लिम नेताओं से बातचीत करने जा रहे हैं अतः समिति की बैठक स्थगित कर दी जाय। मदनमोहन मालवीय ने आगा खाँ के प्रस्ताव का अनुमोदन किया था। इस अवसर पर डा० अंबेडकर ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये स्पष्ट किया था कि मैंने दलितों की समस्याओं को पहली कान्फ्रेंस में ही विस्तार से कह दिया है लेकिन यहाँ भी साफ तौर से स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो लोग मुस्लिम लोगों से समझौता करने जा रहे हैं वे दूसरे पक्षों की ओर से अधिकृत नहीं हैं ऐसी स्थिति में कम से कम मेरा हिस्सा मुझ पर छोड़ें, क्योंकि मेरे हिस्से की बात करने का अधिकार उनको नहीं है। चाहे कांग्रेस हो या गाँधी जी। उनकी इस बात का समर्थन करते हुये समिति के अध्यक्ष रामसेमैक डानल्ड ने कहा कि डा० अंबेडकर ने अपना पक्ष शानदार ढंग से रखकर संदेह की गुंजाइश ही नहीं रखी है। जिस पर विवश होकर गाँधी जी को दलितों के

प्रतिनिधित्व की डा० अंबेडकर द्वारा रखी बात स्वीकार करनी पड़ी थी।

एक बार गाँधी जी की बात का जबरदस्त विरोध करते हुये डा० अंबेडकर ने कहा था कि गाँधी जी का यह कथन कि काँग्रेस को दलितों का ध्यान है और वह (काँग्रेस) मेरी अथवा मेरे अन्य सहयोगियों की अपेक्षा भारत के दलितों का अधिक प्रतिनिधित्व करती है। इस पर उन्होंने कहा था कि देश के गैर जिम्मेदार लोग ही इस प्रकार झूठे दावे करते हैं जिस पर न तो मैं विश्वास करता हूँ न दलित वर्ग ही। देश में चल रही षडयंत्रकारी राजनैदिक चालों से अत्यंत हतास और शंकाग्रस्त होकर डा० अबेडकर ने कहा था कि इन चालों के चलते दलित वर्ग राजसत्ता के हस्तांतरण के पक्ष में कदापि नहीं है। फिर भी यदि ब्रिटिश सरकार सत्ता हस्तांतरण करना ही चाहती है। तो उसमें ऐसी शर्तें और प्राविधान होना चाहिये कि सत्ता किसी एक व्यक्ति, एक वर्ग, एक सम्प्रदाय के हाथ में नहीं सौंपी जायेगी। जो दलितों के विरुद्ध सैतानी या षडयंत्र करें, बल्कि सत्ता में हर वर्ग और हर सम्प्रदाय का सानुपातिक हिस्सा होना चाहिये।

१४ अप्रैल १८९१ में मध्यप्रदेश के महू नामक स्थान में अनुसूचित 'महार' जाति में पैदा हुये डा० भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्त्व अखिल भारतीय स्तर का ही नहीं बल्कि विश्व स्तर का हो चुका था। वे सामान्य ब्रिटिश समझौते से लेकर इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री तथा ब्रिटिश सम्राट के बराबर बैठने की हैसियत रखते थे किंतु भारत के सवर्णों की बुद्धि डाक्टर साहब के अछूत होने की सीमा को अभी भी पार नहीं कर पाई थी। क्योंकि एक बार बम्बई हाईकोर्ट के वकीलों ने जब डाक्टर साहब का सार्वजनिक अभिनंदन करने का मन बनाया तो इन्हीं सवर्णों ने अभिनंदन समारोह के लिए बम्बई में कोई स्थान ही नहीं उपलब्ध होने दिया था।

हिंदू समाज की विकृतियाँ, त्रुटियाँ और अमानवीय परंपरायें धीरे-धीरे मुरझा रही थीं। डा० अम्बेडकर का अविराम अभियान सवर्ण हिंदुओं के दिल को निरंतर दहला रहा था। वे अपनी पंकिल और घिनौनी प्रवृत्तियों को मन ही मन महसूस करने लगे थे। किंतु किसी ऊँचे टीले पर बैठा व्यक्ति जैसे नीचे उतरने में अपनी बेइज्जती समझता है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था के ठेकेदारों की भी यही दशा थी। क्योंकि डाक्टर साहब का सम्मान और प्रभाव दिनों दिन बढ़ता जा रहा था। डाक्टर साहब के बढ़ते सम्मानजनक प्रभाव से एकक्षत्र हिंदू सवर्ण नेता पं० मदनमोहन मालवीय बहुत चिंतित और परेशान थे।

श्री केसरी लाल सांसद

क्रांति धर्मा धीर पुरुष डा० भीमराव अंबेडकर समाज में व्याप्त कुरीतियों और सवर्ण हिंदुओं द्वारा ढाये जा रहे जुर्मों के निस्तारण से लड़ते-लड़ते थक से चुके थे। लेकिन दलितोत्थान का छेड़ा गया अभियान कहीं अधूरा न रह जाय इसके लिए वह ज्यादा ही चिंतित रहते थे।

डाक्टर साहब का स्वास्थ्य निरंतर गिरता जा रहा था। तीन दिसंबर की शाम को उनको विशेष शिथिलता और व्यग्रता

का अनुभव हुआ उन्होंने अपने लान में कुर्सियाँ लगवाकर अपनी पत्नी डा० सविता अंबेडकर ससुर के० वी० कपूर तथा डा० मावलांकर के साथ फोटो खिचवाये यह फोटो उनके साले बालू कबीर द्वारा खींचे गये थे।

किंतु कौन जानता था कि दैव दुर्विपाक धीरे-धीरे बाबा साहब को इस दुनियाँ से सदा-२ के लिये उठा लेने का षडयंत्र कर रहा है। छः दिसम्बर उन्नीस सौ छप्पन की वह काली रात जिस दिन डाक्टर साहब ने महा प्रयाण किया उस समय डाक्टर सविता अंबेडकर सहायक 'रत्तू' समेत सारा विश्व शोक सागर में डूब चुका था। क्योंकि बाबा साहब के निजी सहायक 'रत्तू' ने डाक्टर साहब के निधन का समाचार विद्युत वेग से सारे भारत में फैला दिया था जिस पर बाबा साहब के २६ अलीपुर रोड स्थित पूर्व निवास में डाक्टर साहब के अन्तिम दर्शन के लिए प्रधानमन्त्री, मन्त्री, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक नेताओं के साथ चारों ओर से सहस्रों व्यक्तियों की भारी भीड़ अन्तिम विदाई देने को चली आ रही थी। तीस वर्षों तक संघर्षरत रहने वाला लोकतन्त्र का ज्ञाता, देश का संविधानदाता, आज दुनियाँ में नहीं है, किंतु हिंदू विल और भारत के सविधान शिल्पी के रूप में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को भारत अनन्त काल तक याद करता रहेगा।

केसरीलाल सांसद

निर्बल वर्ग के लोगों की सेवा में अपने प्राणों को
न्योछावर करने वाले संघर्षशील सहयोगी

श्री राधेश्याम

पूर्व विधायक

सरल हृदय दबंग व्यक्तित्व वाले श्री राधेश्याम पुरानी परम्पराओं के पोषक के रूप में जाने जाते हैं। इनका सरल स्वभाव कठोर वसूल मानों आभूषण हैं। जिसके कारण ही इन्होंने अपने जीवन में तमाम उत्थान-पतन देखे हैं, किंतु अपने वसूलों से डिगे नहीं।

श्री राधेश्याम जब से मेरे संपर्क में आये मैं अपने को अधिक सशक्त अनुभव करने लगा। संघर्षों में यह कभी घबड़ाये नहीं न पीछे हटे न कभी अपने वसूलों से दब समझौता किया जिसके कारण यह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे।

श्री राधेश्याम का जन्म ग्राम सुजनीपुर तहसील डेरापुर में हुआ किंतु शिक्षा-दीक्षा के बाद इनके राजनैतिक जीवन की शुरुवात ग्राम बड़ागाँव भिक्खी से हुई, यह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. शम्भूदयाल चौबे के सान्निध्य में आये और उनके पुत्र स्व. श्री प्रकाशनारायण चौबे से इनकी प्रगाढ़ मित्रता हुई उस समय क्षेत्री संघर्षों में श्री प्रकाश को एक साहसी बहादुर और हर स्थिति में साथ निभाने वाले साथी की आवश्यकता थी। जिसकी पूर्ति श्री राधेश्याम द्वारा हुई। समाज में अन्याय और अत्याचारों को समूल नष्ट करने की भावना रखने वाले श्री राधेश्याम को कड़े संघर्षों का सामना करना पड़ा, जिसमें इन्हें फौजदारी के ३२३ से लेकर ३०२ तक के मुकदमों में अभियुक्त बनना पड़ा। अपनी कार्य कुशलता, दृढ़ता एवं जनसेवा की भावनाओं के कारण ही श्री राधेश्याम २० साल तक ग्राम बड़ागाँव भिक्खी के निर्विरोध प्रधान पद पर चुन कर रहे जहाँ पर इनका मात्र अकेला मत ही था। यही नहीं बड़ागाँव भिक्खी स्थित किसान सेवा सहकारी संघ, बड़ागाँव भिक्खी सहकारी संघ के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुनकर वर्षों रहे।

गलुवापुर इण्टर कालेज गलुवापुर के छात्र, शिक्षक और इसके बाद अर्से तक उस कालेज के प्रबन्धक पद पर रहे। इसी बीच श्री राधेश्याम ब्लाक डेरापुर के ब्लाक प्रमुख भी काफी संघर्ष का सामना करके चुने गये जो इनके लिए विशेष गौरव की बात है। इसके अलावा यह जिला सहकारी संघ कानपुर के संचालक उपाध्यक्ष और कार्यवाहक अध्यक्ष भी रहे।

सन् १९७७ में यह मेरे मुकाबले ही कांग्रेस पार्टी से सांसद का चुनाव घाटमपुर लोकसभा क्षेत्र से लड़े, जिसमें मैं विजई हुआ,

किन्तु श्री राधेश्याम के मन में कभी किसी किस्म का गुरेज नहीं हुआ।

सन् १९८५ में यह विधान सभा सदस्य चुने गये जिस समय यह चुनाव जीते मुझे प्रसन्नता हुई थी, कि मैं रिटायर हुआ मेरी जगह यह समाज सेवा करेंगे।

मेरी आशाओं के अनुरूप ही श्री राधेश्याम ने विधानसभा सदस्य होने पर क्षेत्र और समाज की सेवा की जिससे मुझे प्रसन्नता है। क्योंकि श्री राधेश्याम मेरे बराबर के सहयोगी रहे हैं, किन्तु इनका बड़प्पन रहा है, कि मेरा आदर इन्होंने अपने गुरु या पिता के समान किया है। इनके इस आचरण व्यवहार की जब कोई चर्चा करते हुए प्रशंसा करता है, तो मुझे ठीक उसी प्रकार सुख की अनुभूति होती है, जैसे किसी पहलवान को उसके शिष्य की मल्हयुद्ध में विजय देखकर प्रसन्नता होती है।

मैं अब अपने जीवन के आखिरी सफर पर हूँ, किसी भी समय अपना सफर पूरा कर चिर निद्रा में सो सकता हूँ। अब मेरी अपने समाज के कर्णधार नवयुवकों से अपील है कि वह श्री राधेश्याम के जीवन से भी आगे बढ़ने, समाज सेवा करने की शिक्षा ग्रहण करें।

श्री मुन्नीलाल

श्री मुन्नीलाल कृपालपुर (मूसानगर) के निवासी हैं। गाँव में अपनी अधिक संख्या है तथा अधिक बैकवर्ड (केवट) होने पर भी शोषण अपनी पुरानी परम्परा पर था अधिक संख्या उस शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठा सकती थी एसी स्थिति में शोषण भय से विरक्त होने के लिए यह कानपुर शहर चले आये। स्वतंत्र मन वाला व्यक्ति बेगार और भय से दूर रहना चाहता है अतः श्री मुन्नीलाल ने यह रास्ता अपनाया। शहर में आने पर श्रमिक काम भी परिवार की जीविका के लिए अधूरा था। दो लड़के प्रगतिशील दीख पड़े। संतोष ने उद्योग के साथ राजनैतिक मार्ग पर भी पैर

डाल दिए हैं। अच्छी नीति यह है कि अशोक भी परिवार का पूरा-पूरा सहयोगी है। कहना न होगा कि मिट्टी भरे धूल-धूसरित स्थान पर काम करने वाला आज ऐसे भवन में है जिस घर में दवा के लिए मिट्टी नहीं मिल सकती। गरीबी और अभाव से ऊबकर श्री मुन्नीलाल जी सुदृढ़ स्थिति में हैं और समाज से गहरा सम्बन्ध जोड़े हैं उद्योग ने ऊपर उठा दिया है यह स्थिति से साव-धान रहें कि जैसे उठे हैं उससे इतना गिरना न पड़े कि उठने की जगह से नीचे चले जाएँ।

श्री मुन्नीलाल

संघर्षशील सहयोगी

श्री रामसुमेर भारतीय

मेरा जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षों से शुरू हुआ, इसलिए मेरा लगाव भी ऐसे लोगों से विशेष रहा जो समाज में निर्धन निर्बल वर्ग के लोगों की सेवा करना अपना धर्म समझते थे। इसी कड़ी में श्री रामसुमेर भारतीय निवासी अकबरपुर भी मेरी परीक्षा में खरे उतरे।

बुद्ध, कबीर, रविदास के सिद्धांतों पर अडिग विश्वास रखने वाले श्री भारतीय का बाल्यकाल से संघर्षमय जीवन रहा।

विद्यार्थी काल से ही यह सामाजिक कुरीतियों से संघर्ष करते रहे परिणामस्वरूप इन्हें अकबरपुर के पुराने जमीनदारों से काफी लोहा लेना पड़ा किंतु कबीर के सच्चे अनुयायी, सत्य पर विश्वास रखने वाले भारतीय अपने हर कदम पर सफल रहे तथा यह उप-नगर अकबरपुर में सभासद चुने गये। इसी काल में कबीर साहब के नाम को अमर करने के लिये अकबरपुर में महात्मा कबीर छात्रा-वास और महात्मा कबीर प्राथमिक पाठशाला की स्थापना की जो आज सफलता पूर्वक निर्बल वर्ग के छात्रों की सेवा कर रहा है। जनसेवी श्री भारतीय की विशेष अभिरुचि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के इस नारे को साकार करने की है कि 'शिक्षित बनो' इसके क्रियान्वयन के लिए आप निर्बल वर्ग की आबादी में शास्त्री-नगर में एक जनकल्याण विद्यालय भी चला रहे हैं। जिसमें बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दी जाती है।

इस समय श्री भारतीय, भारतीय चिकित्सा प्रणाली को साकार कर, लोगों की सेवा भारतीय औषधालय शास्त्रीनगर द्वारा काली मठिया चौराहे पर कर रहे हैं।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री जगदीश कुरील

श्री जगदीश कुरील के अनुभव व विचार निम्नवत हैं

भाइयों हम स्वतंत्र भारत में पैदा हुए हैं परन्तु जीवन का एक भी पल स्वतंत्र सुरक्षित व निर्भीकता पूर्वक नहीं कटता है। दोहरे मापदण्डों वाली जिस व्यवस्था में हम जी रहे हैं। उसके कुप्रभावों से समाज का बहुत बड़ा हिस्सा घृणा, अपमान और तिरस्कार का शिकार हो रहा है। हमारे जीवन को भी इन्हीं काले कारनामों ने प्रभावित किया और अपने विकास के लिए बढ़ते हुए कदम तेजी से न बढ़ सके।

हमें पंजाब नेशनल बैंक ने ९ नवम्बर १९७४ से सेवा करने का मौका दिया और हमारी कमालगंज जि० फर्रुखाबाद में पोस्टिग

हुई। हम ९-११-७४ को समय से पहुँच गये। उसी दिन सेक्योरिटी का पैसा जमा हो गया, ज्वाइनिंग रिपोर्ट दे दी परन्तु दो दिन जूनियर करने के लिये सोमवार दि० ११-११-७४ से ज्वाइन कराया गया। इस काली करतूत का हमारे मन पर सीधा प्रभाव पड़ा, बस खून में संघर्ष की आग दौड़ गई। जैसे ही हमारे नाम का पत्र पहुँचा, खातेदारों को बताया जाता था एक बाबू और आ रहा है झाड़ू पंजे वाले जगदीश कुरील आ रहे हैं। बस प्रबन्धक महोदय से और जो भी भाई इस घिनौनी साजिस में लिप्त थे हमारे शिष्टाचार संबंध समाप्त हो गये। हमारे मनोबल को कमजोर करने के लिए वहां पहुँचने से पहले ही जाल फैला रक्खा गया था। बस वही अ० जाति के कर्मचारियों तक को गाली देना इन जातियों में भर्ती करने वाले अधिकारियों को गाली देना इस तरह का व्यवहार शुरू हो गया। हमने इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों से की और न्याय की माँग की और न्याय मिला प्रबंधक महोदय को वहाँ से स्थानांतरित कर दिया गया।

सन् १९८०-८१ में श्री टालीवाल जी प्रबंधक पद पर ट्रांसफर होकर आये। उन्होंने अपमानित करने का एक अनोखा तरीका निकाला। पीने का पानी एक घड़े के बजाय दो घड़ों में भरा जाने लगा। एक प्रबंधक के कमरे में रहता एक सभी के पीने के लिये था। हमारे एक भाई ने प्रबंधक के यहाँ रक्खे घड़े से पानी पी लिया फिर क्या था कि छूत लग गयी। धर्म भी उन बड़े लोगों का खिसकने लगा हम उन दिनों छुट्टी पर थे। लौटने पर मामला सामने आया। प्रबंधक जी से बात की जवाब मिला मैं मर सकता हूँ मगर एक घड़े से पानी नहीं पी सकता।

हमने इसे अपमान समझकर संघर्ष की राह पर कदम बढ़ाया। हेड आफिस, एस० पी०, डी० एम० सभी उच्च अधिकारियों से न्याय की माँग की, यहाँ तक कि बैंक में ताला बन्द होकर मारपीट हुई रिपोर्ट, डाक्टरी परीक्षण हुआ मुकदमा चला। इण्टरनल इनक्वायरी में चेयर में दोषी पाये जाने पर प्रबंधक जी

को कम्पलसरी रिटायरमेंट कानून के अंतर्गत रिटायर कर दिया।

हमारा छोटा भाई ग्रामीण बैंक प्रेमपुर में था उसके साथ भी ऐसी घटना घटी उस मामले में हम चुप नहीं बैठे। छिबरामऊ थाने से मामला लगा पिछले महीनों रीजनल आफिस कानपुर के पर्सनल अफसर की करतूतों से अखबार रँगे पड़े हैं। वह भी ३/१० का मुकदमा थाना कलक्टरगंज से पंजीकृत है, चल रहा है।

हमारे छोटे भाई जगन्नाथ के साथ भी स्टेट बैंक मिनवा जि० गोरखपुर में ऐसे ही अपमान जनक व्यवहार हो रहे हैं। जिसकी हेड आफिस व डी० एम० और उच्च अधिकारियों को जानकारी दी गई है। इनक्वायरी चल रही है। हमारे भाई को दूसरे किसी केस में फँसाने के कुप्रयास किये जा रहे हैं इसे भी झेलना पड़ रहा है।

कभी हम अकेले थे आज हम अपने तमाम संघर्षशील साथियों की सामूहिक शक्ति के बल पर आल इण्डिया पंजाब नेशनल बैंक एस. सी./एस. इम्प्लाइज वेलफेयर एशोशिएसन के झंडे के नीचे खड़े होकर अपने अधिकारों और न्याय की माँग करते हैं।
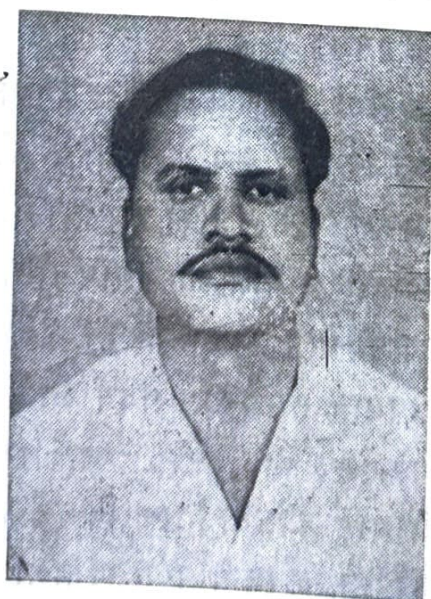
श्री जगदीश कुरील
अध्यक्ष–आल इण्डिया पी० एन० बी०, एस० सी०/एस० टी० इम्पलाईज वेल फेयर एसोसिएशन कानपुर

अपने जीवन के इतने थोड़े से समय में अनुभव किया कि हम गरीब लोगों को निर्भीक व स्वतंत्र जिंदगी जीने के लिए कितनी ही कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। कितनी बार घृणा अपमान और तिरस्कार का शिकार होना पड़ता है। आइये हम सब मिलकर शपथ लेते हैं कि अपने कीमती समय से थोड़ा समय निकाल लेंगे और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा ऐसी कल्याणकारी संस्थाओं को देंगे जो हम गरीबों को बराबरी की जिंदगी जीने के अधिकार के लिये संघर्ष कर रही हैं और अधिकार सामूहिक शक्ति के बल पर ही हासिल होगा।

श्री एस० एल० कुरील

श्री कुरील ग्राम सैंमसी, तहसील व जिला कानपुर के रहने वाले हैं। इनके पिता जी चप्पल के अच्छे व्यापारी थे। जो अपना व्यापार कानपुर नगर में चलाते थे। उनका आयात निर्यात भी करते थे। चीन की लड़ाई में जो माल इन्होंने काश्मीर, पंजाब व दूसरी जगह भेजा था उसका रुपया नहीं मिला और उस माल के तैयार करने में यह यहीं कर्जी हो गये थे। शीतल प्रसाद ने कुछ काम करके धधा किया। इससे गरीबी की कगार पर आ गये। इनके
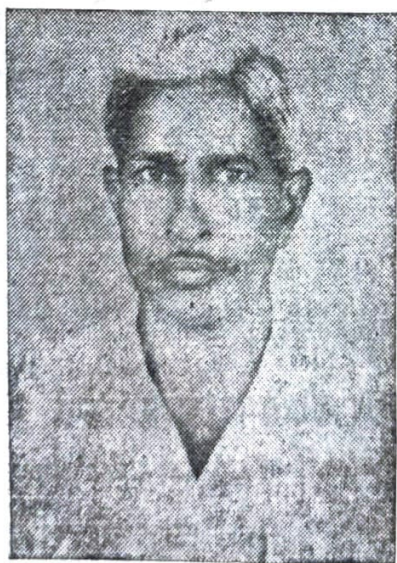
डा० एस० एल० कुरील

दामाद देहरादून में टेलीफोन विभाग में अधिकारी हैं। दूसरी लड़की विजया कुमारी एम० ए० कर रही है। इन्होंने जी० एन० के० कालेज से डाक्टरी पास की थी जिससे इनको स्थान मिल गया और इस समय पर मैनपुरी जिला अस्पताल में हैं।

श्री जयप्रकाश आर्या

श्री कालिकादास बसंतखेड़ा जिला फतेहपुर के बड़े काश्तकार थे, अछूत समाज के होने पर भी सम्पत्ति की पूजा और निजी स्वार्थ साधन के लिये सवर्ण जाति के लोग भी उन्हें सम्मान देते थे। उन्हें इसका तनिक भी आभास नहीं था कि मेरा सम्मान कुछ क्षणिक समय के लिये है। वह इस इन्तजार में रहते कि आज कौन-२ रुपया लेने आयेंगे। रुपया ऋण के रूप में तथा व्यवहार के रूप बँटता गया और रुपयों का कोठार खाली होता गया स्थिति यहाँ तक आ गई कि सम्मान देने वाले भी मुँह फेर कर निकल जाने लगे। श्री कालिकादास की हालत थी–

बढ़त-२ संपति सलिल मन सरोज बढ़ जाय।
घटत-२ सु न फिरि घटे, मूल सहित विनसाय।

उछल कूदकर चलने वाले कालिका दास को सीढ़ियाँ चढ़ना उतरना दूभर हो गया, वह सोच विचार में निमग्न रहने लगे आजकल तो यही कहा जाता है कि उनका ब्लड प्रसार हाई हो गया। शनैः शनैः मन ढीला होता गया शरीर क्षीण होकर चारपाई पकड़नी पड़ गयी और अन्त में ४-५ बच्चों को छोड़कर असार संसार से विदा ले ली।

परिवार निराश हो गया रुपया लेने वालों ने कुछ भी सहायता नहीं की जमीन भी दबंग लोगों ने जोत ली। शोषण सीमा पार कर गया। अतः लड़कों को बसंतखेड़ा छोड़कर भागना पड़ा। हिम्मतखेड़ा (मलवाँ) के निकट शरण ली। धन वैभव खोने की चोट से सम्हलने के लिये बेगार व चमड़े की रंगाई करने लगे। मेरे

बहनोई रामकिशन जी थे और उनके ३ भाई थे दूसरे श्री दल्लूराम जी थे, चिपटकर ऐसे जुटे कि कुछ ही समय में पूँजी बना ली। श्री दल्लू राम के दो सुपुत्र हुए। (१) श्री सुन्दर लाल (२) श्री रंजीत प्रसाद।

श्री सुन्दर लाल, सामान्य शिक्षा काम चलाऊ, घर सम्हालने का काम। श्री रंजीत प्रसाद एम० काम० करके अंकेक्षक अधिकारी के स्थान पर कोल इण्डिया राँची में सेवारत हैं श्री सुन्दर लाल ने मान्य श्री भीमराव अंबेडकर के शिक्षा-संगठन-संघर्ष यह तीनों सूत्र हृदयंगम करके बच्चों की शिक्षा में जुट गये। ५ बच्चों की शिक्षा विवरण निम्न है। लड़कों की शिक्षा से अधिक महत्त्व है कि बहुओं और बेटियों को भी शिक्षित कर काम में लगा दिया।

लड़कों का विवरण

१. जयप्रकाश आर्य एम. ए., बी. काम., एल. एल. बी. कम्प्यूटर आपरेटर पं. ने. बैंक मालरोड कानपुर। पत्नी अणिमा आर्या एम. ए., बी. एड परियोजना अधिकारी कानपुर देहात।

२. प्रेमचन्द बी. ए. सहायक यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंश एटा। पत्नी सरोजकुमारी गृहकार्य में।

३. महेन्द्र पाल–हाईस्कूल, पत्नी मुन्नीदेवी हाईस्कूल गृहकार्य में पिता को सहयोग।

४. योगेन्द्र पाल बी. ए. असिस्टेण्ट जीवन बीमा निगम झाँसी, पत्नी लाजवती बी. ए.।

५. अशोक वती कक्षा ८ पति श्री सी. एल. मौर्या प्रबंधक इलाहाबाद बैंक हमीरपुर।

६. चन्द्रकान्ती एम. ए. पति–होरीलाल टाइपिस्ट बैंक आफ बड़ौदा इलाहाबाद।

नोट–पुत्र, बहुवें तथा पुत्रियाँ सभी शिक्षित हैं घर में कोई अशिक्षित नहीं है।

अम्बेडकर साहब के मिशन को बढ़ाने में ग्राम बरिगवाँ के दलित भाई श्री सुन्दरलाल कुरील जिला फतेहपुर में अग्रगण्य हैं।

श्री जयप्रकाश आर्या

अभाव में भी लगन से पनपे

श्री रमेश व श्री सुरेश

बहन चन्द्रानी रायपुर (नर्वल) गाँव में श्री पूसूदास (शंकर) जी से ब्याही थीं। दो बच्चों की माँ थीं, ढकुवापुर आई थीं यहीं से दो बच्चों को छोड़कर स्वर्गारोही हो गयीं। बच्चे अनाथ हो गये। शंकर जी की माँ दूसरी थीं पटाव नहीं होता था स्वयं बनाते खाते थे। बच्चों को पिताजी ने नहीं ले जाने दिया कहा बवुआ दोनों बच्चे रहेंगे कहाँ इन्हें लेकर रखोगे बैठने से काम नहीं चलेगा इनकी दाई इन्हें छुयेंगी नहीं फिर इनको यहीं छोड़ जाओ। देखा न, कुहुरू तो मुझसे चिपटा रहता है तनिक इसे लेकर देखो शंकर जी ने गोद लेने को किया तो नाना के चिपट गया। गनपत मेरे साथ रहने लगे। ताजपुर में साथ रखता पर मैं असफल हो गया गनपत को पढ़ाने में।

जमींदारों की लड़ाई में परिवार बिखर गया। शंकर जी

श्री रमेश

श्री सुरेश

बच्चों को लेकर रायपुर चले गये। कैसे समय कटा, जानने में नहीं आया। कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि सवाइतपुर में बच्चों सहित रहने लगे हैं। वहाँ पर एक लड़का (गनपत) किराये पर गाँव के जानवर चराता था और कुहुरू प्रसाद पढ़ता था। शंकर जी प्राय: मुझसे मिला करते मैं पूछता शंकर जी कैसे बसर हो रही है। गाँव में श्री केदार सिंह कबीरपन्थी हैं उनके भजन, उपदेश से मन मजबूत हो गया है। वह ऐसे विचार के हैं कि छूतछात नहीं मानते सभी के दरवाजे भजन करने लगते हैं। निकट आपत्ति से छुट-कारा दिलाने वाले श्री केदार सिंह के भजन सुनो–

सतगुरु शब्द

ओझा डाइन डर से डरपै।
जहर जूड़ होइ जाई।
विषधर मन में करे पछतावा।
बहुरि निकट ना आई।
हंसा सतगुरु शब्द सहाई।
गगन में झूला पड़ो, जाकी पैंग पतालै जाय।
ध्यान करो आनन्द होगा।

शंकर जी ने कहा तुम्हारी खंजरी की तारीफ सुनी है अगले दिन बुलवाया है। मैंने उनके दर्शन किये भजन में भी शामिल हुआ कहा ज्वाला जी बीच-बीच में मण्डली में आ जाया करो। हमें तुम्हारे भजन खंजरी से बड़ा आनन्द आता है। कबीर वाणी से प्रभावित शंकर जी ने भी समय काट दिया मैं भी श्री केदार सिंह का चाहक बना रहा।

गनपत और कुहुरू प्रसाद समय को बाँधकर चलते रहे। कुहुरू प्रसाद जो अब के. पी. कुरील के नाम से जाने जाते हैं के दो पुत्र हैं। रमेश, एम. ए. करके सर्विस में हैं। सुरेश विद्युत इन्जीनियर हैं। इनका विवाह श्री बिहारीलाल मनोरंजन कर अधि-कारी आगरा की सुपुत्री से हुआ है। गनपत का पुत्र भजनलाल दो भाई हैं। एक उद्योगी, दूसरा एल. आई. सी. में है मैंने कामकाज में

शामिल होकर सुरेश को समाज सेवा करते देखा है। रमेश तो मँजा समाज सेवक है। सुरेश मान अपमान से दूर समाज सेवी भी है। दोनों भाई अभी भी और आगे जाने के प्रयत्न में लगे हैं। मैं सभी बच्चों के स्वभाव से प्रसन्न हूँ और गनपत तथा के. पी. कुरील की पारिवारिक उन्नति की कामना करता हूँ सब मुझे भी सम्मान देते हैं।

श्री पूसूराम

श्री पूसूराम आत्मज श्री दुर्गा, शुभ स्थान बंगला कुड़नी जिला कानपुर है। भूमिहीन निर्धन परिवार बेबशी से पूसूराम को मिडिल से आगे न ले जा सका। मिडिल के बाद कई वर्ष तक यह मेरे साथ जिला बोर्ड के चुनाव में सहयोगी रहे। गाँव में जूतियाँ बनाने का काम पिता श्री दुर्गा प्रसाद करते थे परन्तु गाँव में परिवार का भरण-पोषण ठीक तरह से न हो रहा था। श्री पूसूराम ने जहानाबाद में स्थान पकड़ा और शू-मेकर का काम करने लगे। संयोग ही कहें कि इन्हें रक्त दोष ने जकड़ लिया और उससे संबंधित अन्य बीमारियों ने ऐसा जकड़ा कि जीवन की आशा क्षीण हो चली। बच्चों का भाग्य जोर कहें कि पूसूराम जी अभी भी बीमारियों से जूझते परिवार को उन्नति पथ पर ले जाने में संलग्न हैं। इनके चार मेधावी पुत्र हुए—

१. रामसजीवन टेलरिंग के उद्योग में लगा है।

२. रणधीर बी. ए. करके एम. ए. को लपक रहा है।

३. बलवीर बी. ए दूसरा वर्ष में झपट्टा मार रहा है। यह पहले पढ़ाई से निराश हो चुका था किताब के हर पन्ने में लिखा था, मैं नहीं पढ़ पाऊँगा।

एक वह किताब पिता की दृष्टि में आ गई अब वह अपना अधिक समय बलवीर को समझाने में देने लगे अंत में गरियार बैल की तरह बलवीर को काढ़ लिया और अब पढ़ने में रुचि ले रहा है। चौथा रघुवीर था। रक्तश्राव से स्वर्गारोही हो गया बी. ए. के बाद यह हादशा श्री पूसूराम को असह्य हो गया। परन्तु परिवार को सम्हालने का काम था सम्हलकर कोई न कोई आर्थिक

सहयोग जुटाने के लिये कार्य कर लेते हैं और सभी बच्चे इलाहाबाद में पढ़ रहे हैं ताकि व्यय-भार पिता पर अधिक न पड़े समय निकालकर टेलरिंग व रिपिट बनाने का काम करके शिक्षाध्ययन में लगे हैं। यह साहस और लगन की देन है कि एक रुग्ण पिता बच्चों को राह पकड़ाने के लिये जुटा है। पूसूराम को गुप्ता तथा पुरुषोत्तम के नाम से भी जाना जाता है। मैं लगनशील बच्चों व पिता की सराहना व उन्नति पथ पर अग्रसर होने की शुभ कामना करता हूँ।

श्री पूसूराम

श्री पूसूराम कह दिया करते हैं–

मैं आप अपनी तलाश में हूँ।
मेरा कोई रहनुमा नहीं है।
वह क्या बताएँगे राह मुझको।
जिन्हें खुद अपना पता नहीं है।

श्री प्यारेलाल

खोजऊपुर

मैं जिला कांग्रेस कमेटी में था। प्यारे लाल ने आकर बताया कि रामा बाजपेयी ने कुएँ में पानी भरने से रोका व मेरे लड़के को मारा। फलदान आया था मैंने वैधानिक कार्यवाही की और मुकदमा भी चल गया। मैंने लिखा कि फलदान में इतना हुआ है बारात में उभय पक्ष से कहीं मारा-मारी न हो जाय अतः प्यारेलाल

की कोठरी के द्वार पर पुलिस दो दिन पहरा देती रही आने वालों को टोककर कहती हाल्ट-हाल्ट की धुन ने गाँव में समा बाँध दिया और कई मुकदमों में बाजपेयी को गिरफतारी से बचने के लिए कई दिन उँख के खेत में रात-दिन बिताने पड़े। प्यारेलाल कहते यह मेरी जीत है गाँव प्यारे लाल के पक्ष में हो गया।

बाजपेयी मेरे साथी थे परन्तु प्यारेलाल हरिजन की सहायता करना अपना प्रथम कर्तव्य था।
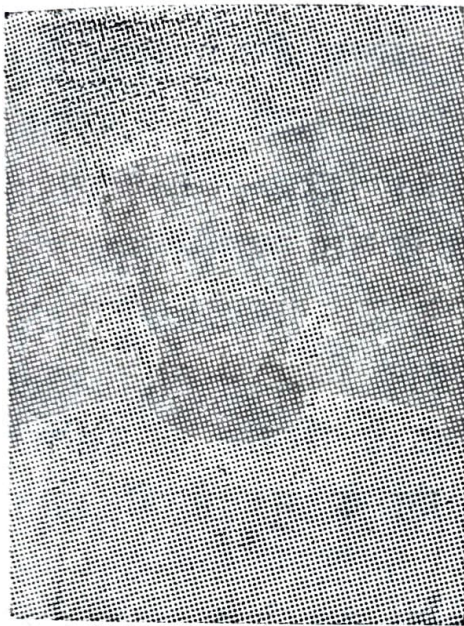
श्री प्यारेलाल

श्री बेनीप्रसाद

श्री रतीराम

ग्राम बीहूपुर में तीन हजार किसान ५०० के लगभग भूमिहीन खेतिहर मजदूर हैं। इतने भूमिहीनों की बसर मजदूरी पर निर्भर है। इस साधनहीन गाँव में पिता श्री मोलाराम के ६ पुत्र हैं उस समय जिसके जितनी अधिक औलाद होती, उतना ही धनी कहा जाता था। अधिक लड़के अधिक मजदूरी करके घर भर की जीविका

चला लेंगे। पिता पुत्र धन से भरपूर होने पर भी अधिक चिंतित रहते। किसी प्रकार नहर गंग की भूमि खेती करने को मिल गई पर ईर्ष्यालु और शोषक प्रवृत्ति के लोगों की दृष्टि इस पर जमी और उस पर मुकदमेबाजी हो गई। पिता जी की गरीबी और अधिक इस लड़ाई से बढ़ गई सोचते थे लड़कों को शिक्षा दिलाएँगे मजदूरी में मुझे भी सहयोग देना पड़ा। किसी प्रकार प्राइमरी शिक्षा गाँव में प्रारम्भ हुई छोटे भाई पुलिस नौकरी में आ गये उनकी सहायता से बल मिला और एम· ए. करके एल· एल. बी· की और जैसे कदम बढ़ाए कि पंजाब नेशनल बैंक में सर्विस मिल गई मेरा पुत्र ननिहाल में था बीमारी में डाक्टरों की लापरवाही से वह पोलियो रोग से ग्रसित हो गया। शिक्षा का महत्त्व समझ में आ चुका था। लड़के को स्वयं घर के लोग स्कूल में बिठा आते हैं वह हाई स्कूल कर रहा है। समायू राव नाम है विकासराव व दीप्तिराव और पुत्र हैं। किसी प्रकार शिक्षा में ध्यान जमने से ही पी. एन. बी· व पुलिस की सर्विस से परिवार की जीविका चल रही है पिताजी अभी नहर गंग के मुकदमे में व्यस्त रहते हैं।

साधनहीन समाज के उत्थान का द्वार शिक्षा से ही खुल सकता है। ऐसा अपने साथी पाठकों से निवेदन करता हूँ।

———

बजरंग दंगल कुड़नी

कुड़नी दंगल बहुत पुराना दंगल है। मेरी स्मृति में पुराने दंगल के अधिष्ठाता श्री उमराव सिंह अवस्थी थे। भदई अमावस्या के बाद के मंगलवार को दंगल लगता था। एक बार सुन्दरपुर और जामू की दंगली जमातों में ठन गई। एक आदमी कहीं रास्ते में मारा गया। दंगल भी झंझट के कारण बिगड़ गया। अतः दूसरे मंगलवार को दंगल लगना तय हो गया। इस दंगल में जामू से आने वालों की, सैनिकों की तरह की कतारें देखते बनती थीं। अनुशासित दो या तीन लाइनों में ऐसे चले जा रहे थे जैसे युद्ध की तैयारी में पैदल सैनिक जाते हैं। बात सुनी हुई है कि फिर इस दंगल में दूसरा प्रतिद्वंदी दल नहीं आया। दंगल की ख्याति बढ़ती गई। श्री उमराव सिंह के स्वर्गारोही होने पर दंगल फीका पड़ गया। मुझे लगा कि श्री उमराव सिंह ने स्वप्न में कहा है ज्वाला बबुआ दंगल कैसे लगेगा। मैं विधायक इसी साल बना था। श्री बीरेन्द्र सिंह और श्री रामलाल गुप्ता सरपंच कुड़नी तथा युवकों ने दंगल लगवाने की राय दी और दंगल भदई अमावस भोर लगना तय हो गया। अधिक प्रचार से इनामी दंगल लग गया। प्रायः इस भदई के दंगल में बरसात होने से दंगल बिगड़ जाता था। यह तिथि टालने के लिये मैं दूसरे दंगल में उपस्थित न हुआ। पहलवानों और दर्शकों की गालियाँ सहनी पड़ीं। मैंने कहा कि ये गालियाँ कब तक सुननी पड़ेंगी। जब तक दंगल इस साल न लगवा दोगे।

मैं चाहता यही था कि दीवाली भोर मंगल को दंगल लगना तय हुआ और इनामी दंगल धूमधाम से सम्पन्न हो गया। इस प्रकार तिथि बदली। ८ साल तक चन्दे के सहारे दंगल का

व्यय उठाया जाता रहा। कुछ सहयोगियों के नाम देना उचित समझता हूँ।

मुख्य सूत्राधार सर्वश्री वीरेन्द्र सिंह अवस्थी कुड़नी, रामलाल गुप्ता, बैजनाथ तिवारी अरजहामी, शिवपाल सिंह व कामता प्रसाद यादव नरायनपुर साढ़, जवाहर लाल तिवारी सुन्दरपुर, रामधनी कुरील मुहम्मदपुर, रामप्रताप सिंह, सूबेदार सिंह यादव देवपुरा, रामऔतार सिंह, पन्नालाल बाजपेयी उमरा, फगुनीराम (पंजाबी) कुरील चन्दापुरवा (हजीपुर कदीम), मदारी सिंह चतुरीखेड़ा, जयरामसिंह यादव, लाखन सिंह कीसाखेड़ा, सिद्धिनाथ यादव बीरनखेड़ा, श्यामलाल दीक्षित, दिग्रज सिंह गाजीपुर, दुर्गासिंह चौहान अपने साथियों समेत दंगल के लिए चन्दा कराने में सहयोगी रहे।

श्री बेनीसिंह अवस्थी दंगल के एक सप्ताह पहले मुझे काम बताना बन्द कर देते थे। उनकी राय थी कि हमेशा लगान जैसी उगाही काम न आयेगी। दंगल समाप्त हो जायेगा। चन्दे का ढर्रा बहुत दिन विधायक होने से चल चुका है ऐसा करो कि सदैव दंगल लगता रहे यह राय पसंद आई और दंगल में बैठने का सुविधा शुल्क दर्शकों से लिया जाने लगा। एक विशिष्ट दीर्घा उच्च सम्मानित जनों के लिए स्थापित की गई। दंगल में आई. जी., डी. आई. जी., जिलाधीश, एस. पी., एस. एस. पी. दंगल का उद्घाटन करने का समय देते रहे हैं। दंगल सर्वदलीय होता है। अतः हर दल के उच्च नेता भी दंगल की शोभा बढ़ाते रहे हैं। ३६वाँ दंगल हो चुका है। बजरंग दगल और कुड़नी एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये हैं।

विशेष—हमें आशा है साथी लोग इसे बनाये रखेंगे। दंगल का पुराना स्थान छोटा पड़ने लगा तो श्री वीरेन्द्र सिंह की राय से तालाब के किनारे गाँव के पूर्व का मैदान दंगल स्थल बनाया गया, यह दंगल स्थल दंगल समिति के अधीन है व्यक्ति विशेष इस भूमि का अधिकारी न होगा। दंगल के प्रेमी श्री बेनीसिंह के निर्वाण के

बाद यह दंगल श्री बेनीसिंह स्मारक बजरंग दंगल के नाम से लग रहा है। पिछले ३६वें दंगल की कमान श्री कृष्ण गोपाल वर्मा रवाईपुर ने कुशलता और कड़ा परिश्रम करके सम्हाली थी। श्री ओ. पी. आर्या अध्यक्ष थे।

दंगल में आने वाले पहलवानों के जिले-कानपुर पूर्व की ओर जिला फतेहपुर, इलाहाबाद, बनारस, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, लखनऊ, बरेली तथा अलीगढ़, शाहजहाँपुर, बहराइच, सीतापुर, हरदोई, फतेहगढ़, अलीगढ़, मेरठ, दिल्ली, मथुरा हरियाणा, बुन्देलखण्ड आदि सभी जगह के पहलवान आते हैं।

सड़ौली गाँव

सड़ौली गाँव तहसील घाटमपुर जिला कानपुर देहात में दलित समाज की अच्छी तथा प्रगतिशील आबादी है इस गाँव में कई वर्ष से एक परिवार पिछड़ी जाति (कुर्मी) का है जिसे अति मूलक कहा जा सकता है। दलित समाज को प्राय: धक्के लगा करते हैं। इस वर्ष भी घृणित एवं अप्रिय घटना घटी और एक सुलझे बुजुर्ग को बुरी तरह मारा एवं जलील किया गया। कारण क्या है इस प्रकार की घटनाएँ होने का। इन्सानियत कुचली जा रही है, आस-पास के गाँवों के मानव समाज सुधारक हैं परन्तु मुट्ठी भर गुण्डे सम्हाले नहीं जा सके।

कांग्रेस की सभा हुई इसे दलितों में जागृति लाना कहा जा सकता है अथवा निकट के चुनाव में अपना माहौल बनाना। कई गाँव में ऐसी घृणित घटनाएँ घटी हैं और घटती जायेंगी। दलित समाज में चेतना का अभाव परिलक्षित होता है।

सड़ौली के सरकारी सर्विस में (कुरील भाई)

१. जगदम्बा प्रसाद पुत्र श्री शिवप्रसाद टेलीफोन इन्जीनियर बी. एस. सी. सूरत से।

२. राजेन्द्र प्रसाद पुत्र श्री शिवप्रसाद जे. ई., एल. डी. ए. लखनऊ पोलिटेक्निक।

३. विमलप्रकाश पुत्र श्री शिवप्रसाद, एच. बी. टी. आई. क्लास द्वितीय।

४. रामऔतार पुत्र श्री भगवानदीन उर्फ बड़कऊ, पालीटेक्निक महोबा से, जे. इ. ग्रामीण मंत्रालय सेवा।

५. गंगादयाल पुत्र श्री वंशगोपाल, जे. ई. पालीटेक्निक नोएडा, गाजियाबाद।

६. रामस्वरूप पुत्र श्री मिहीलाल, बी. ए., एस. आई. पुलिस, विसवाँ, सीतापुर।
७. रामबाबू पुत्र श्री जिलेदार, लैब टेक्नीशियन, बी. एस-सी.।
८. रामप्रकाश पुत्र श्री मन्नीलाल, एम. ए. लेक्चरर अँग्रेजी जनता इण्टर कालेज शाहजहाँपुर।
९. रामप्रसाद पुत्र श्री जिलेदार, इण्टर, लखनऊ रेलवे में चार्जमैन।
१०. फूलचन्द्र पुत्र श्री झूरी, यूपिका कानपुर, चपरासी।

वीरपुर घाटमपुर

श्री रामलाल संखवार वीरपुर, एम. ए., एल. एल. बी., मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, सी. जी. एम. फर्रुखाबाद।

मुंसिक मजिस्ट्रेट से प्रमोशन जज, शिक्षा कानपुर से ही घर से अत्यन्त निर्धन, लगनशील ६ भाई हैं। यह छोटे थे सभी भाई अपनी नौकरी व काम से पैसा जुटाकर मदद करते थे। इन पर कानपुर देहात को गौरव है।

अरंजराम

अरंजराम ग्राम पंचायत मात्रकम आवादी वाली ग्रामसभा है। हरिजन बाहुल्य होने से आरक्षित सभा है। पहले मात्र एक घर वाले ठाकुर सभापति होते रहते थे। चेतना आई और कई बार से श्री विश्वनाथ पासी सभापति होते रहे। इस समय श्री मेवालाल जी पासी सभापति हैं। चुपके पड़े रहने वाले गाँव में निम्न पद धारक हैं।

१. डा० अशोक आत्मज विश्वनाथ, बी. एस-सी., लालगंज, रायबरेली में सेवारत हैं।
२. श्री सुपरेण्ड आत्मज सत्यनारायण, एच. बी. टी आई. में हैं।
३. श्री संतोष कुमार आत्मज विश्वनाथ पूर्व प्रधान बी. ए., एल एल बी कानपुर नगर।

अम्बेडकर ग्राम योजना में गांव रखा गया है

(१) प्राइमरी स्कूल खुल गया।

(२) इण्डिया मार्केट, हैंड-पम्प तीन लग चुके हैं।

(३) एक कुँआ बन चुका है, बिजली सड़क की योजनाएँ नहीं बनीं।

मुझे प्रसन्नता है कि इस छोटी सी आबादी वाले गांव के कुछ नवयुवकों को प्रगति का अवसर हाथ लगा अभी और भी लड़के अच्छी सर्विस में हैं। मेरी शुभकामनाएँ इस गांव के साथ हैं।

सतगुरु 'कबीर साहब' की वन्दना

जिन्हें श्रुतियाँ निरन्तर गाती रहती हैं,
जो कल्पों के अन्त में प्रलय कर सकते हैं।
सत्यवादियों ने जिन्हें सतगुरु कहा है,
योगियों ने जिन्हें योगेश्वर कहा है।
औतारियों ने जिन्हें भक्तवर प्रहलाद कहा है,

उन्हीं कर्मवीर 'कबीर' के पावन चरणो में, सविनय वन्दना है।

कबीर साहब का प्रादुर्भाव

जिस समय चौदहवीं शदी के अन्त में, भारत में मुगल साम्राज्य था, दिंदू-मुसलमान के बीच गहरी खाईं थी, दोनों धर्मावलम्बियों की धर्मान्धता से मानवता की ज्योति धूमिल पड़ रही थी। श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा की नींव हिलने लगी थी। मानववादी संस्कृति पर दानववादी नर्तन होने लगा था, क्रूरता नृशंसता एवं अनीति भारतीय रंगमंच पर स्वच्छंद क्रीड़ा करने लगी थी। दलित मानव के आर्तक्रंदन से मानवता खिसक उठी थी। सामान्य जन-जीवन असहाय हो, नैराश्य के सागर में डूबने लगा था। निर्धन, निर्बल वर्ग पर हिंदू-मुसलमान की नंगी तलवारें उनके लहू से अपनी तृष्णा बुझाने को लपक रही थी। उस समय का अकुलाया मानव समाज एक ऐसे तेजपुंज की प्रतीक्षा में था, जो जन-जीवन में व्याप्त निराशा की कालिमा को दूर कर सत्य की दीपशिखा प्रज्ज्वलित कर सके।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब इस वसुंधरा पर मानवता पर कुठाराघात हुआ है। धार्मिक उन्माद में भले-बुरे का विवेक खो मानव को दास बनाकर रखने की सुगठित योजना

बनाई है, तब तक उन कुरीतियों को नष्ट करने के प्रत्येक युग में कोई न कोई महान विभूति अवतरित हुई है। उन्हीं महान विभूतियों में सत्य की ओर चलने वाले सत्गुरु कबीर भी एक शक्ति के रूप में संवत् १४५३ में अवतरित हुये थे। जिन्होंने इस मूर्ति-पूजित पृथ्वी पर सत्य की दीपशिखा प्रज्ज्वलित की थी। कर्मवीर, कबीर जब काशी जैसे पवित्र स्थल पर कमल के पत्ते पर प्रकट हुये, समस्त देश धार्मिक उन्माद में डूबने लगा था। उस समय इन्होंने विश्वास और भक्ति का एक विशाल तम्बू तानकर, निराश्रित एवं भ्रमित समाज को अपने ज्ञान रूपी शामियाने के नीचे मानववादी विचारधारा को आश्रयविधा कबीर साहब ने धार्मिक कुचक्रों, सामाजिक विडम्बनाओं एवं बाह्य आडम्बरों से परे लोगों को सुख शांतिपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया। उनकी वह निर्गुण अमर वाणी चिरकाल तक भारत के कण-कण में ध्वनित होती रहेगी। भारत की भावी संस्तुति, युग-युग तक इस महा मनीषी के चरणों में श्रद्धा एवं निष्ठा की पुष्पाँजलि अर्पित कर नतमस्तक होती रहेगी।

सत्य की ज्योति शिखा को प्रज्ज्वलित करने वाला वह महा मानव अमर रहेगा और अजर अमर रहेगा उसकी निर्गुण सत्य वाणी। उनके कुछ शिक्षाप्रद दोहे इस प्रकार हैं—

(धार्मिक उन्माद को खतम करने के लिए)

मंदिर में तो बुत धरे हैं, मस्जिद में सफम सफाई है,
दिल दरगाह में दरसे, एकदम नूर खुदाई है।
मंदिर तोड़ो मस्जिद तोड़ो, यह तो बड़ा मजा का है,
न दिल किसी का तोड़ो यारों ये घर खास खुदा का है।

(गरीबों को न सताने के लिये समाजवाद की दिशा का बोध)

साहब इतना दीजिये जामें कुटुम समाय,
खुद भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।
कबिरा घास न मीजिये जो पाँयें तर होय।
कबहुँक उड़ि आँखिन परै पीर घनेरी होय॥

(साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये फटकार)

आये एकै देश में उतरे एकै घाट ।
हवा लगी संसार की हुइ गये बाराबाट ।।

(हिन्दू-मुस्लिम एकता)

बीर बघेला के सत्गुरु हैं, बिजली खाँ के पीर ।
हिन्दू मुसलमान दोनों की, तोड़ी भरम जंजीर ।।

(भजन में इधर उधर कैसा)

भई एक के रही सहस के विश्वा पंचभतारी ।
कहैं कबीर काके संग जरिहै सहस पुरुष की नारी ।।

(सभी धर्मों में समान भाव है)

कुँआ तो एक है पनिहारिन अनेक ।
बासन तो बहुत हैं पानी सब में एक ।।

कट्टरवादी हिंदुओं की धर्मान्धता के कारण धर्म परिवर्तन की भावना रखने वाले अछूतों को साहस बंधाने वाले 'कबीर' की निम्न पंक्ति ने धर्म परिवर्तन से बचाया था ।

पाथर पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़ ।

जब धन्यवाद, थैंक्स की भरमार से श्री बेनीसिंह जी का दाहिना हाथ दर्द करने लगा

पं० जवाहरलाल के निर्वाण के बाद पं० विजय लक्ष्मी का नाम फूलपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से आया। माननीय श्री बेनी-सिंह जी रामसिंह के साथ मुझे भी ले गये। हंड़िया तहसील कांग्रेस कार्यालय में मुझे छोड़कर आगे बढ़ गये। रात विश्राम के बाद प्रातः से श्री कीर्ति जायसवाल हंड़िया घुमाने ले गये। असरदार मुस्लिम नेताओं से मिलकर ट्रेनरी क्षेत्र में गये और वहाँ प्रभावशाली भाइयों से मिलाया। चौपाल में बैठक भी हुई और मेरे सत्कार में एक बड़ा गिलास शर्बत दिया गया। सर्दी के दिन थे मैं गर्मी के दिनों में भी शर्बत नहीं पीता था परन्तु इनकार करते भी नहीं बना हिम्मत करके साँस बाँध गिलास का शर्बत पी गया। दिनभर का परिश्रम मुझे बेकार लगा।

दूसरे ही दिन श्री बेनीसिंह जी ने आकर जानकारी ली मैंने कह दिया साहब हंड़िया में एक चावल भी पकता नहीं दीख पड़ता। करते रहो मेहनत कुछ हाथ लग ही जायेगा कहकर चले गये।

दूसरे दिन धर्मूपुर में पं. विजय लक्ष्मी के आगमन पर विशाल सभा का आयोजन था। कीर्ति और एक साथी के साथ इक्के से धर्मूपुर को चल पड़ा। दूसरा साथी मँजा हुआ था। "वोटवा डरिबे बैल की पेटिया, जवाहर की जय बोलबे हो" गाता गाता चला। सड़क उबड़-खाबड़ थी, इचकौले लेता इक्का धर्मूपुर

पहुँच गया। जमाव बहुत बड़ा था। स्थानीय विधायकों के भाषण सुरीली ध्वनि में हो रहे थे। सुनने में आकर्षण पैदा करने वाले नहीं थे। पं० विजयलक्ष्मी के आने का समय निकट जानकर सभापति ने श्री बेनीसिंह को आहुत किया और जनता से कहा कि आप यहाँ के चुनाव इंचार्ज श्री बेनीसिंह जी का भाषण सुनें। मान्य श्री बेनीसिंह ने सभापति से प्रार्थना की कि मेरे साथ आए हुए श्री ज्वाला प्रसाद कुरील सभापति जिला काँग्रेस कमेटी कानपुर एवं विधायक को भाषण के लिये स्टेज पर बुलाएँ। सभापति को यह नाम पसंद न आया तो पुनः बेनीसिंह जी ने कहा कि मेरा प्रमुख कार्यकर्ता है देखें तो बानगी, मैं तो मौजूद हूँ ही। मैं जब बुलाया गया तो ऐसा लगा कि श्री सिंह जी ने क्या समझकर मुझे स्टेज पर बुलाने का आग्रह किया है। सभापति के बुलाने पर मुझे स्टेज पर माँ सरस्वती की कृपा से जाना पड़ा।

पहले मैंने सभापति जी से अनुरोध किया कि मेरा परिचय सही नहीं दिया गया। आज्ञा दें कि मैं अपना परिचय स्वयं जनता को दे दूँ। स्वीकार होने पर मैंने जनता से निवेदन किया कि मैं ढोर उठाने वाली जाति का हूँ, उसे जो आप कहते हों वही मुझे समझें। काँग्रेस में रहकर जन-सेवा के नाते आप की सेवा में आया हूँ। मेरे राजनैतिक गुरु श्री बेनीसिंह जी की कृपा से बोलने का अवसर दिया गया है। सभापति जी, विधायक गण, काँग्रेस कार्यकर्ता, किसान मजदूर तथा अन्य उपस्थित महानुभाव। कानपुर से यहाँ आकर मैं नहीं सोचता था कि किसी जनसभा में बोलने का अवसर मिलेगा। मैं आया था यह अभिलाषा लेकर कि यहाँ की जनता के पैरों से झड़े रजकण का स्पर्श कर माथे में लगाउँगा। जो पं० नेहरू को मत देते समय जाने में मतदाताओं के पैरों से गिरती थी। धन्य है! धन्य है यहाँ की जनता जिसने पं० नेहरू को प्रधानमंत्री व विश्व का नेता बनने का शुभ अवसर दिया। मैं पुनः नमस्कार करता हूँ।

भाइयों !

गरीबी मानव जीवन में अभिशाप है किसी जाति व वर्ग में क्यों न हो। अखिल भारतीय कांग्रेस ने इस दिशा में पहले नजर डाली और इस वर्ग को उठाने के लिये इस दल से सम्बन्धित कांग्रेस नेताओं को वरिष्ठ स्थान दिया गया। क्या आप जानते हैं इस समय अखिल भारतीय कांग्रेस की बागडोर किसके हाथ है ? श्री डी० संजीवैया जो इसी दलित समाज से हैं। कांग्रेस संस्था के सर्वेसर्वा सभापति हैं जिसकी रीति-नीति पर सरकार बनती है। कौन नहीं जानता बाबू जगजीवनराम प्रारम्भ से केन्द्रीय सरकार में हैं। जो भी विभाग उन्हें दिया गया उसमें दलित, शोषित, गरीबों के लिये पहले कदम उठाया। कांग्रेस में रहकर खरी बात गरीब जनता को उठाने के लिये कहते और करते हैं। सदियों से चली आ रही मनु जी की रूढ़िवादी नीति जिसके प्रभाव से आज भी मुक्ति नहीं मिल पायी। उस परम्परागत शोषित, पीड़ित नीति को बदल कर मानववादी संविधान बनाने के लिये महामान्य डा० भीमराव अंबेडकर को विधान निर्माण समिति का सभापति बनाया गया।

हमारी रक्तवाहिनी नसों में बहुत पुराना रक्त घुल गया है उसको बदलने में, उसमें परिवर्तन लाने में कुछ समय लगेगा। कांग्रेस की परिवर्तन लाने की नीति का प्रभाव यहाँ भी आ चुका है। श्री वसंतलाल पासी लखनऊ सिटी कांग्रेस के सभापति हैं और मैं अदना सेवक कानपुर जिला कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष हूँ। प्रारम्भ से ही हरिजन उपसमिति का सयोजक मंत्री, महामंत्री के बाद इस समय सभापति हूँ, यह कांग्रेस की ही देन तो है सुधार के कार्यों में कांग्रेसो नेता लीन हैं। आप संतोष और धैर्य रखें तथा कांग्रेस की उदारवादी नीति पर भरोसा रखें और अपने मत का सदुपयोग करें।

अखिल भारतीय कांग्रेस, किसानों की महान् संस्था है। किसान की उपज ही सभी के व्यवसाय को चलाने वाली है।

मजदूर, व्यापारी सभी किसान के आश्रित हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू ने नवीन भारत के निर्माण में भाखरा नांगल जैसे बड़े बाँध का निर्माण कराया। मउ नखत मिर्जापुर तथा देश में और कई बाँध बनाये। राउरकेला, भिलाई दुर्गापुर चितरंजन जैसे तमाम औद्योगिक बड़े कारखाने देश की बुनियाद हैं जिनसे किसान तथा सभी व्यवसायी मजदूर पनप रहे हैं अतः किसान देश की रीढ़ हैं जिसके ठीक रहने पर ही देश उबर सकता है। काँग्रेस किसान और किसान काँग्रेस है। यह है महत्ता किसान समूह की।

किसान के लिए अच्छे नस्ल के जानवर, अच्छे बीज, औजार, पानी, खाद तथा उसका श्रम ही कृषक का जीवन है। जिसके लिए काँग्रेस सतत प्रयासरत है। अतः नेहरू नीति को फलीभूत बनाने के लिए अपने मत का सही प्रयोग करें।

दलित मजदूर किसान से परे एक ऐसा वर्ग है जिसे अंग्रेज शासक ने जमींदार की पदवी से विभूषित किया था। दस्तूर दही के मुताबिक जनता के साथ व्यवहार करने का अधिकार दिया था। दस्तूर दही को किसी ने देखा नहीं। मनमाने ढंग से जनता का शोषण करने में लगे निरन्तर अपने शारीरिक साधनों को सजाने का काम करते रहे। भवन बनाने के लिए वजेवा के लगाने को जनता अपना धर्म मानती थी। कृषि के कार्य में स्वयं गोई व मजदूर न रखकर किसानों द्वारा ही कृषि कराते थे। मजदूर महीनों बेगार में काम करते रहते थे। मेरे चचाजात भाई ने कहा मालिक एक रोड़ी गुड़ मिल जाय तो दिन पार हो जाय। मालिक सुनकर हँसे कहा अच्छा भाई अगले साल गुड़ बुआ देंगे।

अलग-अलग इनकी ज्यादती कहाँ तक गिनाएँ अमानवीय व्यवहार की पराकाष्ठा हो गई थी। अंग्रेजी शासकों के बल पर इनकी मनमानी चलती थी। भारतीय काँग्रेस जब स्वराज्य की लड़ाई चला रही थी कितने ही लोग शहीद हो रहे थे तब इस जमात में ऐसे भी स्वच्छन्द जमींदार थे जो अमन सभा बनाकर अँग्रेजी सरकार का साथ दे रहे थे। उसका एक उदाहरण यह है

कि जब इनकी जमींदारी समाप्त की गई तो यह अपनी जमींदारी बहाल कराने के लिए अदालत की शरण में गये। जब नतीजा कुछ हाथ न लगा तो जनता में शासन बनाये रखने के लिए स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ जैसी जमातें कांग्रेस के विरोध में आ गयीं और चुनाव में जनता के सामने झोली फैलाकर कहने निकले हमें भीख दीजिए पर जनता समझ चुकी थी, यह वही हैं जिन्होंने हमें भिखारी बनाया था। अतः भिक्षा माँगने का इनका ढोंग जनता समझ चुकी है। इसी क्षेत्र में पं० नेहरू के विरुद्ध मत प्राप्त कर विजयी होने के लिए गंगाजल और तुलसी दल का सहारा लिया गया पर सावधान जनता के सामने घुटने टेकने पड़ गये।

कुछ लोग माता का सहारा लेकर चले और कहा गो-वध बन्द हो यह नहीं कहा, गऊ का पालन कर उसे स्वस्थ रखो अपने आप वध करने का प्रश्न न उठेगा। अभी भी गो, गंगा जय धर्म के नारों का उपयोग हो रहा है। आप कह दें कहाँ है आपकी अमन सभा। कांग्रेस के आन्दोलन में बल भर बाधा डाली। अनाप-सनाप मनगढ़ंत से जनता को जेल भेजने जुटे रहे।

आप इनके अमानवीय कार्यों को भली प्रकार जानते हैं, यह ढोंगी हैं। इन नरभक्षी लोगों से सावधान रहें। आप समझदारी से अपने मत का प्रयोग करें।

भाइयो एक बात जनसंघ नेताओं से और पूछो कि कांग्रेस ने हरिजन नेताओं को उच्चतम उच्च अधिकार दे रखे हैं क्या आप ने किसी मण्डल में किसी भी मुसलमान हरिजन कार्यकर्ता को स्थान दिया है—नहीं। वह इसलिए कि अन्दर खाने की इनकी पोलें हरिजन न जान पायें अतः अपनी जनप्रिय संस्था की उम्मीदवार पं० विजय लक्ष्मी को मत देकर कांग्रेस की साख और नीति कायम रखें।

अब मैं मुस्लिम जमात के साथियों से कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।

आजादी की लड़ाई में बलिवेदी पर चढ़ने में जनाब

मुहम्मद अली इंग्लैंड में आजादी लेने के लिए गए और कहा कि मैं आजादी रेने के मकसद से आया हूँ वह लेकर जाऊँगा या फिर यहीं मेरी कब्र बनेगी। वह विहिस्त के राही हो गये और कह गये मेरी कब्र मक्का मदीना में बने, इंग्लैंड में नहीं। उनकी कब्र मक्का मदीना में बनी।

असफाक उल्ला, शाह नवाज और अपने राष्ट्रीय गानों में आजादी की लहर दौड़ाई। सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा। उन इकबाल साहब को कैसे भुलाया जा सकता है। मौलाना हजरत मोहानी फतेहपुर की विशाल सभा में भाषण दे रहे थे। पुलिस ने कहा आपका वारण्ट है। मैं क्या करूँ मेरी तकरीर नहीं रुकेगी और न यहाँ से पैदल जाऊँगा। पुलिस प्रशासन चाहे तो मुझे गोद में उठाकर ले जाय और उन्हें पुलिस गोद में उठाकर ही जेल तक ले गई।

सावधान रहें!

उर्वरा भारत भूमि पर समय-समय पर उद्धारक अवतरित होते रहे हैं। कबीर और रविदास को ठोकरें खाने को मिलीं। उसके बाद गुरु गोविंद सिंह को मानव समाज में एकरूपता लाने और शासन से मुक्ति दिलाने के लिये कठिन श्रम कर रहे थे उनको रसोइया हीन वृत्ति का हो गया कि उनके दो बच्चों को पकड़ा कर दीवाल में जीवित ही चुनवा दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूढ़िगत असमानता और भाषा संस्कृति के प्रचार व वैदिक धर्म को जन-जन तक ले जाने तथा वेदों को हरिजनों को पढ़ाने का अधिकार देने पर सनातनी खिन्न होगये। षडयन्त्र करके शरबत में काँच घोलकर पिला दिया जिससे स्वामी जी निर्वाण को प्राप्त हो गये स्वामी जीअँग्रेजी, संस्कृतशिक्षा का प्रचार-प्रसार कर स्वतन्त्रता के आवाहन के लिए नेता तैयार कर दिए।

इसी महान घटना को देखें, विश्व वन्द्य बापू को जिन्होंने देश को स्वतन्त्र कराया, मानव समाज की गरीबी, अस्पृश्यता के गहरे उसूलों से चिढ़कर वक्षस्थल में गोली पार करा दी गई। उस बापू के सिद्धात कार्यों की पूर्ति हजारों भारतवासी अपना खून बहाकर पूरा नहीं कर सकते। उन्हीं बापू के वसूलों को जीवित जागृत करना होगा तभी हम बापू के पुजारी कहे जा सकते हैं। यह भी आवश्यक है उस नीति के लिए हमको प्रेरणा शक्ति देते रहें। सावधान रहें और ऐसे विरोधियों को मुंहतोड़ उत्तर दें।

पंचशील का प्रभाव

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने आजादी के बाद मक्का मदीना की जियारत का पैगाम कबूल कर लिया और तारीख मुकर्रर कर दी तथा मक्का मदीना को रवाना हो गये। इस समय मक्का मदीना के इमाम सूफी, उल्मा, और मौलवी पं० जवाहर लाल नेहरू के इस्तकबाल की तैयारी में मशगूल थे। इस्तकबाल की तैयारी में मशगूल थे। पण्डित जी से मिलने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार हो रहा था। वह खुशी में पुरजोर आवाज में कह रहे थे–"आज हमारे यहाँ अमन का पैगम्बर आ रहा है।" यह सदा मक्का मदीना के गली-कूंचों, बाजारों और मकतबों में गूंज रही थी। एक समा सा बँध रहा था, हमारे यहाँ अमन का पैगम्बर आ रहा है। पण्डित जी जब मक्का पहुँचे तो अमन का पैगम्बर जिन्दाबाद के नारों से आसमान गूंज उठा। पंचशील पण्डित जी की बहुत बड़ी देन थी जिसकी पुरजोर अल्फाजों में जाहिर की गइ। बड़ी मजलिस में भी इन्हीं अल्फाजों के साथ इस्तकबाल किया गया। दोस्तो, बुजुर्गो! यह भी कहा जाता है कि वहाँ कीबेगमों ने पं० नेहरू को देखने के लिए चेहरे से पर्दा हटाने की माँग की थी।

मक्का मदीना मजहबी मरकज है। यहाँ से ही तमाम दुनियाँ के मुसलमान रोशनी पाते हैं और उसकी याद में सदके जाते हैं। पण्डित जी को अमन का पैगम्बर मक्का मदीना में कहे जाने का मतलब है तमाम मुसलमान भाई इस मजहबी मरकज

की आवाज के साथ अपनी आवाज लगायेंगे और पण्डित जी के उन विचारों की कदर करेंगे जिसकी मक्का मदीना में की गई है।

मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि कुछ सिरफिरे भाई 'अमन के पैगम्बर' को मज़हब का पैगम्बर कहने का लांछन लगा कर अपनी रुसवाई और विरोध जाहिर करके सीधे-साधे भाइयों को गुमराह न करें। इसीलिए मैं फिर कहे देता हूँ कि मक्का मदीना से जो आवाज निकली थी वह थी, "पण्डित जवाहरलाल नेहरू अमन के पैगम्बर हैं।"

अब मैं इस जमात से बिलकुल मुतमईन रहूँ कि वह मक्का मदीना की आवाज के साथ हैं। चुनाव के लिए मैं आप से कुछ और कहूँ मुनासिब न होगा बल्कि आपकी राय से और साथियों को मत देने की रोशनी मिलेगी, जयहिन्द।

फूलपुर सभा भाषण के बाद

मंच पर जाने के पहले जहाँ घिरा खड़ा था ऐसा लगा अधिकाँश हरिजन भाई थे। मंच से बोलकर जब मैं फिर वहाँ पहुँचा तो बड़ी संख्या में हरिजनों ने घेर लिया। मैं इतना घिर गया कि पं० विजय लक्ष्मी बोलकर जब चाय के लिए गयीं। श्री बेनीसिंह जी मुझे न देख पाये और पं० विजय लक्ष्मी से परिचय कराने की बात मन में ही रह गई। पण्डित जी के जाने के बाद श्री बेनीसिंह जी ने कहा अरे तुम कहाँ थे पण्डित जी तुमसे मिलना चाहती थीं। मैंने कहा कि जाति के परिचय से मैं यहाँ घिर गया।

अवस्थी जी ने कहा तुमने मंच पर क्या कह डाला मुझे कार्यकर्ता नेता हिन्दू व मुस्लिम सब बधाई दे रहे हैं कि खूब जिले में छानकर सभापति बनाया है। मैं परेशान रहा तुम इतनी जल्दी हँड़िया चले गये क्या ? अब हँड़िया जा रहे हो हाँ पर अभी एक भोज में चलने को यह भीड़ आग्रह कर रही है। तो जाओ जरूर जाओ कल हँड़िया देखना है।

उसी इक्के से भोज में शामिल होने चला गया। ऐसा सत्कार किया गया जैसे मैं कोई संत गुरू हूँ। चढ़ावा भी मिला और हजारों की भीड़ ने वचन दिया कि हमारे मन में अब कोई उथल-पुथल नहीं है, सब आप ने मिटा दी। अब हम सब पं० विजय लक्ष्मी को वोट देंगे जमकर उनकी विजय होगी।

रात में हँड़िया में आकर विश्राम किया। प्रातः एक रिक्शे पर लाउडस्पीकर से कहता चला जा रहा था। यह मक्का मदीना की तौहीन है। पं० जवाहरलाल हमारे पैगम्बर नहीं हो सकते। मैंने कीरती बाबू से कहा लाउडस्पीकर लगाकर कहो लोग गलत-फहमी में न आएँ। श्री ज्वाला प्रसाद कुरील ने भाषण में कई बार जोर देकर कहा है कि मक्का मदीना से सदा निकली है कि आज हमारे यहाँ अमन का पैगम्बर आया है। मजहब का नाम नहीं लिया गया। ५० हजार की सभा की बात है उस पर धूल न डाली जाय।

प्रातः ९, १० बजे होंगे घूमने की तैयारी में थे कि ५०० हिन्दू-मुसलमान भाइयों ने कांग्रेस कार्यालय घेर लिया और कहा हमें ज्वालाप्रसाद जी से मिलाओ हम सब उनसे मिलकर बस्ती ले जाने के लिए आये हैं। सभा का इन्तजाम है।

मैं नीचे उतरकर आया तो हरिजन और मुस्लिम भाइयों ने सीने से लगा लिया और कहा हमारी गलती की मुआफी हो हम आपको समझ नहीं पाये थे। धर्मूपुर की सभा ने हमें असलियत की जानकारी करा दी है। सब हिन्दू, मुसलमान, हरिजन पं० विजय लक्ष्मी को ही ओट देंगे। आप ५ मिनट का ही समय दे दें। मैं कुछ साथियों के साथ हँड़िया की सभा में गया और सबको आदाबअर्ज किया। मंच पर बैठालकर बात हुई और चाय पानी कराया। कहा आप का हँड़िया आना कांग्रेस के पैर मजबूत कर गया। यहाँ से पं० नेहरू नहीं जीतते रहे पर अबकी पं० विजय लक्ष्मी के हाथ विजय

है हम सब तहेदिल से वादा करते हैं।

हमें खुशी होगी आप जीत की मिठाई हमारे साथ खाकर कानपुर को रवाना हों। मैं फिर कानपुर आया और बीच-बीच में लोग आकर ले जाते रहे। हरिजनों ने भी दिल की घुण्डी खोल दी। चुनाव में परिणाम हँड़िया का निहायत अच्छा रहा।

इसके लिए मैं श्री बेनी सिंह जी का ऋणी हूँ जिनकी वजह से धर्मपुर की सभा में मुझे बधाई दी गई।

श्री बेनीसिंह जी खास-खास लोगों से मिले, ख़ुशी जाहिर की और कार्यालय आकर मुझसे कहा, अगर हम तुम्हें अपने साथ रखते तो और दूसरे गाँवों में अच्छा असर होता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

रमेशचद्र शुक्ल प्रधानाचार्य
दयानन्द बेनीसिंह उ० मा० विद्यालय
कुड़नी कानपुर देहात

मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। ज्ञान का सबसे बड़ा भण्डार है मानव मस्तिष्क। लेकिन इस ज्ञान का उपयोग जन-कल्याण में किया जाना ही इसका सर्वोत्तम उपयोग है। वैदिक युग में सामाजिक व्यवस्था इसी आधार पर चलती थी। चार वर्णों से गठित यह समाज एक उच्च समाज था। वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म था। अर्थात् तीन वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य क्रमशः अज्ञान, अन्याय एवं अभाव से संघर्ष करते थे दूसरे शब्दों में जो मानव जीवन को ज्ञान के प्रकाश से परिपूर्ण करने का पावन कार्य करते थे वे ब्राह्मण वर्ग की संज्ञा से विभूषित होते थे। जो लोग अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए समाज की रक्षा करते थे उनकी गणना क्षत्रिय वर्ण के अन्तर्गत की जाती थी। तथा जो लोग अभाव के विरुद्ध संघर्ष करते हुए जन साधारण के लिये उनके उपयोग हेतु वाँछित वस्तुएँ उपलब्ध कराने के पावन कार्य में रत थे वे वैश्य वर्ण के अन्तर्गत गिने जाते थे।

जो लोग उक्त तीनों कार्यों को न कर उक्त कार्यों में संलग्न लोगों की सेवादि कर सहायक सिद्ध होते थे उन्हें शूद्र संज्ञा दी गई। लेकिन समाज के कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने उक्त वर्ण व्यवस्था को जाति व्यवस्था में बदलकर समाज में विघटन की नींव रख दी। तभी से उच्च समाज का विशेष ह्रास हुआ।

जब वेद विरुद्ध आचरण करने वाले पाखण्डियों ने वेदों की मूल भावना से पृथक पौराणिक मतानुसार मूर्ति पूजा आदि का पाखण्ड फैलाया। वेदों के पढ़ने का अधिकार मात्र द्विज को देकर स्त्री तथा शूद्रादि को ज्ञान के प्रकाश से वंचित रखने का षडयंत्र

किया ऐसे ही समय में अवतरित हुए एक महान् वेद प्रतिष्ठा के प्रतिष्ठापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्डियों से लोगों को सचेत करते हुए वेदों के सत्य अर्थ का प्रकाश समाज में फैलाया ।

कतिपय पाखण्डियों द्वारा स्त्री तथा शूद्रादि को वेद न पढ़ने का प्रचार किया गया । महर्षि दयानन्द ने वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किया कि पृथ्वी के सम्पूर्ण मानव जाति को ज्ञान अर्जित करने, वेदों आदि के अध्ययन करने का समान अधिकार है ।

यथा-यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मंत्र है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावादानि जनेभ्यः ।
ब्रह्म राजानाभ्यांथं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।

परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र, अपने भृत्य व स्त्रियादि और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है । अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़कर और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हो ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार-यदि परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि को पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् एवं श्रोत्र इन्द्रियाँ क्यों रचता ? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी जल अग्नि वायु चन्द्र सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं । वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं और जहाँ कहीं निषेध किया है उसका यह अभिप्राय है कि जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे वह निर्बुद्धि एवं मूर्ख होने से शुद्र कहाता है उसका पढ़ना पढ़ाना व्यर्थ है ।

महर्षि ने स्त्री शिक्षा का पक्ष लेते हुए हुए वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किया है कि गृह एवं समाज की सुव्यवस्था के लिए कन्याओं को शिक्षित किया जाना आवश्यक है ।

अथर्ववेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण-

ब्रह्मचर्येण कन्या३ युवानं विन्दते पतिम् ।।

उक्त मन्त्र सिद्ध करता है कि स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य एवं विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिये।

महर्षि सरस्वती का मत है कि यदि पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी अथवा स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो घर में कलह अश्यंभावी है। अत: गृहस्थ आश्रम की सफलता दम्पत्ति की सुशिक्षा पर निर्भर है।

आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद भी अच्छी प्रकार जानती थी क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेई आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों जाती और युद्ध कर सकती इसलिए ब्राह्मणी को सब विद्या, क्षत्रिय को राजविद्या सहित समग्र विद्या वैश्या को व्यवहार विद्या तथा शूद्रा को पाकादि विद्या अवश्य पढ़नी चाहिये। स्त्रियों को भी व्याकरण धर्म वैद्यक गठित शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। क्योंकि इनके सीखे बिना सत्याऽसत्य का निर्णय पति आदि से अनुकूल वर्तमान यथा योग्य सन्तानोत्पत्ति उसका पालन, वर्द्धन और सुशिक्षा करना घर के सब कार्यों को जैसा चाहिये वैसा करना कभी संभव नहीं हो सकता अस्तु पुरुष के समान ही स्त्रियों को भी पूर्ण सुशिक्षित होना परमावश्यक है।

वास्तव में मानव को सुयोग्य बनाने के लिए उसके मस्तिष्क को दो प्रकार से उन्नत किया जाता है। प्रथम शिक्षा द्वारा दूसरा विद्या द्वारा।

शिक्षा के अन्तर्गत वे सब बातें आती हैं जो शिक्षालयों, प्रशिक्षण केन्द्रों, हाट-बाजार घर, एवं समाज में सिखाई जाती हैं। गणित, भाषा, व्यायाम, रसायन, चिकित्सा, कृषि संगीत, कला आदि सीखकर मनुष्य कुशल कमाऊ, लोकप्रिय एवं शक्ति सम्पन्न बनता है। विद्या द्वारा मनोभूमि का निर्माण होता है। मनुष्य की इच्छा मान्यता, इच्छा भावना श्रृद्धा रुचि एवं आदतों को अच्छे ढांचे में ढालना विद्या का काम है। विद्या के द्वारा मनुष्य की पाशविक

प्रवृत्तियों का संशोधन होता है और यदि मनुष्य इससे वंचित रह जाय तो उसका जीवन अनुपयोगी अविकसित और अपने तथा समाज के लिए भार स्वरूप होता है ।

शिक्षक शिक्षा देता है । शिक्षा का अर्थ है सांसारिक ज्ञान । विद्या का अर्थ है मनोभूमि की व्यवस्था । शिक्षा मानव जीवन के लिये आवश्यक है और विद्या उससे भी आवश्यक है । शिक्षा बढ़नी चाहिए पर विद्या का विस्तार उससे भी अधिक होना चाहिये । अन्यथा दूषित मनोभूमि रहते हुये यदि सांसारिक सामर्थ्य में वृद्धि हुई तो उसका परिणाम भयंकर होगा ।

धन की, विज्ञान की, चतुरता की इन दिनों बहुत उन्नति हुइ है । लेकिन विकास के साथ-साथ हम विनाश की ओर भी बढ़े हैं और सर्वनाश की ओर लगातार बढ़ते चले जा रहे हैं ।

कम सावधान रहते हुए विद्वान मनुष्य सुखी रह सकता है पर केवल बौद्धिक या सांसारिक शक्तियाँ होने पर दूषित मनोभूमि का मनुष्य अपने लिये या दूसरों के लिये केवल विपत्ति, चिंता, कठिनाई, क्लेश एवं बुराई ही उत्पन्न कर सकता है । इसलिये विद्या पर उतना ही जोर दिया जाना चाहिए जितना शिक्षा पर दिया जाता है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार–वेद तथा अन्य वैदिक ग्रंथ मानव में विद्या का समावेश करने में पूर्णतया सिद्ध समर्थ हैं तथा विद्या द्वारा मानव मनोभूमि की रचना कर सुशिक्षा से परिपूर्ण करने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं । कहना अन्यथा न होगा कि वेदों के अतिरिक्त मानव जीवन में समग्र विद्या एवं शिक्षा समाविष्ट करना वेदों के अतिरिक्त किसी भी ग्रंथ की सामर्थ्य नहीं ।

इसी कारण महर्षि दयानंद सरस्वती ने मानव जीवन के प्रत्येक भाग के लिये चाहे वह सामाजिक हो, राजनैतिक, आध्यात्मिक अथवा लौकिक सभी प्रकार की शिक्षा का आधार वेदों को ही माना है । अपने मंतव्य को प्रकट करने लिये स्वामी जी ने कल्याणकारी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की ।

सत्यार्थ प्रकाश चौदह समुल्लासों से विभूषित एक सत्य का प्रतिष्ठापक ग्रंथ है। सम्पूर्ण ग्रंथ को मूलतः दो उपभागों में विभाजित किया गया है। पूर्वार्द्ध भाग में दस समुल्लास हैं। जिनमें ईश्वर नाम व्याख्या बाल शिक्षा विषय अध्ययन अध्यापन विषय, आश्रम व्यवस्था, विवाहादि प्रकरण, वानप्रस्थ, संन्यास विधि, राज-धर्म विषय, ईश्वर विषय, सृष्टि उत्पत्ति विषय, विद्या-अविद्या विषय, आचार अनाचार तथा भक्ष्याभक्ष्य आदि पर प्रकाश डाला है।

सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्ध भाग में चार समुल्लास हैं जिनमें हिन्दू धर्म के विभिन्न संप्रदायों के वेद विरुद्ध मतों का खंडन तथा वेद प्रमाणित सत्य मत का मण्डन किया है। आस्तिक नास्तिक समीक्षा, जैन, बौद्ध, क्रश्चीयन, यवन आदि के वेद विरुद्ध मतों का खण्डन तथा वेद प्रमाणित बातों का मण्डन स्वामी जी ने किया है। सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वमन्ताव्यामन्तव्य महर्षि ने प्रकट किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को विद्या से मनोभूमि का सृजन कर शिक्षा से परिपूर्ण करने का पावन कार्य किया।

अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती को विद्या एवं शिक्षा का यही पर्या मानते हुए उन्हीं के पावन चरणों की हम वंदना करते हैं–

आर्य्यः श्रेष्ठ को नमन मेरा
जग जन हों आर्य्य यही इच्छा।
सत्यार्थ प्रकाश जगत फैले
जग सीखे वेदों की शिक्षा।

राष्ट्रीय एकता के सूत्र

एस० डी० भानू

बी० काम०

प्रशासनिक अधिकारी (राजस्व) (से० नि०)

प्रांतीय उपाध्यक्ष, भारतीय बौद्ध महासभा

किसी भी राष्ट्र को उसके एकीकरण एवं विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वहाँ के निवासी सुखी रहें, सभी का कल्याण हो, सभी एक दूसरे को मैत्री भावना से देखें। 'किसी को दुख न हो' की भावना से यथावत एक दूसरे के साथ भाईचारा, समता, करुणा, मैत्री, शील, न्याय और स्वतंत्रता के आधार पर आचरण करें। इन सबकी विवेचना करने पर यह स्पष्ट तौर पर देखने को मिलता है कि सर्वत्र उपरोक्त मूल्यों का अभाव है। परिणामस्वरूप ही पंजाब समस्या, अखण्ड झारखण्ड, गोरखा समस्या आदि सामने आयीं। जाति, वर्ण, धर्म और भाषा के नाम पर लड़ाई-झगड़ा होता है और विलगाव की माँग की जा रही है। शासन और राष्ट्रीय नेताओं के समक्ष समस्या उस समय और भी विकट हो जाती है जब कोई धार्मिक नेता यदा-कदा ऐसा भाषण प्रसारित कर देता है जिसके कारण लोगों की भावनाओं एवं आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचती है। इस संदर्भ में पुरी के शंकराचार्य के २२ जून १९८८ के भाषण जिसमें उन्होंने हरिजनों को मंदिर प्रवेश को निषेध बताया है का वर्णन किया जा सकता है दैनिक 'आज' दिनांक ६-७-८८ और ७-७-८८ का मुख्य पृष्ठ देखें जिसमें पुरी के शंकराचार्य के बयान के विरोध में हरिजन समुदाय द्वारा की जाने वाली प्रस्तावित कार्यवाही छपी है।

तथागत महामानव गौतम बुद्ध ने मानव को केन्द्र माना और नैतिकता पर बल दिया और कहा कि जहाँ भी दो या दो से

अधिक आदमी एक साथ रहते हैं उन्हें एक दूसरे साथ सदाचरण करने की आवश्यकता पड़ती है। 'बिना दिये हुये किसी की कोई वस्तु न लेना' इससे चोरी, डकैती, राहजनी की घटनाएँ नहीं होंगी। अनावश्यक प्राणी हिंसा न करना, व्यभिचार से विरत रहना, मृसावाद न करें यानी झूठ न बोलें, चुगली न करें तथा शराब गाँजा, भाँग आदि मादक दृव्यों के सेवन से विरत रहें यही तो शील है जो सुखी सम्पन्न जीवन का मापदण्ड है साथ अष्टांगिक मार्ग और पारमिताओं पर जोर दिया। एक आदमी द्वारा दूसरे के प्रति अनुचित व्यवहार ही दुख का कारण होता है। यही दुख लड़ाई-झगड़ा का रूप ले लेती है। जो बढ़ते बढ़ते साम्प्रदायिक झगड़ा का रूप ले लेती है। परिणामतः सम्प्रदाय और जाति के नाम पर अलग राज्य की माँग होने लगती है। ऐसा सद्धर्म के सही स्वरूप को न समझने के कारण होता है।

धर्म के सही स्वरूप के अनुसार धर्म मनुष्य के लिए होता है जो मन के मैल को दूर कर उसे निर्मल बनाने की शिक्षा दे, इससे आदमी राष्ट्रहित की बात करता है और यथावत बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय हेतु कार्य करता है। इसी तारतम्य में धर्म यह भी शिक्षा दे कि ज्ञान के द्वार सभी के लिए खुले रहें इससे राष्ट्र के नागरिक शतप्रतिशत शिक्षित बनने की ओर अग्रसारित होते हैं और राष्ट्र की प्रगति के लिए सभी भाई-चारा और सद्भावना से कार्य करेंगे। इसके साथ ही धर्म इस बात की शिक्षा दे कि केवल विद्वान होना पर्याप्त नहीं है। यदि वह बिना दिये हुए दूसरे की सम्पत्ति पर कब्जा करता है, व्यभिचारी है, झूठ बोलने और चुगली करता है साथ ही शराब और अन्य मादक वस्तुओं का सेवन करता है तब निश्चय ही ऐसे लोगों के आचरण से लड़ाई-झगड़ा और अलगाव की स्थिति पैदा होती है। अतएव राष्ट्रीय एकीकरण के लिए वहाँ के नागरिकों में नैतिकता का होना अति आवश्यक होता है। तभी राष्ट्रीय एकीकरण सम्भव हो सकता है। विद्वान और प्रज्ञावान दोनों अलग-अलग चीजें होती हैं। प्रज्ञावान आदमी सही और गलत की विवेचना कर सही कार्य

करता है। वह बहुत जनों के कल्याण के लिए होता है। उसके कारण बहुत से आदमी सुन्दर हितकर पथ के अनुगामी होते हैं। वह जिस विषय में मन को लगाना चाहता है उस विषय में वह मन लगा सकता है। मन को इधर-उधर जाने से रोकता है। इसके साथ राष्ट्र के सभी नागरिक विशेषकर राष्ट्र के अगुआ और कर्णधारों द्वारा करुणा की भावना और तदनुसार कार्य राष्ट्रीय एकीकरण हेतु जरूरी होता है। जो दुखी है बीमारी या धनाभाव से ग्रसित है उनके प्रति करुणा की जरूरत पड़ती है। ऐसा न होने पर राष्ट्रीय एकीकरण के विरुद्ध गिरोह बनाकर, गिरोह बन्दी बनाकर कार्य करते हैं। करुणा के साथ ही मैत्री की भी आवश्यकता राष्ट्रीय एकीकरण के लिये होती है। जिसकी अवहेलना करने पर आपसी घृणा, द्वेष और आगे बढ़कर साम्प्रदायिक तनाव होता है। अतएव राष्ट्र स्तर पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में इस पर बल दिया जाना चाहिये कि सभी नागरिक एक दूसरे के साथ मैत्री भावना के साथ रहें।

सद्धर्म के अभाव में एक आदमी और दूसरे आदमी के बीच तमाम दीवारें खड़ी हो जाती हैं। वर्ण भेद और जातियाँ उसी की देन हैं। जिस पर चलने वालों का आपसी सम्बन्ध क्रमिक असमानता के सिद्धांत पर आधारित है। यह असमानता कर्तव्य और अधिकार तथा सुविधा के बारे में है। यद्यपि भारतीय संविधान के निर्माता बोधिसत्व बाबा साहब डा० अंबेडकर ने भारतीय संविधान में यहाँ सभी नागरिकों को अपनी उन्नति करने का बराबर प्राविधान किया है लेकिन साथ यह भी कहा है कि किसी भी देश का संविधान कितना ही अच्छा हो लेकिन उस देश के नागरिक उस संविधान के अनुसार एक-दूसरे के साथ आचरण नहीं करते तब उत्तम संविधान होते हुये भी बेकार सिद्ध होता है। 'बाबा साहब अंबेडकर' की उपरोक्त बातें देश के चालीस वर्ष की आजादी के बाद आज भी पूर्णतः लागू होती हुए पायी जाती हैं। देश के सामान्य नागरिकों के व्यवहार की बात के साथ जब बहुसंख्यक

समुदाय जो क्रमिक असमानता पर आधारित है का मुखिया जिसे शंकराचार्य कहा जाता है का अभिभाषण जब-जब साम्प्रदायिक झगड़ा को बढ़ावा देता है। तब निश्चय ही राष्ट्रीय एकीकरण पर आँच आती है। यहाँ अश्वलायन सुत्त में तथागत महामानव गौतम बुद्ध और अश्वलायन ब्राह्मण के बीच हुई वार्तालाप का वर्णन प्रासंगिक होगा जिसके अर्थ और व्यंजन को समझकर शंकराचार्य भी राष्ट्रीय एकीकरण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

अश्वलायन भगवान बुद्ध के सामने उपस्थित हुआ और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का पक्ष भगवान बुद्ध के सामने रखा।

उसने कहा श्रमण गौतम ! ब्राह्मणों का कहना है कि ब्राह्मण ही ऊँचे वर्ग के शेष सब उसके नीचे। ब्राह्मण ही शुक्ल वर्ण है। शेष सब कृष्ण वर्ण हैं, पवित्रता या सुचिता का वास ब्राह्मण के पास, ब्राह्मण ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं। उसके मुख से उत्पन्न, उसके रचे हुए, उसके पैदा किये तथा उसके उत्तराधिकारी। श्रमण गौतम का इस विषय में क्या कहना है।

बुद्ध ने कहा "अश्वलायन क्या ब्राह्मणों की पत्नियाँ रजस्वला नहीं होती हैं, गर्भ धारण नहीं करती हैं और संतान का प्रसव नहीं करतीं। यह होते हुये भी ब्राह्मणों का कहना है कि ब्राह्मण ही ऊँचे वर्ण के हैं।

ब्राह्मण ही ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं...ब्राह्मण ही उसके उत्तराधिकारी हैं।" उत्तर में अश्वलायन ने कहा यह तो ऐसा ही है लेकिन फिर भी ब्राह्मण कहते हैं कि वे ही ऊँचे वर्ण के हैं, वे ही ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं वे ही ब्रह्मा के उत्तराधिकारी हैं।

तब अश्वलायन से तथागत ने दूसरा प्रश्न किया-

अश्वलायन यदि एक शूद्र एक ब्राह्मण कन्या या क्षत्रिय कन्या या वैश्य कन्या से सहवास करे तो मानव संतान ही पैदा होगी अथवा उनके संयोग से कोई जानवर पैदा होगा। अश्वलायन के पास कोई उत्तर नहीं था।

जहाँ तक नैतिक उन्नति कर सकने की बात है तो क्या एकमात्र ब्राह्मण ही अपने आपको राग द्वेष से मुक्त कर सकता है, एक क्षत्रिय नहीं, एक वैश्य नहीं एक शूद्र नहीं।

अश्वलायन बोला नहीं, चारों वर्ण के लोग कर सकते हैं।

अश्वलायन क्या तुमने कभी सुना है कि यवन और कम्बोज देश में तथा अन्य पड़ोसी प्रदेशों में भी दो ही तरह के वर्ग होते हैं, एक आर्य (स्वामी) दूसरे दास (गुलाम) और एक आर्य दास बन सकता है तथा एक दास आर्य बन सकता है।

अश्वलायन–हाँ मैंने ऐसा सुना है।

"यदि तुम्हारा चतुर्वंण्य एक आदर्श समाज है तो फिर वह सभी देशों में क्यों नहीं।"

अश्वलायन अपने जातिवाद और असमानता के पक्ष का समर्थन न कर सका। उसे एकदम मौन ही रह जाना पड़ा।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह बलपूर्वक कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकीकरण के लिये सद्धर्म की आवश्यकता है जो एक आदमी और दूसरे आदमी के बीच की तमाम दीवारों को गिरा दे। आपसी मधुर सम्बन्ध की शिक्षा दे।

राष्ट्रीय एकीकरण के लिये सद्धर्म की यह शिक्षा कि किसी आदमी को उसके जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म से ही उसका मूल्याँकन किया जाना चाहिये। सद्धर्म की शिक्षा के अनुसार सभी को देश का योग्यतम एवं श्रेष्ठतम नागरिक बनने का प्रोत्साहन मिलता है।

इस विषय पर तथागत महामानव गौतम बुद्ध और अग्निक के बीच हुई वार्ता का वर्णन प्रासंगिक रहेगा।

एक दिन पूर्वान्ह में भगवान बुद्ध ने अपना भिक्षा पात्र लिया और भिक्षार्थ श्रावस्ती में प्रवेश किया। उस समय यज्ञाग्नि प्रज्ज्वलित थी और यज्ञ की तैयारी हो रही थी। भिक्षाटन करते-करते भगवान बुद्ध उस अग्निक के घर आ पहुँचे। तथागत को कुछ दूरी पर आता देख अग्निक आग बबूला हो गया। बोला "मुण्डक

वहीं रह, दरिद्र ब्राह्मण वहीं रह, वृषल वहीं रह।"

जब ब्राह्मण को इस प्रकार बोलते सुना तो तथागत ने उसे सम्बोधित करके पूछा–"हे ब्राह्मण–क्या तू जानता है कि वृषल (अछूत) कौन होता है। क्या तू जानता है कि क्या करने से आदमी वृषल (अछूत) बनता है।

"नहीं ब्राह्मण गौतम मैं नहीं जानता हूँ कि वृषल कौन होता है अथवा क्या करके आदमी वृषल (अछूत) होता है।

भगवान बुद्ध ने कहा कि यदि तुम यह जान लोगे कि वृषल कौन होता है तो इसमें तुम्हारी कुछ हानि नहीं होगी। "अच्छा जब आप चाहते हैं कि मैं जान ही लूँ तो बतायें।"

ब्राह्मण की इच्छा प्रकट करने पर तथागत ने कहा जो आदमी क्रोधी हो, लोभी हो, अनैतिक हो, चुगुलखोर हो, मिथ्या दृष्टि हो, वंचक हो उसे वृषल समझना।

जो भी चाहे एकज हो, चाहे द्विज (पक्षी आदि) हो प्राणियों को हानि पहुँचाता है जिसके मन में प्राणियों के लिये दया नहीं है उसे वृषल करके जानना।

"जो भी कोई ग्रामों और झोपड़ियों को नष्ट करता है, जो अत्याचारी है, उसे वृषल करके जानना।"

"चाहे गाँव में चाहे गाँव के बाहर जंगल में, जो भी किसी दूसरे की वस्तु को बिना दिये लेता है अर्थात् चुराता है–उसे वृषल करके जानना।"

जो किसी का ऋण लेकर बिना लौटाये यह कहकर कि मुझे तुम्हारा कुछ नहीं देना है, भाग जाता है–उसे वृषल समझना।

"जो भी किसी वस्तु की कामना से, सड़क पर चलते हुये किसी को मार डालता है या लूट लेता है–उसे वृषल समझना।"

"जो भी कोई, अपने हित में या किसी दूसरे के हित में अथवा धन के लोभ से पूछे जाने पर झूठी गवाही देता है–उसे वृषल जानना।"

"जो अपने पास पैसा होने पर भी गत यौवन अपने बृद्ध

माता-पिता का पालन पोषण नहीं करता–उसे वृषल करके जानना।"

"जो कोई कुशल धर्म पूछे जाने पर अकुशल धर्म की शिक्षा देता है और रहस्य बनाकर शिक्षा देता है–उसे वृषल जानना।"

"जन्म से न कोई ब्राह्मण होता और न कोई शूद्र होता है।" यह सब सुना तो अग्निक ब्राह्मण ने जो कुछ बुरा-भला तथागत को कहा था, उसके लिये वह बहुत लज्जित हुआ।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह बल पूर्वक कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकीकरण हेतु सभी नागरिक समता, भ्रातृत्व, शील, न्याय और स्वतन्त्रता के आधार पर एक दूसरे के साथ आचरण करें साथ ही एक दूसरे के साथ करुणा, मैत्री, प्रज्ञा का विकास कर व्यवहार करें। तभी राष्ट्रीय एकीकरण की आधार-शिला मजबूत होगी। इन सबकी उपेक्षा करके धर्म, जाति और भाषा तथा क्षेत्र के नाम पर आंदोलन और सत्याग्रह को बल मिलेगा परिणामतः अलग राज्य की माँग होती रहेगी। जिससे देश कमजोर होगा अतएव राष्ट्रीय एकीकरण के लिये राष्ट्र को सद्धर्म अपनाना होगा। तभी राष्ट्र दुनियाँ के अन्य देशों के समक्ष राष्ट्र मौर्य बन सकता है। विश्व की अगुआई कर सकता है। राष्ट्र स्तर पर हर गाँव और मुहल्ले में लोगों में भाई चारा, करुणा, मैत्री, शील, न्याय और स्वतन्त्रता के भाव को बताना पड़ेगा। लोगों में प्रज्ञा का विकास हो, पर भी बल देना पड़ेगा। इससे सरकार की धर्म निरपेक्षता की नीति पर किसी प्रकार विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, राष्ट्रीय एकता को अत्यधिक बल मिलेगा।

एस० डी० भानू
एम०-७६ बर्रा २
सेक्टर ३, कानपुर-२७

आत्माकांक्षा

इण्टर कालेज कुड़नी की स्थापना तथा बालसंत सुशील की याद में एक किताब लिखना दो कार्यों की कामना की।

स्कूल की बुनियाद श्री ओ. पी. आर्या और उनके सहयोगियों को सौंप दी। इस विद्यालय के सम्बन्ध में निश्चित बैठक के दिन बीमार हुआ हँसली टूटी और पसलियाँ उमक आयीं चेतना हीन हो गया। श्री राधेश्याम ने अस्पताल में दाखिल करा दिया। अचेतन स्थिति में भी जब कुछ सम्हलता तो कुड़नी स्कूल ही मुँह से कह उठता। मिलने वाले जो जानकार थे आपस में कहते कि ३ दिन सेवा करलो-बस। डा. एस. पी. तिवारी की युक्ति से डाक्टरों ने अपने-अपने मर्ज लेकर ठीक कर दिए। पेशाब के लिए बलरामपुर, लखनऊ जाना पड़ा परन्तु अभी भी असमर्थ हूँ। किसी मित्र के यहाँ जाने व रुकने की हिम्मत नहीं पड़ती, घसिट रहा हूँ सामने काम न होते तो चल देता।

किताब का काम शुरू हुआ और ११ माह बीमारी के दिनों में वह बनी सँवरी। उसमें क्रमवार ढंग नहीं लाया जा सका। मैं श्री राधेश्याम पूर्व विधायक व श्री मथुरा प्रसाद त्रिपाठी एवं वेदप्रकाश सचान जी का भी मकरूज हूँ। जिन्होंने अस्पताल व गाँव जाकर लिखाई का काम किया है और पुस्तक के स्वरूप में अपना पूर्ण सहयोग दिया। पुस्तक का स्वरूप जैसा है वह न लेखक का रहा और न साहित्यिक पारखी का। भावनाओं की कतिपय कमियाँ निकलें तो साथी पाठकगण पढ़कर क्षमा करें।

—ज्वाला प्रसाद कुरील

नाम	– ज्वाला प्रसाद कुरील
पिता का नाम	– श्री राजादास
जन्म	– सन् १९१२ ई०
ग्राम	– ढुकुवापुर, कुड़नी, घाटमपुर
शिक्षा	– हिन्दी, उर्दू मिडिल, पी० टी० सी०
कार्य	– (१) अध्यापक, सन् १९३५ से १९४३ तक
	(२) समाज-सेवा, प्रारम्भ से आज तक